उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर (छ.ग.)

दृष्टि

अंक 53 वाँ

सत्र - 2018-19

संरक्षक
डॉ. श्रीमती निशी भाम्बरी
प्राचार्य

सम्पादक
श्रीमती नलिनी पाण्डेय

सह सम्पादक
डॉ. श्रीमती क्षमा त्रिपाठी
डॉ. बी. व्ही. रमणाराव
डॉ. ए. के. पोद्दार

सहयोग
सुश्री सिम्पल रजक
चंद्रकांत तिवारी
सेवकराम राठौर

अनुक्रमणिका

क्र.	पाठ्य वस्तु	लेखक का नाम	पृष्ठ क्र.
1.	शुभकामना संदेश		5–11
2.	प्राचार्य की कलम से	डॉ. (श्रीमती) निशि भाम्बरी	रंगीन पृष्ठ
3.	सम्पादकीय	श्रीमती नलिनी पाण्डेय	रंगीन पृष्ठ
4.	सर्टिफिकेट	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद्	12
5.	प्रतिवेदन– बी. एड.	श्रीमती नलिनी पांडेय	13–14
6.	प्रतिवेदन– एम.एड.सत्र 2018–19	डॉ. क्षमा त्रिपाठी	15–16
7.	प्रतिवेदन– अधिगम शिक्षण सामग्री	एस. उषामणी	17
8.	ग्रंथालय प्रतिवेदन	प्रमोद दत्त शुक्ला, सुश्री आशा बनाफर	18
9.	बालक छात्रावास	श्री डी. के. जैन	19
10.	प्रतिवेदन (आर्ट एण्ड क्राफ्ट)	आशा बनाफर, श्री प्रमोद शुक्ला	20
11.	सामुदायिक कार्य प्रतिवेदन	डॉ. नलिनी पाण्डेय	21
12.	खेलकूद प्रतिवेदन	सैय्यद किफायत उल्लाह	21
13.	सांस्कृतिक विभाग	डॉ. ए. के. पोद्दार	22
14.	DEPARTMENT OF INFORMATION COMMUNICATION TECHOLOGY YEAR OF 1996	डी. के. जैन	22
15.	प्रतिवेदन– विज्ञान विभाग 2018–19	श्रीमती प्रीति तिवारी	23
16.	विज्ञान क्लब द्वारा आयोजित प्रतियोगिताएं	श्रीमती प्रीति तिवारी	24
17.	प्रतिवेदन– योग प्रशिक्षण	डॉ. यू. व्ही. वारे	25–26
18.	कैरियर काउंसलिंग कार्यक्रम प्रतिवेदन	डॉ. रजनी यादव	27–28
19.	छात्रवृत्ति विभाग प्रतिवेदन	डॉ. श्रीमती रजनी यादव	28
20.	केन्द्र प्रवर्तितत योजना के तहत किए गए कार्य का विवरण	श्रीमती नीला चौधरी	29–30
21.	प्रतिवेदन–स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम	कु. प्रियंका दुबे	31–32
22.	शैक्षणिक भ्रमण– 2019	दिनेश कुमार सिंह	33–35
23.	प्रतिवेदन– बी.एड.	श्रीमती लक्ष्मी साहू	36–38
24.	जिंदगी क्या है	योगेश कुमार यादव	38
25.	क्युंकि मैं वक्त हूं	श्रीमती पूर्णिमा गोस्वामी	39
26.	एक जख्मी सैनिक अपने साथी से कहता है	हर्ष पटेल	40

अनुक्रमणिका

क्र.	पाठ्य वस्तु	लेखक का नाम	पृष्ठ क्र.
27.	पुलवामा में आतंकी हमले में शहीद हुए जवानों को समर्पित	दिनेश कुमार सिंह	41
28.	सफलता की ओर पहला कदम	धर्मेंद्र कुमार सिंगरौल	42–43
29.	सिक्छित बन संगी	धर्मेंद्र कुमार सिंगरौल	43
30.	नारी तेरी नारीत्व	श्रीमती लक्ष्मी साहू	44
31.	Books are Our true Friends	Yogesh kumar yadev	45
32	Key to success	Yogesh kumar yadev	45
33.	शिक्षा का बदलता हुआ स्वरूप–एक दृष्टि	योगेश कुमारयादव	46–49
34.	रचनात्मक कार्यों के लिए संसाधनों एवं अभिप्रेरणा की आवश्यकता	श्रीमती रमाकान्ति साहू	50
35.	21वीं सदी में विद्यालयीन शिक्षा	श्रीमती रमाकान्ति साहू	50
36.	विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम	श्रीमती रमाकान्ति साहू	51
37.	इच्छा हो तो	श्रीमती खेमावती गुप्ता	52
38.	जीना सीखा था माँ	वंदना नवरंग	53
39.	भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी की मशहूर कविता (संकलन)	श्रीमती पूनम साहू	54
40.	शहर मेरा बिछौना	डॉ. अजीता मिश्रा	55
41.	अस्तित्व	डॉ. अजीता मिश्रा	56
42.	समय के सदुपयोग पर प्रेरणादायक सुविचार	श्रीमती सीमा यादव	57
43.	गुरु	श्रीमती मालती राठिया	58
44.	हमेशा याद रखें 3 बातें	श्रीमती अलमा ज्योति बेक	58
45.	जीत बनाम हार	श्रीमती विमला राठौर	59
46.	जिंदगी है अनमोल	श्रवण कुमार पाण्डेय	60
47.	मेरा ग्रंथालय	अनिता नेताम	60
48.	What is a Mother	Anita Netam	61
47.	कुछ सुनाना चाहती हूं	कु. पूनम यादव	62
48.	कविता	रेशम पटेल	63
49.	मन कचरा	भीम धुरन्धर	64
50.	छत्तीसगढ़ी कविता	भीम धुरन्धर	64
51.	चेतना के स्वर	रामप्रसाद साहू	65

अनुक्रमणिका

क्र.	पाठ्य वस्तु	लेखक का नाम	पृष्ठ क्र.
52.	धुआं–धुआं सा हो रहा है चारों ओर	रामप्रसाद साहू	66
53.	शिक्षा और कम्प्यूटर	सूर्यप्रकाश सोनी	67–68
54.	इंसान जाने कहाँ खो गये	शिरिन मलेवार	68
55.	Believe in my god	Mo. Badruddin	69
56.	आयुर्वेद	अरविन्द कुमार पाठक	70
57.	महक उठा संसार	ध्रुव देवांगन	71
58.	बी. एड. प्रशिक्षण आवश्यक क्यूं	श्रीमती सावित्री भारद्वाज	72–73
59.	मरुस्थल की व्यथा	कु. बरखा पाण्डेय	73
60.	आदिवासी संस्कृति के महान नायक (रामेश्वर गहिरा गुरुजी)	रंजन एक्का	74
61.	सोशल मीडिया की महिमा	अभिषेक कुमार पाण्डेय	75
62.	अदृश्य पिंजरा	सेवक राठौर	76
63.	वक्त का पड़ाव है, अस्तित्व	बिनीत कुमार मिश्रा	77
64.	किताबों से दूर न हों	श्रीमती अनिता वर्मा	78–79
65.	विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधियों का योगदान	लक्ष्मी कुमार निषाद	79
66.	सकारात्मक जीवन का महत्व	श्रीमती नीता वर्मा	80
67.	विज्ञान और विकास	नारायण प्रसाद पटेल	81–83
68.	भोजली गीत	श्रीमती रमाकान्ति साहू	83
69.	You and a Pencil	Amit Massey	84–85
70.	14 फरवरी, साहस	सिम्पल रजक	86
71.	शिक्षकीय भूमिका नैतिकता के लिए	चंद्रकांत तिवारी	87–88
72.	तुम कितनी प्यार लगती जिन्दगी	श्रीमती सावित्री भारद्वाज	88
73.	भाषा का महत्व	श्रीमती कल्पना यादव	89
74.	दूरद्रष्टा श्रद्धेय– शिवाजी कुशवाहा जी	डॉ. उल्लास व्ही वारे	90
75.	आज केपारिवारक माहौल में बुजुर्गों का स्थान	प्रसारण 20 अप्रैल 1999	90–92

भूपेश बघेल
मुख्यमंत्री

Bhupesh Baghel
CHIEF MINISTER

मंत्रालय, महानदी भवन
अटल नगर, रायपुर, 492002, छत्तीसगढ़
फोनः +91 (771) 2221000, 2221001
ई—मेल : cmcg@nic.in

Mantralaya, Mahanadi Bhawan,
Atal Nagar, Raipur, 492002, Chhattisgarh
Ph.: +91 (771) 2221000, 2221001
E-mail : cmcg@nic.in

Do.No. 470/H.V.P Date : 10/7/19

भूपेश बघे
मुख्यमंत्री
Bhupesh I
CHIEF MINIST

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि उच्च शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर द्वारा महाविद्यालयीन पत्रिका "दृष्टि" के 53 वें संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है।

बी. एड. तथा एम. एड. के प्रशिक्षार्थियों के लिए यह पत्रिका एक महत्वपूर्ण फोरम है जहाँ वे अपने अनुभवों तथा पाठ्यक्रम के विषयों के अलावा अपनी साहित्यिक तथा अन्य अभिरुचियों को अभिव्यक्त कर सकते हैं। आपसी समझबूझ तथा समन्वय को बढ़ा सकते हैं जो भविष्य में व्यापक समाज को लाभान्वित करने का माध्यम बनता है।

प्रकाशन अपने उद्देश्यों में सफल हो, इसके लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(भूपेश बघेल)

डॉ. प्रेमसाय सिंह
मंत्री
स्कूल शिक्षा, अनुसूचित
जाति,जनजाति अन्य पिछड़ा वर्ग एवं
अल्पसंख्यक कल्याण सहकारिता
छत्तीसगढ़ शासन

कार्यालयः एम-4/ 1,2,3,4,5 महानदी भवन,
अटल नगर, रायपुर (छ.ग.)
आवासः जी-7 एवं 8, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.)
दूरभाषः कार्यालय- 0771-2510904, 2321104
आवास- 0771-2430005, 4035778
फैक्स- 0771-4035778
मोबाइल-94252-34585

अर्ध शा. पत्र क्रमांक 499/ मंत्री/ स्कूल शि. अनु. जा. ज. जाति, अ पि व एवं अ सं क सह/20 दिनांक 07.06.19

शुभकामना संदेश

महाविद्यालयीन वार्षिक "दृष्टि" के 53वें अंक प्रकाशन की सूचना से आत्मीय प्रसन्नता हुई। दृष्टि की प्रासंगिकता न केवल पत्रिका के रूप में है वरन् जीवन दृष्टि एवं नैतिक दृष्टि के रूप में भी है। स्पष्ट दृष्टि सहज मानवीय वृत्तियों को उजागर कर हमें उस राह पर चलने की प्रेरणा देती है।

महाविद्यालय के गौरवशाली इतिहास अनुरूप शिक्षक-शिक्षा के क्षेत्र में सद्प्रयास एवं उपलब्धियां महाविद्यालय की मानकता को प्रमाणित करते हैं। विवेकजनित एवं अनुभवजनित ज्ञान का परिमार्जन महाविद्यालय के माध्यम से छात्राध्यापक में संचारित हो ऐसी अपेक्षा है। अपनी एवं विद्यार्थियों की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमताओं को जीवन पर्यंत बनाए रखने की महती आवश्यकता है।

राज्य के ग्रामीण एवं सुदूर वनाचलों के बच्चों की आवश्यकता एवं अपेक्षाओं के अनुरूप शिक्षण प्रविधियों को परिमार्जित करने में अपने प्रशिक्षण अवधि को समर्पित करें।

प्रशिक्षित छात्राध्यापक समाज में अन्यों के लिए आदर्श बनें एवं सामाजिक उत्थान के ध्वजवाहक बनें। पत्रिका "दृष्टि" के सफल प्रकाशन हेतु महाविद्यालय के समस्त आचार्यगण, छात्राध्यापकगण को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम)

शैलेष पाण्डेय
विधायक– बिलासपुर

कार्यालयः–
H.N.-E 2/4,विधायक कार्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
दूरभाष क्र.:– 07752–250001
मोः 07898184986
ई–मेलः bilaspurmla@gmail.com

क्रमांक 372 दिनांक 07.06.19

:: शुभकामना संदेश ::

अत्यंत हर्ष का विषय है कि महाविद्यालयीन पत्रिका दृष्टि के 53 वें संस्करण के लिए उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर, छत्तीसगढ़ को हार्दिक शुभकामनाएं। यहां के बी. एड. एवं एम. एड. के प्रशिक्षार्थियों ने शिक्षा के क्षेत्र एवं लेखन क्षमता के साथ–साथ अपने साहित्यिक प्रतिभा से प्रदेश सहित पूरे देश में भी अपनी सफलता का परचम लहरा रहे हैं। महाविद्यालयीन परिवार को उनके अमूल्य प्रयास की सराहना करते हुए छात्रों को उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

धन्यवाद !
शुभकामनाएं सहित

(शैलेष पाण्डेय)

किशोर राय
महापौर
नगर पालिक निगम
बिलासपुर

अ. शा. पत्र क्रमांक/ निगम सचिव 515
बिलासपुर, दिनांक 04-06-2019
कार्यालय नगर पालिक निगम, बिलासपुर
फोनः 07752-224214 (कार्या.)
07752-224414 (निवास)
मोबा.: 9300671718
: 7049571718

:: संदेश ::

प्रसन्नता का विषय है कि शासकीय शिक्षा महाविद्यालय (आई.ए.एस.ई.) बिलासपुर द्वारा अपने महाविद्यालयीन पत्रिका दृष्टि के 53वें संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है। बी.एड. व एम. एड. के प्रशिक्षार्थियों के अंदर छुपी हुई बहुमुखी प्रतिभा को निखारने भाव, विचार, अध्ययन अध्यापन लेखन एवं अन्य क्रियाकलापों को दृष्टि पत्रिका के माध्यम से आलोकित करने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। पत्रिका अपने उद्देश्यों में सफल हो तथा सभी के स्मृति पटल पर अक्षुण्ण चिरस्थायी बने रहे।

पत्रिका के लिए मेरी शुभकामनाएं।

Kishor Rai

महापौर
नगर पालिक निगम,
बिलासपुर (छ.ग.)

State Council of Educational
Research & Training, Chhattisgarh
Shankar Nagar, Raipur

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़,
शंकर नगर, रायपुर

Telephone-0771-2443596 Fax-0771-2443496 Website: www.scert.cg.gov.in Email: scertcg@gmail.com

पत्र क्र./परिषद/पत्रिका /2019/2098 रायपुर, दिनांक 02.07.2019

:: शुभकामना संदेश ::

शिक्षा व्यवस्था में अपेक्षित बदलाव लाने और सुधार की दृष्टि से प्रशिक्षार्थियों में व्यावसायिक दक्षता तथा कार्यक्षमता में संवर्धन का दायित्व प्रशिक्षण संस्थाओं का होता है। अतः शिक्षा का उद्देश्य समग्र लक्ष्य सामाजिक समरसता और सौहार्द्रपूर्ण, सामंजस्य के साथ जीवन जीने के लिए उपयुक्त जीवनशैली विकसित करना है– इसमें शैक्षिक पत्रिकाएं हमेशा मददगार होती हैं।

शिक्षक उत्साही और ऊर्जावान होते हैं। ऐसी पत्रिकाओं के प्रकाशन से प्रशिक्षणार्थियों में नयी ऊर्जा का संचार होता है, और उन्हें साहित्यिक अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त होता है साथ ही सुसंस्कृत समाज की संरचना में भी वे अपनी सकारात्मक भूमिका का निर्वहण कर सकते हैं।

प्रसन्नता का विषय है कि आपकी संस्था ने पत्रिका 'दृष्टि' के 53वें अंक के प्रकाशन का निर्णय लिया है। इस महती कार्य के लिए आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ.....।

(पी. दयानंद)
संचालक
एस.सी.ई.आर.टी., छ. ग. रायपुर

डॉ. संजय अलंग
(आई.ए.एस.)
कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी
बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

दूरभाषः कार्यालय- 07752-223344 (कार्या.)
223222 (निवास)
फैक्स- (07752)227060, 223532 (कार्या.)
वेब साईट : **www.bilaspur.gov.in**
ई-मेल : **bilaspur.cg@nic.in**
कार्यालय कलेक्टर, बिलासपुर (छ.ग.)
अर्द्धशासकीय पत्र क्रमांक .....

दिनांक 04.06.2019

:: संदेश ::

यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर द्वारा अपने महाविद्यालयीन पत्रिका " दृष्टि " के 53वें संस्करण का प्रकाशन बी. एड व एम. एड. के प्रशिक्षार्थियों के लेखन क्षमता को संवारने के उद्देश्य से करने जा रहा है। मैं छात्र-छात्राओं तथा अध्यापकों द्वारा किये जा रहे इस प्रयास की सराहना करता हूं तथा आशा करता हूं कि पत्रिका में चारित्रिक एवं नैतिक विकास के लिए उच्च स्तर के उत्साह वर्धक मौलिक रचनायें प्रकाशित होंगी और छात्र-छात्राओं की प्रतिभा उभर कर सामने आयेगी।

पत्रिका के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डॉ. संजय अलंग)

प्रभाकर पाण्डेय
(रा.प्र.से.)
आयुक्त

अ.शा. पत्र क्रमांक/सा.प्र./ 629
बिलासपुर, दिनांक 04.06.2019
कार्यालय, नगर पालिक निगम, बिलासपुर
नेहरू चौक, विकास भवन, बिलासपुर (छ.ग.)
दूरभाष क्र.- 07752-222642 (कार्या.)
फैक्स- (07752)-413888
E-mail- Commissionerbmcbilaspur.cg@nic.in

:: संदेश ::

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर (छ.ग.) द्वारा महाविद्यालयीन पत्रिका दृष्टि का 53वॉ अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस पत्रिका के प्रकाशन से महाविद्यालय में अध्ययनरत बी. एड. एवं एम. एड. के प्रशिक्षार्थियों को आवश्यक जानकारी एवं मार्गदर्शन प्राप्त होगी। महाविद्यालय परिवार को इस अभिनव प्रयास के लिए मैं बधाई देता हूं तथा छात्र-छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।

शुभकामनाओं सहित।

(प्रभाकर पाण्डेय)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का स्वायत्त संस्थान

NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

An Autonomous Institution of the University Grants Commission

Certificate of Accreditation

The Executive Committee of the
National Assessment and Accreditation Council
on the recommendation of the duly appointed
Peer Team is pleased to declare the
Institute of Advanced Studies in Education (IASE)
Bilaspur, affiliated to Bilaspur Vishwavidyalaya, Chhattisgarh as
Accredited
with CGPA of 3.04 on seven point scale
at A grade
valid up to December 15, 2021

Date: December 16, 2016

Director

EC(SC)/20/A&A/17.1

बी. एड

* प्रतिवेदन *

बी. एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के माध्यम से महाविद्यालय प्रशिक्षित शिक्षक तैयार करता है। प्रशिक्षण का कार्यक्रम दो वर्षों में निर्धारित गतिविधियों के माध्यम से पूरा किया जाता है। जो गतिविधियाँ करवाई जाती हैं। वे सब प्रशिक्षार्थियों को एक अच्छे शिक्षक बनाने के लिए आवश्यक होती हैं। सत्र 18–19 में बी. एड. के प्रशिक्षार्थियों के प्रशिक्षण का प्रतिवेदन प्रस्तुत है। प्रतिवेदन के माध्यम से बी. एड. के समस्त गतिविधियों या कहें द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन की झलकियां प्रस्तुत हैं। कार्यक्रमों का क्रियान्वयन कुछ इस प्रकार किया जाता है। कि प्रत्येक प्रशिक्षार्थी के व्यक्तित्व में एक सकारात्मक परिवर्तन आए।

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान में बी. एड. प्रथम वर्ष के 150 एवं द्वितीय वर्ष के 150 प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। कुल 300 प्रशिक्षार्थियों में 50% प्रशिक्षार्थी विभागीय एवं शेष 50% सीधी भर्ती के प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।

द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षार्थियों की कक्षाएं 8 जून से प्रारम्भ हो गई थीं। सैद्धान्तिक कक्षाओं के साथ–साथ उनका महीने के इंटर्नशिप कार्यक्रम के लिए उन्मुखीकरण भी किया जा रहा था। प्रथम वर्ष में सीखे गए इकाई योजना दैनिक शिक्षण योजना एवं शिक्षण विधियों के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त किए एवं परावर्ती लेखन की व्यापक समझ बना पाने के लिए आचार्यों ने मार्गदर्शन दिया। इसके साथ ही प्रशिक्षार्थियों के लिए स्वयं का डर, कक्षा कक्ष का सामंजस्यपूर्ण वातावरण, फिल्म की समीक्षा, एक शिक्षक के रूप में सफलता आदि विषय पर छोटे–छोटे समूहों में बांटकर कार्यशाला आचार्यों के दिशा–निर्देश में माह जुलाई में आयोजित किया गया। कार्यशाला से प्रशिक्षार्थियों को स्वयं को शिक्षक के रूप में समझने में, शिक्षक के रूप में कमजोरी एवं अपनी विशेषताओं को जानने–समझने का अवसर मिला। इस तरह से बी. एड. द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षार्थी एक शिक्षक के रूप में पूर्व में जो तैयारी और कौशल की आवश्यकता होती है उससे लैस होकर सोलह सप्ताह के लिए निर्धारित विद्यालयों में चले गए। प्रति सप्ताह में दो दिन के लिए प्रशिक्षार्थी महाविद्यालय में अपनी उपस्थिति देते थे एवं सैद्धांतिक विषयों के अध्ययन के अतिरिक्त इंटर्नशिप में होने वाली कठिनाइयों के संबंध में अपने मेंटर से मार्गदर्शन प्राप्त करते। द्वितीय सप्ताह में एक दिन मेंटर विद्यालयों में जाया करते हैं। वर्ष के प्रशिक्षार्थी विद्यालयों में अध्ययन–अध्यापन के अतिरिक्त विद्यालय की समस्त गतिविधियों में एक शिक्षक की ही तरह हिस्सा लेते हैं एवं अपने सैद्धांतिक प्रश्नपत्रों के प्रेक्टिकल को भी पूर्ण करने का कार्य करते थे। जुलाई में 23 ता. को दो दिन के लिए द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षार्थियों के लिए समूहवार लायब्रेरी एवं आइ. सी. टी. की कार्यशाला आयोजित की गई। यह कार्य " शिक्षक सशक्तीकरण " के तहत किया गया।

बी. एड. प्रथम वर्ष की कक्षाएं जुलाई की नौ तारीख से प्रारम्भ की गई। प्रारम्भ प्रशिक्षार्थियों को बी. एड. के पाठ्यक्रम से परिचित कराकर उनका उन्मुखीकरण प्रारम्भ किया गया, तत्पश्चात्

अध्यापन परावर्ती लेखन तथा समाज एवं विद्यालय का सम्बन्ध विषय पर विचार–विमर्श किया गया,साथ ही सैद्धांतिक विषयों का अध्यापन किया गयाएवं पुनःमहाविद्यालय में अवलोकन के संबंधमें प्रतिपुष्टि प्राप्तकर पुनः अध्यापन को और अधिक रुचिकर बनाने के लिए लर्निंग रिसोर्सेस की चार दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, 20 सितम्बर से वे पुनः इंटर्नशिप के द्वितीय चरण में अध्यापन हेतु गए। दो सप्ताह के अध्यापन के बाद प्रथम वर्ष के प्रशिक्षार्थियों ने एक सप्ताह का सामुदायिक कार्य इंटर्नशिप के अंतिम चरणमें किया। सामुदायिक कार्य प्रशिक्षार्थियों ने द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षार्थियों के मार्गदर्शन एवं विद्यालय प्रशासन के निर्देशन में पूर्ण किया।

* अगस्त में 13 ता. से 17 ता. तक बी. एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षार्थियों के लिए भाषा प्रवीणता विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला से प्रशिक्षार्थी भाषा के प्रयोग के कौशल की जानकारी प्राप्त किए। कार्यशाला का आयोजन डॉ. क्षमा त्रिपाठी, श्रीमती रीमा शर्मा, श्री राजेश गौरहा ने किया।

15 अक्टूबर को बी. एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षार्थी पुनः महाविद्यालय वापस आ गए एवं उनसे इंटर्नशिप के संबंध में प्रतिपुष्टि प्राप्त कर उनका भ्रांतियों को दूर करने का प्रयास किया गया। अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में बी. एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षार्थियों के लिए समूहवार कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला से प्रशिक्षार्थी स्वयं के बचपन को याद कर बचपन की किसी महत्वपूर्ण घटना का विश्लेषण कर सामूहिक कार्य के बारे में जानकर फिल्म की समीक्षा कर अपने व्यक्तित्व में एक नए पहलू को जोड़ने में सक्षम हुए। इसी क्रम में प्रशिक्षार्थियों के लिए प्रशिक्षार्थियों के ही नेतृत्व में 4 दिवसीय आर्ट एण्ड क्रॉफ्ट की कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला से प्रशिक्षार्थियों ने अवकाश के क्षणों में उपयोग को सीखा। कार्यशाला में सुश्री आशा बनाफर एवं श्री प्रमोद दत्त शुक्ल की भूमिका प्रमुख रही। आर्ट एण्ड क्रॉफ्ट से बनाए गए कलाकृतियों से महाविद्यालय के सौंदर्यीकरण में वृद्धि की गई।

बी. एड. प्रथम वर्ष के लिए 26 एवं 27 नवम्बर को सेमिनार का आयोजन किया गया। विषय था– भारत के " विभिन्न बचपनों की झलक। " इस मुख्य विषय के 10 उपविषय थे। एम. एड. प्रथम सेमेस्टर के प्रशिक्षार्थियों के मार्गदर्शन में दस समूहों में बी. एड. प्रशिक्षार्थियों ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए। समूहवार रिपोर्ट एम. एड. प्रशिक्षार्थियों ने प्रस्तुत किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम संस्था के डॉ. राव ने आचार्यों के सहयोग से आयोजित किया।

जनवरी के अंतिम सप्ताह में अग्रज नाट्य दल के सहयोग से बी. एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षार्थियों के लिए " पाठ्य वस्तु के नाट्य रूपान्तरण " की तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

बी. एड. द्वितीय वर्ष के लिए 22 एवं 23 जनवरी को समाज में " विज्ञान एवं धर्म की भूमिका" विषय पर एवं पर्यावरण संकट विषय पर एक विमर्श का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम को एम. एड. तृतीय सेमेस्टर के प्रशिक्षार्थियों के मार्गदर्शन में दिया। डॉ. राव ने संस्था के आचार्यों के सहयोग से कार्यक्रम का आयोजन किया।

श्रीमती नलिनी पांडेय
बी. एड. प्रभारी

प्रतिवेदन
* एम एड वर्ष 2018-19 *

गुणवत्ता मूलक शिक्षण एवं प्रशिक्षण एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इन चुनौतियों को स्वीकार करते हुए महाविद्यालय एम एड सेवाकालीन एवं सेवा पूर्व शिक्षण-प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संचालित कर रहा है। वर्तमान में महाविद्यालय में एम एड चतुर्थ सेमेस्टर एवं द्वितीय सेमेस्टर के प्रशिक्षार्थी तृतीय सेमेस्टर एवं प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा सम्पन्न कर माह जनवरी से नियमित कक्षाओं में अध्यापन कर रहे हैं वहीं सत्र 2016-18 के प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण पूर्ण कर अपने पदस्थ विद्यालयों को सेवा दे रहे हैं। यदा-कदा इन शिक्षार्थियों से प्रत्यक्ष एवं सोशल मीडिया के माध्यम से संवाद होने पर स्पष्ट होता है। इन दो वर्षों में विद्यालय स्तर के पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन प्रक्रिया में परिवर्तन हुआ है, इस परिवर्तन के अनुसार अपने आप को पुनः कक्षाध्यापन एवं अन्य विद्यालयीन कार्य को संचालन करने में द्विवर्षीय प्रशिक्षण में सीखा गया ज्ञान एक अस्त्र के रूप में काम कर रहा है। प्रशिक्षार्थियों द्वारा जहां सैद्धान्तिक विषयों का गहन अध्ययन में सहभागिता है वहीं महाविद्यालय की पाठ्येत्तर गतिविधियों में, विभिन्न विश्वविद्यालयों में आयोजित वर्कशाप, सेमीनार में सहभागिता होती है। अकादमिक उपलब्धि के अन्तर्गत प्रथम एवं वर्तमान में चतुर्थ सेमेस्टर के अध्ययनरत प्रशिक्षार्थियों में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने के साथ-साथ यह ऐसा पहली बार हुआ जब मेरिट क्रमांक 1 से 10 में अपना स्थान सुनिश्चित किया है। प्रावीण्य सूची में प्रथम विद्याभूषण रहे।

चतुर्थ सेमेस्टर के प्रशिक्षार्थी शोध कार्य को गुणवत्तामूलक बनाने का प्रयास कर रहे हैं वहीं द्वितीय सेमेस्टर के प्रशिक्षार्थी शोध समस्या के चयन हेतु प्रयासरत हैं।

	कुल सीट	नामांकित
एमएड चतुर्थ सेमेस्टर 2017-19-	50	48
एमएड द्वितीयसेमेस्टर 2018-2020	50	49

प्रशिक्षार्थियों द्वारा निम्नांकित कार्यक्रमों में सहभागिता वर्ष पर्यन्त रहा-

व्यवसायिक विकास शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में अनिवार्य है। भारत में शिक्षक का व्यवसायिक विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों से किया जाता है। महाविद्यालय में अध्ययनरत एम एड प्रशिक्षार्थियों द्वारा सैद्धांतिक ज्ञान के साथ वृत्तिक विकास हेतु महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित सेमीनार में सहभागिता दी गई। कथानक एवं उप कथानक के आधार पर किए गए पत्रक वाचन को सराहा भी गया, यह उपलब्धि भी प्रसन्नता का विषय है।

सहभागिता- एम. एड. प्रशिक्षार्थियों द्वारा सत्र 2018-19 में राष्ट्रीय/ अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार

1.	10-9-2018 हिमालय क्षेत्र-भू राजनैतिक स्थिति एवं महत्व	पंडित सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय छ.ग. छ. ग. बिलासपुर राष्ट्रीय सेमीनार	प्रतिभागी-आचार्य श्री डी.के. जैन प्रतिभागी-प्रशिक्षार्थी-एम एड 1 सेमेस्टर सीमा त्रिवेदी, प्रियंका शर्मा, मधुकर सिंग, मधुकर सिंग, प्रमोद श्रीवास्तव, प्रणव तिवारी मुकेश पटेल, चंद्रकांत राठिया, प्रशांत कुमार कुलदीप, टीकम पटेल, नयन केसर, एम एड सेमे.- नागेन्द्र कुमार पाटनवार, रश्मि पांडेय

		अभिषेक पाण्डेय, सौरभ कुमार जांगड़े, रूही एस्टर गाटलिब, राकेश त्रिपाठी, लक्ष्मी निषाद	
2. 6.10.2018 7.10.2018 भारत में सामाजिक भेदभावस्वरूप कारण एवं निवारण	पंडित सुंदरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय छ.ग. छ. ग. बिलासपुर	प्रतिभागी आचार्य– श्री डी.के जैन प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी–गणेश शुक्ला, सूर्यप्रकाश सोनी, अंबिका साहू, निधि भोंसले, शारदा रानी शुक्ला, शुम्मी पांडेय, योगेश धीवर, मोहिन्दर सिंह वर्मा, नारायण पटेल	पत्रक वाचन मुख्य कथानक पर सूर्यप्रकाश सोनी,
3. 12.1.2019 13.1.2019 **Swami Vivekanand's on New Educational Perspecives**	राष्ट्रीय सेमीनार इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय अमरकंटक म. प्र. राष्ट्रीय सेमीनार	प्रतिभागी आचार्य– डॉ. यू. व्ही वारे प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी एम एड III एवं II सेमे. ....अमित मैसी, छबिलाल राठौर, सौरभ जांगड़े, पवन साहू, जसप्रीत कौर फ्लोरा, अनीता वर्मा, सिम्पल रजक, बरखा, छबिलाल राठौर, सूर्यप्रकाशसोनी, नंदलाल चौहान, नारायण पटेल, सुशील कुमार, संतोष यादव चन्द्रकांत राठिया, टीकमचंद पटेल	डॉ. यू. व्ही. वारे छबिलाल राठौर अनिता वर्मा सूर्यप्रकाश सोनी
4. 19–1–2018 दिव्यांगताः चुनौती दिव्यांगताः चुनौती एवं सामाजिक स्वीकार्यता	पंडित सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय बिलासपुर राष्ट्रीय सेमीनार	प्रतिभागी आचार्य श्री डी. के. जैन श्री डी. के. जैन प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी छबिलाल राठौर, सूर्यप्रकाश सोनी आशा राठौर, रितु श्रीवास, प्रशांत कुलदीप, चंद्रकांत राठिया, राजेश नाथ योगी	पत्रक वाचन– श्री डी. के. जैन सूर्यप्रकाश सोनी, छबिलाल राठौर विषय– नेत्रदान महादान, दिव्यांगता एवं उनके प्रकार
5. 16.2.19 17.2.19 वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं सृजनात्मकता	पंडित सुन्दरलाल शर्मा शर्मा विश्वविद्यालय बिलासपुर राष्ट्रीय सेमीनार	प्रतिभागी आचार्य श्री डी. के. जैन प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– संतोष तिवारी, संतोष तिवारी, छबिलाल राठौर सूर्यप्रकाश सेनी, कलेक्टर रात्रे सुशील कुमार, राजेश नाथ अर्चना जाधव	पत्रक वाचन, श्री डी. के. जैन छबिलाल राठौर– सृजनात्मकता एवं विद्यालय का वातावरण सूर्यप्रकाश सोनी– सृजनात्मकता बनाम व्यावहारिकता
6. 4.1.2018	बिलासपुर विश्वविद्यालय बिलासपुर	एम. एड. II सेमेस्टर– 2017–19 अमित मैसी, सेवक राठौर, सौरभ जांगड़े, जसप्रीत कौर फ्लोरा, सिम्पल रजक, पालेश सिंह ठाकुर, पावन थवाईत, मंजु चतुर्वेदी, कनिका अवस्थी, प्रमिला झलरिया, अभिषेक पांडे, राकेश त्रिपाठी, लक्ष्मी निषाद	

डॉ. क्षमा त्रिपाठी
एम. एड. प्रभारी

प्रतिवेदन

* शिक्षण अधिगम सामग्री *

शिक्षा में विभिन्न विषयों के अध्यापन कार्य में विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है। विषयवस्तु का प्रस्तुतिकरण रोचक होने से विद्यार्थियों की सहभागिता में वृद्धि होती है। विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता ही शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। विषयवस्तु को रोचक बनाने के लिये एवं अध्यापन कार्य की गुणवत्ता के सुधार हेतु शिक्षण अधिगम सामग्री के प्रयोग की आवश्यकता है। व्याख्यान विधि से अध्यापन कार्य विषय वस्तु को नीरस एवं बोझिल बना देता है। विषय वस्तु को सरल, सुबोध एवं रोचक बनाने के लिये आवश्यक है कि शिक्षक स्वनिर्मित शिक्षण अधिगम सामग्रियों का प्रयोग यथासंभव करें।

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर में प्रतिवर्ष बी. एड. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिये स्वनिर्मित शिक्षण अधिगम सामग्री निर्माण कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इस सत्र 2018–19 में बी. एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षार्थियों के लिये शिक्षण अधिगम सामग्री निर्माण हेतु कार्यशाला का आयोजन दिनांक 17.9.18 से 19.9.18 तक किया गया। जिसके अन्तर्गत बी. एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षार्थियों को विषयवार (विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेजी) 5 समूहों में विभाजित किया। प्रत्येक समूह में विषयवार शिक्षक प्रशिक्षक द्वारा दिशा–निर्देश दिया गया।

बी. एड. प्रशिक्षार्थी अपने विषय के स्थैतिक व गतिशील कुल 20 प्रादर्शों का निर्माण किया।

भौतिक शास्त्र–	4
रसायन शास्त्र–	1
जीव विज्ञान–	3
गणित–	3
अंग्रेजी–	4
हिन्दी–	2
सामाजिक विज्ञान–	3

सत्र 2018–19 के राज्य स्तरीय विज्ञान मेले में शिक्षण अधिगम सामग्री कार्यशाला में निर्मित दो प्रादर्श वृक्क की कार्यप्रणाली एवं ऑप्टिकल नर्व क्रमशः II एवं III स्थान प्राप्त किया।

सहायक शिक्षण सामग्री– प्रशिक्षार्थी का नाम	स्थान
(1) वृक्क की कार्यप्रणाली	I
(2) आप्टिकल नर्व	III

प्रभारी
एस. उषामणी
शिक्षण अधिगम सामग्री प्रभारी
IASE बिलासपुर

प्रतिवेदन

* ग्रंथालय *

आई ए एस ई बिलासपुर बी. एड. प्रथम वर्ष में 148 प्रशिक्षार्थी एवं बी. एड. द्वितीय वर्ष में 142 प्रशिक्षार्थी इसी प्रकार एम. एड. प्रथम वर्ष में 49 एवं द्वितीय वर्ष में 46 प्रशिक्षार्थी कुल 381 प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण रत है इनके साथ–साथ महाविद्यालयीन आचार्यगण ग्रंथालय का उपयोग करते हैं।

बी. एड. एवं एम. एड. प्रशिक्षार्थियों के लिए प्रतिदिन कालखण्ड का निर्धारण किया गया है। बी. एड. प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षार्थियों को 30–30 प्रशिक्षार्थियों के ग्रुप में विभक्त कर सोमवार से शुक्रवार तक एक घंटे का कालखण्ड दिया जाता है जिसमें प्रशिक्षार्थी अपने ग्रुप के साथ ग्रंथालय में बैठकर अध्ययन एवं अपने विषयानुसार पुस्तकें प्राप्त करते हैं।

पुस्तक प्राप्त करने के लिए इनके ग्रंथालय क्रमांक दिया जाता है जिसे पुस्तक मांग पंजी पर पुस्तक का नाम एवं अपना ग्रंथालय क्रमांक दर्ज करना होता है। एक प्रशिक्षार्थी को एक बार में दो पुस्तकें 10 दिवस के लिये दिया जाता है। पुस्तक जमा करने के बाद दूसरी पुस्तक प्रदाय की जाती है।

प्रशिक्षार्थियों का कालखण्ड का समय अलग–अलग रहता है। एम. एड. प्रशिक्षार्थी भी अपने–अपने कालखण्ड में आकर जर्नल एवं लघुशोध का अध्ययन करते हैं तथा अपने विषयानुसार पुस्तकें इशु कराते हैं।

प्रशिक्षार्थियों के अध्ययनार्थ समाचार स्टैण्ड पर समाचार पत्र एवं रोजगार नियोज रहता है जर्नल बाक्स में एम. एड. प्रशिक्षार्थियों एवं शोधार्थी हेतु जर्नल व्यवस्थित रहता है। साहित्यिक पुस्तकों को रेक पर रखा गया है। प्रशिक्षार्थी इन्हें स्वयं प्राप्त करते हैं और लाभान्वित होते हैं तत्पश्चात् पूर्ववत व्यवस्थित कर देते हैं। अतः इस तरह हमारा ग्रंथालय दोनों प्रकार से संचालित होता है।

बी. एड. द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षार्थियों के लिए "ग्रंथालय विज्ञान" विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें संस्था के आचार्य डॉ. ए. के. पोद्दार सहायक प्राध्यापक के द्वारा ग्रंथालय से संबंधित विभिन्न बिन्दुओं पर व्याख्यान दिया गया। इस कार्यशाला से प्रशिक्षार्थी ग्रंथालय के संचालन के तरीके से परिचित हुये। यह कार्यक्रम प्रशिक्षार्थियों में क्षमता विकास हेतु आयोजित था।

संस्था के आचार्यगण एवं समय–समय पर होने वाले कार्यशाला में विभिन्न संस्था से आये हुये आचार्य भी अपने–अपने विषयानुसार ग्रंथालय से लाभान्वित होते हैं।

ग्रंथालय के साफ–सफाई का विशेष ध्यान दिया जाता है। इस प्रकार से हमारा ग्रंथालय सुव्यवस्थित है।

ग्रंथालय प्रभारी– **प्रमोद दत्त शुक्ला**
ग्रंथालय सहायक– **सुश्री आशा बनाफर**

* बालक छात्रावास (Boy's Hostal) *

स्थापना– 1955, क्षमता– 100, वर्तमान में– 36 छात्र
कुल कमरे– 12 निर्माण सन् 1972

प्रमुख विशेषतायें:– छात्रावास में दी जाने वाली व्यवस्था–

1. पूर्णतः स्ववित्तीय व्यवस्था
2. प्रतिदिन प्रार्थना व योग/ व्यायाम
3. सहकारिता आधारित मेस व्यवस्था
4. 24 घंटे पानी, बिजली, नेट, वाईफाई की व्यवस्था
5. सर्वश्रेष्ठ अध्ययनकर्ता छात्रावासी को प्रोत्साहन
6. सर्वश्रेष्ठ कार्यकर्ता छात्रावासी को प्रोत्साहन
7. स्व प्रबंधन व संचालन का प्रशिक्षण
8. पूर्ण पारदर्शी छात्र वित्तीय व्यवस्था
9. सेवानिवृत्त कर्मचारियों का सम्मान समारोह का आयोजन करना
10. श्रमदान, वृक्षारोपण व सामाजिक सेवा कार्यक्रम।

सत्र	छात्र संख्या	आय	व्यय	विशेष
2014–15	37	92500	92000	कोई अतिरिक्त भार नहीं
2015–16	28	70000	76000	प्रत्येक छात्र से 197 और लिया गया
2016–17	58	203000		इस सत्र शुल्क में 1000 रू. बढ़ाया गया
2017–18	52	182000	156000	28000 खाते में
2018–19	36	116000	812000	960 रू. प्रत्येक को वापस

नोटः– 1. 25 प्रतिशत स्थान सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिये सुरक्षित रखे जाते हैं।

2. इस सत्र में दिव्यांग निर्धन छात्र श्री राजेश यदु को स्टाफ की ओर से सहायता के रूप में डॉ. एन. भाम्बरी, प्रो. रमाकान्ति साहू, श्रीमती उषामणि, श्रीमती दीपाली राय, श्रीमती प्रीती तिवारी, डॉ. अजिता मिश्रा, श्री राजेश गौरहा, श्रीमती रजनी यादव, श्रीमती नीला चौधरी, श्रीमती रीमा शर्मा, श्रीमती मनीषा वर्मा, श्री असीम घटक ने पूरे सत्र कम से कम 100 रूपये की आर्थिक सहायता प्रदान कर ऐसे छात्र को प्रोत्साहित किया जो पढ़ाई छोड़कर जा रहा था, इसमें प्रो. रमाकान्ति साहू मैडम ने अपना विशेष योगदान दिया।

3. इस सत्र में छात्रावास में 4 स्टाफ सदस्यों के लिये सेवानिवृत्ति पश्चात सम्मान का आयोजन हुआ उसमें से श्रीमती रीता चौकसे मैडम ने छात्रावास में प्रकाश व्यवस्था के लिये 11000 रूपये की सहायता राशि उपलब्ध कराई।

4. छात्रावास से सर्वश्रेष्ठ छात्रावासी का सम्मान श्री अमर देव प्रधान को जबकि सर्वाधिक अंक पानेकेलिये श्री सुनील कुर्रे को सम्मानित किया गया।

5. विधायक निधि से बालक छात्रावास तक सड़क व बाउंड्रीवाल का निर्माण एक नई उपलब्धि के रूप में महापौर के द्वारा भूमिपूजन कर प्रारम्भ किया जा चुका है 90 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है।

श्री डी. के. जैन
छात्रावास अधीक्षक

प्रतिवेदन

* आर्ट एण्ड क्राफ्ट *

ऐसे कलात्मक कार्य जो हाथ अथवा सरल औजारों से बनाये जायें उपयोगी होने के साथ–साथ सजाने के काम आयें, जिनका धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व निर्धारित हो। आर्ट एण्ड क्राफ्ट के अन्तर्गत सम्मिलित किये जाते हैं।

भारत का प्रत्येक वर्ग क्षेत्र अपने विशिष्ट हस्तशिल्प पर गर्व करता है। यह हजारों हस्तशिल्पकारों को रोजगार प्रदान करती है। शिक्षक सीखने की प्रक्रिया में सहजता, सजगता और विशेषज्ञता के साथ कार्य करता है। समाज में नित नये परिवर्तन का दायित्व, ज्ञान को हस्तांतरित करने नये ज्ञान का सृजन और बालक की आंतरिक विशिष्टताओं को उचित अवसर उपलब्ध कराकर सामने लाने का दायित्व शिक्षक का ही होता है।

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान (IASE) बिलासपुर, समाज के इन्हीं कर्णधार शिक्षकों को गढ़ने और परिमार्जित करने का कार्य करता है। बी. एड. पाठ्यक्रम में सम्मिलित अन्य विषयों के साथ सम्मिलित आर्ट एण्ड क्राफ्ट इसी उद्देश्य की पूर्ति में एक कड़ी है। शैक्षिक गतिविधियों के साथ–साथ इस प्रकार की अन्य गतिविधियाँ वर्ष पर्यन्त इन्हीं सोद्देश्य कारणों से संचालित होती हैं।

इसी क्रम में बी. एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षार्थियों के लिये 29.11.18 से 01.12.18 तक आर्ट एण्ड क्राफ्ट की कार्यशाला सह प्रदर्शनी का आयोजन संस्था की प्राचार्य एवम् बी. एड. प्रभारी के कुशल मार्गदर्शन में प्रभारी आचार्यों द्वारा किया गया।

निर्धारित दिवस के पूर्व विद्यार्थियों की रुचि जानने हेतु ध्यान में रखकर कक्षाएं संचालित की गईं जिसमें समस्त 150 प्रशिक्षार्थियों को 10 समूहों में विभक्त किया गया। उनके द्वारा बनाई जाने वाली वस्तु और अनुमानित व्यय राशि की जानकारी ली गई। तत्पश्चात् महाविद्यालय से उक्त राशि आहरित कर उक्त समूहों में वितरित की गई।

आवश्यक सामग्री क्रय करने के साथ ही मूल सामग्री निर्माण की समस्त जिम्मेदारी प्रशिक्षार्थियों पर ही थी।

दिनांक 29.11.18 से 01.12.18 तक आयोजित इस कार्यशाला में समूह के प्रत्येक सदस्य ने अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए कलात्मक वस्तु निर्माण में अपनी भूमिका का निर्वहन किया।

अंतिम दिवस निर्मित वस्तुओं की प्रार्थना सभा कक्ष में प्रदर्शनी लगायी गई। विद्वान आचार्यगणों ने देखा, सराहा और आवश्यक सुधार हेतु अपने अमूल्य सुझाव भी दिये।

उक्त कार्यशाला प्रशिक्षार्थियों के मध्य यह संदेश दे पाने में सफल रही कि शालाओं में जाकर विद्यार्थियों के लिये किस प्रकार अवसर उपलब्ध कराना है, समूह में किस प्रकार कार्य करना है और भारतीय सांस्कृतिक विरासत में किस प्रकार वृद्धि करना है।

प्रभारी

आशा बनाफर

श्री प्रमोद शुक्ला, शिक्षक

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर

* सामुदायिक कार्य प्रतिवेदन *

बी. एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में प्रशिक्षार्थियों को समुदाय से जुड़ने का अवसर दिया जाता है। यह कार्यक्रम इंटर्नशिप के चार सप्ताह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जाता है। इंटर्नशिप में जिन विद्यालयों में प्रशिक्षार्थी जाते हैं उस संस्था के प्राचार्य के निर्देश एवं जन भागीदारी के सहयोग से समुदाय में जाकर समुदाय के हित के लिए कार्य करते हैं। यह कार्य जागरूकता के लिए होता है।

1. स्वच्छता जागरुकता, कचरा प्रबंधन, 2. मतदाता जागरूकता, 3. शैक्षिक स्वास्थ्य सर्वे, 4. लम्बे समय से अनुपस्थित बच्चों की उपस्थिति को नियमित करने हेतु प्रयास, 5. वृद्धाश्रम–वृद्ध जनों की सेवा एवं स्थल सफाई, 6. मातृछाया–शिशुओं की परिचर्चा एवं स्थल सफाई, 7. तेजस्विनी छात्रावास–छात्रावासी बच्चियों के अध्ययन में सहयोग एवं स्थल स्वच्छता।

उपरोक्त सभी कार्य 13 से 18 नवम्बर तक किये गए।

प्रभारी

डॉ. नलिनी पाण्डेय

* खेलकूद प्रतिवेदन *

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर में प्रशिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु अनेक गतिविधियाँ संचालित होती हैं। इन्हीं में से प्रमुख है व्यायाम एवं खेलकूद। महाविद्यालय में प्रातः 6.30 बजे से 7.30 बजे तक पी. टी. की कक्षाएं प्रतिदिन लगती हैं जिसमें प्रशिक्षार्थियों को इस प्रकार प्रशिक्षित किया जाता है कि वे अपने विद्यालयों में छात्रों को शारीरिक व्यायाम के माध्यम से न केवल शारीरिक स्वास्थ्य का विकास कर सकें, अपितु उनमें शारीरिक क्षमता, मानसिक सजगता तथा चुस्ती, परिश्रम, दल योजना, नेतृत्व का विकास, विजय एवं पराजय में समभाव जैसे उत्तम गुणों का विकास कर सकें। इस वर्ष यह कार्यक्रम 10 सितम्बर 2018 से प्रारंभ होकर 18 जनवरी 2019 तक वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता के समापन तक संचालित किया गया।

प्रशिक्षार्थियों को चार निकेतन में विभाजित कर इनके मध्य दो चरणों में वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रथम चरण की प्रतियोगिता दिनांक 11.12.2018 से 19.12.2018 तक सम्पन्न हुई जिसमें खो–खो, व्हालीबाल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, जम्प रोप आदि खेल सम्मिलित किये गये। द्वितीय चरण में 16 जनवरी 2019 से 18 जनवरी 2019 तक ट्रैक एवं फील्ड स्पर्धा का आयोजन भव्य रूप से किया गया। स्पर्धा में प्रशिक्षार्थियों ने 100, 200, 400, 800 मीटर दौड़ रिले रेस, गोला, तवा तथा भाला फेंक, ऊंची कूद, लम्बी कूद, त्रिकूद स्पर्धा में अपने खेल कौशल का प्रदर्शन किया। पुरुष वर्ग में कपिलेश्वर प्रधान व महिला वर्ग में चंचल सोनकर ने उत्कृष्ट खेल का प्रदर्शन कर कालेज कलर प्राप्त किया।

सैय्यद किफायत उल्लाह
क्रीड़ा अधिकारी
उ. शि. अ. सं. बिलासपुर

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर सत्र 2018–19

सांस्कृतिक विभाग– डॉ. ए. के. पोद्दार

(1) 31 अगस्त 18 महाविद्यालय के सहा. प्राध्यापक श्रीमती रीता चौकसे एवं मुख्य लिपिक सुश्री कैथवास शासकीय सेवा से निवृत्त हुई एवं विदाई समारोह का आयोजन किया गया।

(2) 5 सितम्बर 18 शिक्षक दिवस के अवसर पर प्रशिक्षार्थियों द्वारा स्वागत एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

(3) 28 नवं. 18 को अंतर्विद्यालयीन लोक नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन महाविद्यालय में किया गया, जिसमें शहरी एवं ग्रामीण स्तर के 14 विद्यालयों को शामिल किया गया था।

(4) 31 दिसं. 2018 को महाविद्यालय के सहा. प्राध्यापक श्री जी. पी. भास्कर के सेवानिवृत्त होने पर विदाई समारोह का आयोजन किया गया।

(5) दिनांक 2.01.19 से 5.01.19 महाविद्यालय में निकेतन वार सांस्कृतिक कार्यक्रम का रंगारंग आयोजन किया गया।

(6) दिनांक 18.01.19 से 18.1.19 तक वार्षिकोत्सव अन्तर्गत खेलकूद एवं पुरस्कार वितरण का आयोजन किया गया दिनांक 16 जनवरी को उद्घाटन समारोह के अवसर पर श्री पी. दयानंद संचालक को आमंत्रित किया गया था।

(7) 26 जनवरी 2019 को महाविद्यालय में प्रशिक्षार्थियों के द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

सांस्कृतिक प्रभारी

डॉ. ए. के. पोद्दार, सहा. प्राध्यापक

DEPARTMENT OF INFORMATION COMMUNICATION TECHOLOGY YEAR OF 1996

We Have

INTERNET FACILITEES FOR ALL COLLEGE AREA BY WI-FY & NET MAIN EQUIPEMENTS- COMPUTER- 52, SMART BORD- 3, LCD PROJECTOR- 5, WAVE CAMERA- 6, PRITER- 5, SCANNER- 2 FAX- 1 ON LINE UPS 3.2 K. V., BRAD BAND WITH NET WORKING, EDUSET, MANY OTHER EQUPIMENT.

OBJECTIVE

1. TO PROVIDE THE FACILITEES OF ICT EQUIPEMENTS FOR TEACHER EDUCATOR & STUDENTS
2. TO PROVIDE THE LAB FACILITEES FOR STUDENTS
3. TRAINING PROGRAMME FOR TEACHER EDUCATOR
4. TRAINING PROGRAMME FOR SCHOOL TEACHER
5. CLASSROOM INOVATION
6. TWO SEPRATE LAB FOR TRAINIES & STUDENTS
7. ALL B. ED. & M. ED. STUDENTS ARE ALLOWED FOR PRACTICE AND RE SEARCH WORK IN COLLEGE HOURS.
8. SPECIAL GUEST LECTURE FOR SPECIFIED TYPICS IN OUR COURSE AREA.
9. TECHNICAL SUPPORT IN ADMINITRATION & MANNAGEMENT

D. K. JAIN

COMOUTER LAB INCHARGE & ICT

प्रतिवेदन
* विज्ञान विभाग वर्ष 2018-19 *
कल्पना चावला विज्ञान क्लब
उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर (छ. ग.)

सत्र पर्यन्त विज्ञान क्लब में संचालित गतिविधियों हेतु शासकीय शिक्षा महाविद्याल, बिलासपुर (छ. ग.) विज्ञान क्लब के पदाधिकारियों का गुणानुक्रम के आधारपर मनोनयन किया गया है। विज्ञान क्लब के पदाधिकारियों का गुणानुक्रम के आधार पर मनोनयन किया गया है।

विज्ञान क्लब के पदाधिकारी-

अध्यक्ष- श्रीमती रितेश्वरी चतुर्वेदी

सचिव- श्री हेमंत पाण्डेय

विज्ञान क्लब प्रभारी-

बी. एड. तथा एम. एड. के 300 तथा 100 कुल 400 प्रशिक्षार्थी विज्ञान क्लब के सदस्य हैं। महाविद्यालय में सत्र पर्यन्त विभिन्न शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सृजनात्मक गतिविधियां संचालित की जाती है।

शिक्षण अधिगम सामग्री कार्यशाला-

महाविद्यालय के प्रशिक्षार्थियों के लिए दो दिवसीय दिनांक 23.09.2018 को शिक्षण अधिगम सामग्री कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें श्रीमती उषामणी तथा श्रीमती नीला चौधरी द्वारा विभिन्न अवधारणा से संबंधित सहायक सामग्री के संबंध में बताया गया, वातावरण को रोचक बनाने तथा पाठ को ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा ग्रहण करने की योग्यता का विकास प्रशिक्षार्थियों द्वारा किया गया। तत्पश्चात एक सप्ताह की कार्यशाला प्रशिक्षार्थी के लिए रखी गई जिसमें प्रशिक्षार्थियों के शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण किया।

विज्ञान दीप पत्रिका (हस्तलिखित संस्करण)-

महाविद्यालय के प्रशिक्षार्थियों द्वारा विज्ञान विज्ञानदीप पत्रिका का हस्तलिखित संस्करण प्रस्तुत किया। जिसके अंतर्गत वैज्ञानिक जानकारियों, नवाचारों एवं खोजों से संबंधित विभिन्न आलेख संग्रहित किए गए।

विज्ञान बुलेटिन बोर्ड-

सत्र आरंभ से महाविद्यालय के बुलेटिन बोर्ड में विज्ञान से संबंधित समसामयिक घटनाओं पर आधारित बुलेटिन प्रतिदिन बोर्ड में निरीक्षण हेतु चस्पा किया जाता है।

विज्ञान संग्रहालय-

प्रशिक्षार्थियों द्वारा हरबेरियम फाइल का निर्माण एवं अन्य आवश्यक वैज्ञानिक उपकरणों का संग्रह प्रयोगशाला में है।

विज्ञान क्लब द्वारा आयोजित प्रतियोगिताएँ

(अ) तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता–

महाविद्यालय में दिनांक 30.8.2018 को तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

बी. एड.

प्रथम– श्री हेमंत पाण्डेय

एम एड

प्रथम– अभिषेक शर्मा व प्रणव तिवारी

(ब) प्रश्न मंच प्रतियोगिता– दिनांक 17.09.2018

बी. एड.

प्रथम– दीनबंधु साहू व प्रियंका दुबे

एम. एड.

प्रथम– श्री छबिलाल राठौर व सौमी शर्मा

(स) सहायक शिक्षण सामग्री प्रतियोगिता–

बी. एड. प्रशिक्षार्थियों के लिए आवश्यक शिक्षण अधिगम सामग्री प्रतियोगिता की गई जिसमें प्रशिक्षार्थियों से सुंदर पोस्टर का निर्माण किया।

बी. एड. प्रथम– श्री रामकेश्वर सिंग

द्वितीय– श्री रणजीत सिदार

राज्य स्तरीय विज्ञान मेला– इस वर्ष राज्य स्तरीय विज्ञान मेला जो दिनांक 03.10.2018 से 06.10.2018 को जिला कांकेर हुआ है, जिसमें इस महाविद्यालय की टीम सम्मिलित हुई है। अतः उ. शि.अ. संस्थान बिलासपुर (छ. ग.) का चांवला विज्ञान क्लब के द्वारा सत्र पर्यन्त विभिन्न वैज्ञानिक क्रियाकलापों का क्रियान्वयन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. निशी भाम्बरी तथा विज्ञान प्रभारी श्रीमती प्रीति तिवारी, श्रीमती नीला चौधरी के समन्वय व मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक किया गया। विज्ञान क्लब के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रमों के द्वारा प्रशिक्षार्थियों की रचनात्मक प्रवृत्तियों को विकसित करने की वैज्ञानिक दृष्टिकोणों को मूर्तरूप देने का प्रयास किया गया। इस वर्ष डॉ. रमणाराव के मार्गदर्शन में महाविद्यालय की टीम राज्य स्तरीय विज्ञान मेले में सम्मिलित हुई जिसमें महाविद्यालय का विज्ञान क्लब को प्रथम स्थान मिला, डॉ. रितेश्वरी चतुर्वेदी ने विज्ञान क्लब की गतिविधियों को मेले में प्रस्तुत किया, तात्कालिक भाषण में प्रणव तिवारी को प्रथम, श्री हेमंत पाण्डेय को द्वितीय स्थान मिला, प्रश्न मंच प्रतियोगिता में श्री छबिलाल राठौर व सोनी शर्मा को द्वितीय स्थान मिला। सभी प्रशिक्षार्थियों को महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा बधाई दी गई।

कार्यालय उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर (छ. ग.)

पत्र क्र./ जोन स्तरीय विज्ञान मेला/ 2018–19 बिलासपुर दिनांक 14.08.2018

श्रीमती प्रीति तिवारी

विज्ञान प्रभारी

प्रतिवेदन
योग प्रशिक्षण

शासकीय उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर में बिलासपुर जिले के अंतर्गत आने वाले विभिन्न शालाओं के शिक्षक–शिक्षिकाओं को 7 दिवसीय शारीरिक शिक्षण एवं योग प्रशिक्षण का आयोजन 14 दिसंबर 2018 से 20 दिसंबर 2018 तक किया गया। इसके अंतर्गत विषय विशेषज्ञों एवं योग गुरुओं के माध्यम से विभिन्न प्रकार के आसन एवं योग का प्रशिक्षण दिया गया।

इस कार्यक्रम को प्रदीप्त एवं प्रकाशित करने में निम्न विशेषज्ञों, योग गुरुओं ने अपने विधा का प्रकाशन कर सभी प्रशिक्षार्थियों को "रोग से निरोग" का मूल मंत्र दिये–

1. श्रीमती सुप्रिया भारतीयन (आकाशवाणी, अम्बिकापुर)
   विषय– अष्टांग योग।
2. श्री लक्ष्मण प्रसाद मिश्र (सेवानिवृत्त प्राध्यापक, अम्बिकापुर)
   विषय– योग का इतिहास।
3. श्री संजय अग्रवाल (अध्यक्ष, राज्य योग आयोग)
   विषय– आयुष मंत्रालय द्वारा योग पर कृत कार्यवाही एवं स्वरुप पर चर्चा।
4. डॉ. यू. व्ही. वारे (सहायक प्राध्यापक, IASE बिलासपुर)
   विषय– योग के महत्व पर चर्चा तथा शारीरिक एवं आंतरिक अंगों के बारे में हार्मोन के विषय पर चर्चा।
5. सुश्री सुलभा ताई देशपाण्डे (तेजस्वनी छात्रावास संचालिका एवं सामाजिक कार्यकर्ता)
   विषय– सात चक्रों, अक्षरों एवं रंगों के माध्यम से प्रत्येक को अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए मार्गदर्शन दिया।
6. प्रोफेसर आर. एस. दुबे (सेवानिवृत्त प्राचार्य, बिलासपुर)
   विषय– षटदर्शन शंकराचार्य एवं वेदांत के आधार योग की भूमिका।
7. डॉ. मुकेश मेहता (मुख्य प्रशिक्षक, लाडनू वि.वि. राजस्थान)
   सम्पूर्ण कार्यक्रमों का संचालन
8. डॉ. संतोष तिवारी (व्याख्याता, चकरभाटा)
   विषय– यौगिक क्रिया का अभ्यास।

उपरोक्त प्रशिक्षण आपेक्षित उद्देश्य में सफलतम रहा। इस प्रशिक्षण में कुल 66 प्रतिभागियों ने भाग लिया। यह प्रशिक्षण पूर्णतः आवासीय था, जिसका पूर्ण लाभ प्रशिक्षार्थियों ने लिया। अंत में सभी प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किया गया।

प्रभारी योग शाखा
डॉ. यू. व्ही. वारे
सहायक प्राध्यापक IASE बिलासपुर

प्रतिवेदन- 1

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 (RTI)

01 जनवरी 17 से 31 दिसम्बर 2017 की स्थिति

विभाग	कार्यालय का नाम	अधिनियम की धारा- 4(4) के तहत संकलित राशि का विवरण प्रसारण एवं संधारण शुल्क	अधिनियम की धारा- 6 (1) के तहत प्राप्त फीस का विवरण आवेदन शुल्क	अधिनियम की धारा-7 (5) के तहत प्राप्त फीस का विवरण इलेक्ट्रॉनिक आदि से शुल्क	अधिनियम की धारा-7 (5) के तहत प्राप्त फीस विवरण इलेक्ट्रॉनिक आदि से शुल्क	अन्य संकलित राशि	कुल राशि
1	2	3	4	5	6	7	8
शिक्षा	उन्नत शिक्षा	निरंक	70	156	00	निरंक	206
विभाग	अध्ययन संस्थान बिलासपुर						

धारा 6 (1) के अन्तर्गत प्राप्त आवेदन पत्र के संबंध में श्रेणीवार विवरण

विभाग	कार्यालय का नाम	प्राप्त आवेदनों							
		शहरी क्षेत्र	ग्रामीण क्षेत्र	गरीबी रेखा के नीचे की श्रेणी अन्तर्गत प्राप्त कुल आवेदनों की संख्या	अनुसूचित जाति की संख्या	अनुसूचित जनजाति की संख्या	पिछड़ा वर्ग की संख्या	अन्य वर्ग	योग
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
शिक्षा विभाग	उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर	05	02	-	02	-	05	-	07

डॉ. यू. व्ही. वारे

सहायक प्राध्यापक IASE बिलासपुर

प्रतिवेदन
कैरियर–काऊंसलिंग कार्यक्रम

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर के तत्वावधान में महाविद्यालय के कैरियर सेल प्रभारी डॉ. रजनी यादव के मार्गदर्शन में एम. एड. प्रथम वर्ष सत्र 2017–19 के प्रशिक्षुओं द्वारा ग्रामीण अंचलों के माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए एक दिवसीय कैरियर गाइडेंस एवं काऊंसिलिंग कार्यक्रम स्त्रोत शाला आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बिल्हा में दिनांक 04.08.2018 को रखा गया।

कार्यक्रम प्रभारी	–	डॉ. श्रीमती रजनी यादव
समयावधि	–	एक दिवसीय, प्रातः 1 बजे से सायं 4.30 बजे तक
हितग्राही समूह	–	600 छात्र, 40 शिक्षकगण
स्त्रोत व्यक्ति	–	श्रीमती रमाकांति साहू, प्राध्यापक, आई.ए.एस.ई. बिलासपुर
	–	एम. एड. प्रशिक्षार्थी प्रथम वर्ष आई.ए.एस.ई. बिलासपुर
सामान्य उद्देश्य	–	ग्रामीण अंचल के विद्यार्थियों में कैरियर चयन एवं कैरियर विकास संबंधी जागरुकता का संचार
	–	विद्यार्थियों को विषय चयन की आवश्यकता एवं प्रक्रिया के महत्व से परिचित कराना।
	–	विषय चयन उपरांत रुचि के क्षेत्रों का ज्ञान एवं चुनाव संबंधी मार्गदर्शन।
	–	विषय से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्ध रोजगार संभावनाओं, पाठ्यक्रमों एवं संस्थाओं की प्राथमिक जानकारी प्रस्तुत करना।

कार्यक्रम प्रभारी डॉ. रजनी यादव, प्राध्यापिका श्रीमती रमाकांति साहू के साथ संस्था के प्राचार्य श्री बृजनंदन पात्रे जी, संचालिका पूजा शर्मा एवं समस्त शिक्षक प्रतिभागियों ने माँ सरस्वती की प्रतिमा का पूजन किया। इस अवसर पर अनिता वर्मा ने साथियों के साथ सरस्वती वंदना प्रस्तुत किया। डॉ. रजनी यादव ने केम्प की उद्देश्यों तथा आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए उचित निर्णय के लिए गाइडेंस की भूमिका को रेखांकित किया, साथ ही विभिन्न व्यवसायिक क्षेत्रों के संस्थाओं और महाविद्यालयों की विशेषताओं से परिचित कराया। संतोष क्षत्रिय ने लोकसेवा आयोग से संबंधित जानकारी प्रस्तुत की एवं छात्रों के शंकाओं का समाधान भी सुझाया। कक्षा 10 वीं के बाद विषय चयन में रुचि की भूमिका पर बल देते हुए रुही गाटलिब ने कम्प्यूटर टेक्नॉलाजी एवं इसके विभिन्न क्षेत्रों पर प्रकाश डाला। सुनिता जायसवाल ने गणित विषय के आधार पर पॉलिटेक्निक एवं इंजीनियरिंग के क्षेत्र पर प्रकाश डाला। धीरेन्द्र शर्मा एवं प्रीति मिश्रा ने चार्ट और पोस्टर के माध्यम से बॉयोविषय से संबंधित

रोजगार अवसरों पर जानकारी प्रस्तुत की। वंदना रोहिल्ला के साथ रश्मि पाण्डेय ने कॉमर्स और कानून से जुड़ी जानकारी छात्रों को प्रस्तुत करायी। अनिता वर्मा ने प्रेरक उद्‌बोधन दिया। विशेष रूप से आमंत्रित योगेश पाण्डेय ने सफलता के लिए क्या जरूरी है विषय पर अपनी बात रखी। प्राध्यापिका रमाकांति साहू के द्वारा बार–बार असफलता से निराश न होकर मेहनत और जज्बा से सफलता प्राप्त करने के लिए छात्रों को प्रेरित किया। अंत में संस्था के प्राचार्य श्री पात्रे जी द्वारा इस शिविर को सार्थक बताते हुए, छात्रों को लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में आदर्श बिल्हा के साथ अग्रसेन इंग्लिश मीडियम बिल्हा, सरस्वती शिशु मंदिर बिल्हा, शा. सूरजमल उ. मा. वि. बिल्हा, शास. कन्या उ. मा. वि. बिल्हा, शास. उच्चतर मा. विद्यालय बिटकुली के लगभग 600 विद्यार्थी तता 40 शिक्षकों ने अपनी सहभागिता दी। कार्यक्रम में गाइडेंस टीम के राकेश त्रिपाठी, पावन थवाईत, आरिफ शेख, देवेन्द्र दीक्षित, सी. पी. साहू, प्रमिला झलारिया, डॉ. रितेश्वरी, बरखा पाण्डेय, कल्पना यादव, अंजली वर्मा, सुरेन्द्र राजपूत, लक्ष्मी निषाद, सौरभ जांगड़े, दिनेश लकड़ा, नागेन्द्र पाटनवार के साथ शिशु मंदिर बिल्हा के प्राचार्य श्री नर्मदानंद राजपूत, अग्रसेन इंग्लिश मीडियम स्कूल बिल्हा के प्राचार्य श्री पुष्पेन्द्र शेखर सोनी तथा अभिभावकगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन चंद्रकांत तिवारी एवं आभार प्रदर्शन अभिषेक पाण्डेय ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में आदर्श स्कूल की संचालिका कु. पूजा शर्मा के साथ सभी शिक्षक स्टाफ एवं कर्मचारियों का योगदान विशेष रूप से सराहा गया।

डॉ. रजनी यादव
कैरियर सेल प्रभारी

छात्रवृत्ति विभाग– प्रतिवेदन

छ. ग. शासन द्वारा पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति महाविद्यालय के सीधी भर्ती वाले बी. एड. एवं एम. एड. वाले प्रशिक्षार्थियों को प्रदान की जाती है। संस्था में अध्ययनरत सभी वर्गों के लाभान्वित होने वाले प्रशिक्षार्थियों कोऑन लाइन माध्यम से छात्रवृत्ति प्रदान की जायेगी। वर्ष 2018–19 में बी. एड. द्वितीय वर्ष एवं एम. एड. प्रथम वर्ष, बी. ए. द्वितीय वर्ष एवं एम. एड. के प्रशिक्षार्थियों को निम्नानुसार छात्रवृत्ति प्रदान की जायेगी ऐसा प्रस्ताव महाविद्यालय ने संबंधित कार्यालय को भेजा है।

कक्षाएं	अनुसूचित जनजाति (ST)	अनुसूचित जाति (SC)	अन्य पिछड़ा वग (OBC)
बी. एड. प्रथम एम. एड. प्रथम वर्ष	17	11	29
बी. एड. द्वितीय एम. एड. द्वितीय वर्ष	22	11	24
कुल	39	22	53

डॉ. श्रीमती रजनी यादव
छात्रवृत्ति प्रभारी

केन्द्र प्रवर्तित योजना के तहत किए गए कार्य का विवरण

संचालक राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर, छ. ग. के निर्देशानुसार महाविद्यालय में दक्षता विकास, शोध कार्य, रिसर्च सेंटर सर्पोट टू डाइट, शिक्षक शिक्षा में तकनीकी, नवाचार, मटेरियल डेवलपमेंट इत्यादि कार्य किए गए, जो निम्नानुसार हैं–

शोध कार्य

स.क्र.	आचार्य/प्रभारी का नाम	शोध विषय
1.	श्रीमती प्रीति तिवारी व श्रीमती रीमा शर्मा	study of well being and happiness among primary school teachers of chhattisgarh.
2.	श्रीमती एस. उषामणी	study of status of science laboratories in secondary schools.
3.	डॉ. श्रीमती क्षमा त्रिपाठी व डीके जैन	माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर सामाजिक नेटवर्किंग (सोशल साइट्स) के प्रभाव का अध्ययन
4.	डॉ. श्रीमती महालक्ष्मी सिंग व अजीता मिश्रा	Impact of training of work satisfaction and motivation of teachers at secondry level.
5.	डॉ. श्रीमती सुदेशना वर्मा व अजीता मिश्रा	Impact of social media on social behavior of adolescent of chhattisgarh.
6.	श्रीमती प्रीति तिवारी व नीला चौधरी	A study of effect of peer pressure on the career preference of girls of chhattisgarh.
7.	श्रीमती नलिनी पाण्डेय व सुश्री आशा बनाफर	A study of awareness and attitude towards adolescent issues of chhattisgarh
8.	डॉ. बी. व्ही. रमणाराव व डॉ. ए. के. पोद्दार	A study on leadership styles of second ary school principals with reference to performance of students.
9.	श्रीमती नीला चौधरी व डॉ. रजनी यादव	A study of awareness of environmental cleanliness among the teachers and stu dents of higher secondry school of chhatisgarh.

दक्षता विकास कार्यक्रम

स.क्र.	कार्यक्रम का नाम	प्रभारी का नाम	समयावधि	हितग्राही समूह व संख्या
1.	जीवन कौशल प्रशिक्षण	श्रीमती प्रति तिवारी व श्रीमती नीला चौधरी	26–28 सितंबर 22–26 अक्टूबर	उ प्रा. शिक्षक 43
2.	भाषा प्रवीणता शार्ट टर्म कोर्स	डॉ. श्रीमती क्षमा त्रिपाठी, श्रीमती रीमा शर्मा श्री राजेश गौराहा	22–26 अक्टूबर 2018	निजी बी. एड. महाविद्यालय के शिक्षक प्रशिक्षक 20
3.	पाठ्यवस्तु का नाट्य रूपान्तरण शिक्षण प्रशिक्षण	श्रीमती नलिनी पाण्डेय व डॉ. रजनी यादव	3–05 अक्टूबर 2018	शिक्षक प्रशिक्षक+ पू. मा. वि. के शिक्षक 27+91 = 118
4.	भौतिकशास्त्र कार्यशाला	श्रीमती उषामणी	26 नवं.–01 दिसंबर	37 व्याख्याता उ. मा. शाला
5.	योग प्रशिक्षण	डॉ. यू. व्ही वारे	14–20 दिसंबर	66 उ. प्रा. मा. शिक्षक
6.	रसायनशास्त्र उन्मुखीकरण	डॉ. सुदेशना वर्मा	19–22 दिसंबर	51 रसा. व्याख्याता
7.	लर्निंग आउटकम कार्यशाला	डॉ. महालक्ष्मी सिंग, श्रीमती मनीषा वर्मा व श्री दुष्यन्त चतुर्वेदी	7 से 9 फरवरी 2019	विषयवार आचार्य कुल 08
8.	कैरियर गाइडेंस कैम्प (बिल्हा)	डॉ. श्रीमती रजनी यादव	4 अगस्त 2018	उ. मा. शिक्षक व विद्यार्थी 500
9.	इंटर्नशिप एवं परावर्ती लेखन कार्यशाला	डॉ. निशी भाम्बरी एवं श्रीमती नलिनी पाण्डेय	6 अक्टूबर2018	शिक्षक प्रशिक्षक – 27

नवाचार के क्षेत्र में छ. ग. की जनजातियों पर आधारित संस्कृति व कला पर डॉ. श्रीमती अजिता मिश्रा द्वारा कार्य किया।

सामग्री निर्माण के तहत–

रिफ्लेक्टिव डायरी– डॉ. श्रीमती निशी भाम्बरी, श्रीमती नलिनी पाण्डेय, श्रीमती प्रीति तिवारी व श्रीमती नीला चौधरी

शोध उपकरण व निर्देशिका निर्माण–

1. भौतिकशास्त्र शिक्षक प्रशिक्षण संदर्शिका– श्रीमती उषामणी
2. रसायनशास्त्र शिक्षक प्रशिक्षण संदर्शिका– डॉ. श्रीमती सुदेशना वर्मा
3. कापरेटिव लर्निंग प्रशिक्षण संदर्शिका– डॉ. श्रीमती निशी भाम्बरी व श्रीमती नीला चौधरी
4. रिसर्च जनरल एवं न्यूज लेटर का प्रकाशन किया गया।

प्रतिवेदक

श्रीमती नीला चौधरी

प्रतिवेदन

स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम

आज दिनांक 25.1.19 को के Life Line Nutrition Centre के द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत श्री आर. के. प्रधान जी के द्वारा व्यवस्थित खान–पान के माध्यम से उत्तम स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्रदान की गई। उन्होंने बताया कि मनुष्य के शरीर में डायबिटीज, ब्लड प्रेशर, मोटापा, स्ट्रोक व कैंसर के पांच खतरे फैट की शरीर में अधिकता की वजह से होते हैं, जो कि मृत्यु का कारण बनते हैं।

मनुष्य को इन समस्याओं से बचने के लिये शरीर का आवश्यकता के अनुसार 14 प्रकार के न्यूट्रीशियन्स सही मात्रा में ग्रहण करना चाहिये। जिनमें

प्रोटीन – 30%
कार्बोहाइड्रेट – 40%
फाइबर – 25%
ओमेगा 3 – 10%

Vitamins and minerals
सही मात्रा में ग्रहण करना चाहिये।
Nutritions we need everyday

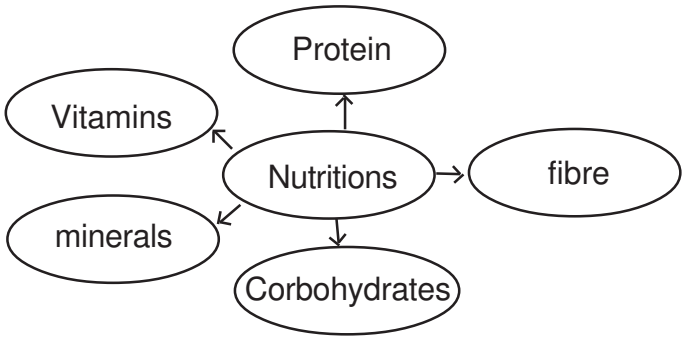

प्रधान सर ने हमें हेल्थ की परिभाषा बताते हुए सभी को Clap करवाया। Claping करवाने के बाद बताया कि Clap करने से Blood Circulation शरीर में बढ़ता है। इसके बाद उन्होंने के 2 चेकअप बताये जिसमें–

(1) Clinical Checkup- Blood में हीमोग्लोबिन WBC, RBC के बारे में पता चलता है।

(2) Physical Checkup शारीरिक संगठन का तत्पश्चात् उन्होंने प्रत्येक मनुष्य के लिये संतुलित वजन के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि मनुष्य के अनुरूप उनका वास्तविक वजन कितना होना चाहिये जिसे उन्होंने निम्न सूत्र के माध्यम से समझाया।

	Hight (Cm)		**Weight**
For men -	**170 -100**	**=**	**70 Ideal weight**
For Women -	**165 -105**	**=**	**60 Ideal weight**

इस प्रकार पुरुषों का Weight उनकी Hight में 100 को घटाकर तथा महिलाओं का वजन उनकी में 105 घटाकर प्राप्त करते हैं।

उन्होंने बताया कि मनुष्य को अपने कैलोरी Buring Capacity के बराबर ही आहार लेना चाहिये। मात्रा से अधिक लेने पर वह एकत्रित होते हुये शरीर में मोटापा का कारण बनते हैं। शरीर का

वजन जितना अधिक होगा शरीर के अंगों को उतना ही अधिक भार उठाना पड़ेगा। जिससे अंगों की क्षति शीघ्र होगी। कमर, घुटने आदि जगहों पर दर्द शुरू होजायेगा. उन्होंने Fat के बारे में बताया– Fat क्या है? शरीर में आवश्यकता से अधिक कैलोरी का एकत्रित होना कहलाता है।

Effect– शरीर पर इसका प्रभाव

(1) Liver के Working Space को कम करता है।
(2) कम करता है।
(3) कैंसर का खतरा।
(4) कमर दर्द, घुटनों का दर्द।
(5) Heart Attack आदि।

उपाय– (1) संतुलित भोजन ग्रहण करें।
(2) व्यायाम करें।

Fat पुरूषों में 14–17% तथा महिलाओं में 20–24% से अधिक नहीं होना चाहिये।

Visceral Fat

Visceral fat सामान्य रूप से 2–8 यूनिट तक होना चाहिये। उन्होंने खान–पान संबंधी आवश्यक दिशा–निर्देश प्रदान किये, जिसमें उन्होंने बताया कि सुबह का नाश्ता राजा की तरह, दोपहर का भोजन प्रजा की तरह तथा रात्रि का भोजन भिखारी की तरह ग्रहण करना चाहिये। उन्होंने निम्न बातें कहीं–

(1) प्रातः काल उठते ही बिना मुंह धोये गुनगुना पानी पीना चाहिये।
(2) खाना चबा–चबाकर खाना चाहिये (32 बार)
(3) खाने के आधा घंटा पहले पानी पीना चाहिये।
(4) खाने के 1 घंटे बाद पानी पीना चाहिये।
(5) नियमित 45 मिनट से 1 घंटे तक व्यायाम करना चाहिये।

उपयोगिता– आज की कार्यशाला हमारे लिये अत्यंत लाभकारी रही। हम आज के भाग–दौड़ भरी जिंदगी में अपने खान–पान व स्वास्थ्य पर ध्यान दे पाते हैं। लेकिन आज के कार्यशाला ने हमारा ध्यान स्वास्थ्य की ओर आकृष्ट किया। जिसमें बताया गया कि हमें प्रतिदिन में कम से कम अपने स्वास्थ्य के लिये 1 घंटे का समय निकालकर व्यायाम करना चाहिये। प्रोटीन, विटामिनयुक्त भोजन ग्रहण करना चाहिये।

प्रतिवेदक
कु. प्रियंका दुबे
बी. एड. प्रथम वर्ष

शैक्षणिक भ्रमण– 2019

दिनांक– 05.02.19 से 07.02.19 तक

दिनेश कुमार सिंह, बी. एड.

–: भ्रमण तैयारी :–

सर्वप्रथम किसी कार्यक्रम के आयोजन से पूर्व उसकी तैयारी आवश्यक होती है। इसलिये पाण्डेय मैडम एवं प्राचार्य मैडम द्वारा सभी प्रशिक्षार्थियों से दिनांक– 29.02.13 को सभा कक्ष में सामूहिक चर्चा किया गया। जिसमें मैडम द्वारा बताया गया कि हम लोगों को भ्रमण हेतु राज्य के अन्दर ही जाना है, और वो भी नक्सली क्षेत्र को छोड़कर ही जाना है। इस हेतु हम लोग अमरकंटक जाने का विचार किये हैं, जहाँ पर केन्द्रीय विश्व विद्यालय एवं अन्य प्राकृतिक दृश्यों एवं ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण करेंगे, तत्पश्चात् छात्रों के तरफ से विचार आया कि हम लोग बारनवापारा, राजिम, चम्पारण एवं विधानसभा तथा पुरखौती मुक्तांगन जाना चाहते हैं, जिसे पाण्डेय मैडम एवं प्राचार्य ने बड़ी ही सहजता से स्वीकार कर लिया, जो हम लोगों को बहुत ही अच्छा लगा और उन्होंने उसकी तैयारी हेतु हमें भी निर्देशित किया और स्वयं भी प्रयास करने लगी। इस प्रकार यह कार्यक्रम निश्चित हो गया। उसके बाद पाण्डेय मैडम अन्तिम समय टूर जाने से दो दिन पहले 02.02.19 को सभी प्रशिक्षार्थियों को जो टूर जाने वाले थे उन्हें दो समूह (महिला पुरूष) में महिलाओं को अलग व पुरुषों को अलग करके बारी–बारी से भ्रमण के समय बरती जाने वाल आवश्यक सावधानियों के बारे में बताया गया एवं अपने साथ क्या–क्या ले जाने है, यह भी बताया गया और मैडम द्वारा सख्त निर्देश दिया गया कि आप लोगों को भ्रमण के दौरान पूर्णतया अनुशासित रहना एवं समय का विशेष ध्यान देना है।

फिर भ्रमण से एक दिन पहले मैडम द्वारा व किफायत सर द्वारा महिलाओं को चार ग्रुप में व पुरुषों को चार ग्रुप में बांटकर सभी ग्रुप के एक प्रभारी बना दिये जो अपने ग्रुप का देख–रेख करेंगे व उस ग्रुप का पैसा भी ग्रुप प्रभारी के पास ही जमा करा दिये जो अपने पास ही वो लोग रखेंगे और समयानुसार उनसे लिया जायेगा। फिर मैडम द्वारा कालेज में जमा राशि को अन्य 8 लोगों में बांटकर दे दिया गया। पाण्डेय मैडम द्वारा इस तरह प्रत्येक मामले में पारदर्शिता रखना हमें बहुत ही अच्छा लगा और हम लोगों ने सीखा कि शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किस तरह सभी को विश्वास में लेते हुए आयोजन किया जाता है। इस प्रकार हम लोग सभी के सहयोग से पूर्णरुपेण भ्रमण कार्यक्रम की तैयारी कर लिये।

भ्रमण कार्यक्रम (प्रथम दिवस)

पाण्डेय मैडम के आदेशानुसार सभी प्रशिक्षार्थी प्रातः 7.30 बजे कालेज ग्राउण्ड में उपस्थित हो गये। वहाँ पर सभी सामान बस में रखकर 8.30 बजे दोनों बस लेकर भ्रमण के लिये रवाना हो गये और दोपहर 1.00 बजे हम लोग बारनवापारा अभ्यारण्य पहुंच गये, वहां पर दोपहर का भोजन करने के बाद हम लोग जिप्सी से अभ्यारण्य घूमने हेतु निकल गये। अभयारण्य में हम लोगों ने देखा कि जंगल चारों तरफ कैसे वन विभाग द्वारा घुमावदार रास्ता बनाकर आगन्तुकों के घूमने की व्यवस्था की गयी है। जंगल में छोटे–मोटे जानवर व तालाब तथा विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों से हम लोग परिचित हुये

और हम लोगों ने यह आभास किया कि वन्य प्राणियों एवं वन सम्पदा को संरक्षित रखने की आवश्यकता है और इन प्राकृतिक सम्पत्तियों को व्यवस्थित कर पर्यटन के रूप में विकसित कर रोजगार के अवसर अधिक से अधिक उपलब्ध कराये जा सकते हैं।

बार नवापारा अभ्यारण्य देखने के पश्चात् हम लोग बागबहरा के लिये प्रस्थान किये और लगभग 9.00 बजे रात्रि में बागबहरा चण्डी माँ के मन्दिर पहुंच गये और वहां पर रूम व हाल लेकर रात्रि विश्राम किये और फिर सुबह उठकर सभी प्रशिक्षार्थी तैयार होकर 7.00 बजे से 9.00 बजे माँ के दर्शन व आरती में शामिल हुये व वहाँ के प्राकृतिक दृश्य का आनन्द लिये, लोगों द्वारा बताया गया कि यहाँ पर भालू माँ का प्रसाद लेने आते हैं, परन्तु हम लोगों को नहीं दिखाई दिये। तत्पश्चात् वहाँ से हम लोग जतमई घटारानी के दर्शन हेतु चल दिये। वहाँ हम लोग लगभग 11.00 बजे पहुंच गये। वहां जतमई माँ व घटारानी का मन्दिर पहाड़ी के बीच में स्थित है, जिसके दृश्य काफी मनमोहक थे और मन्दिरों में सुन्दर कलाकृतियों का बेहतरीन प्रदर्शन है व दोनों जगह जलप्रपात भी है और पहाड़ी के बीच दोनों जगह कुयें जैसी संरचना बनी हुई। हम सभी प्रशिक्षार्थी इस प्राकृतिक छटा का काफी लुत्फ उठाये, परन्तु मैंने देखा कि जो जलप्रपात दिखाई दे रहा था वह कृत्रिम पम्प द्वारा पानी ऊपर पहुंचाकर गिराया जा रहा था, क्योंकि नाला सूख चुका था, तो हमें यह अनुभव हुआ कि उन प्राकृतिक धरोहरों को बचाने के लिये काफी सार्थक प्रयास करने की आवश्यकता है। हम लोग घटारानी में ही रिसाल्ट में भोजन किये व राजिम के लिये प्रस्थान किये।

हम लोग लगभग 4.00 बजे सायं को राजिम के राजीव लोचन मन्दिर पहुंच गये। वहाँ पर राजीव लोचन मन्दिर परिसर में स्थित सभी मन्दिरों का दर्शन किये, जिसमें प्रमुख मन्दिर है, विष्णु भगवान का मन्दिर, जो काफी सुन्दर है। पुजारी द्वारा बताया गया कि विष्णु भगवान का 24 घण्टे में तीन बार श्रृंगार किया जाता है। सुबह– बाल्यावस्था का श्रृंगार, दोपहर तरुण अवस्था का व शाम को परिपक्वावस्था का श्रृंगार किया जाता है। विष्णु भगवान के मन्दिर के सामने ही पुरातन शिव मन्दिर है, जिसमें मैंने देखा कि पुराने जमाने में कला के प्रति स्नेह बुरीतरहउजागर हो रहा था। मन्दिर के नीचे ही अरपा व महानदी का संगम है, परन्तु वहाँ मैंने देखा कि संगम में एक बूंद भी पानी नहीं है और वहाँ 19 फरवरी से लगने वाले मेले की तैयारी चल रही थी। लोगों ने बताया कि यहाँ पर 19 फरवरी से कुम्भ मेला लगने वाला है। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि कुम्भ मेला लगने वाला है। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि कुम्भ मेले में दर्शनार्थी वहां स्नान करेंगे। संगम स्थल के बीच में ही लटेश्वरनाथ (शिव) का पुरातन मन्दिर है, उसका भी दर्शन हम लोग किये। नदी व संगम की स्थिति देखकर लगा कि नदियों को संरक्षित करने की नितान्त आवश्यकता है, नहीं तो आने वाले समय में इनका अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। वहाँ के दर्शन के बाद हम लोग चम्पारण के लिये रवाना हो गये और रात्रि 9.00 बजे चम्पारण के वल्लभाचार्य धर्मशाला पहुंच गये और वहीं पर रात्रि विश्राम वभोजन किये। सुबह 7.00 बजे तैयार होकर हम लोग वल्लभाचार्य मन्दिर, चम्पेश्वर मन्दिर, शिव मन्दिर, रामजानकी मन्दिर, विष्णु मन्दिर आदि के दर्शन किये। जो हमें काफी अच्छा लगा। वह मन्दिर एवं उसके गेट वगैरह काफी सुसज्जित शीशे व अन्य काष्ठ कलाओं का अनुपम

संग्रह है। मन्दिर बहुत दूरी में फैला हुआ है, मन्दिर के ही ऊपरी परिसर में वल्लभाचार्य जी जीवन गाथा का चित्रों के माध्यम से एवं लिखकर दर्शाया गया है, वहां बताया गया कि इनका यहीं पर अवतरण हुआ था। इस मन्दिर में चित्रकला का अद्‌भुत प्रदर्शन देखने को मिला और वहीं पर बगल में विशाल गौशाला है, जिसमें बहुत सारी गायों को रखा गया है। उसके बाद हम लोग रायपुर विधान सभा वगैरह देखने के लिये रवाना हो गये और लगभग 11.00 बजे विधानसभा पहुंच गये और वहाँ पर पंक्तिबद्ध होकर विधानसभा के अन्दर गये और वहां की सीढ़ियों पर ग्रुपिंग फोटो कराये उसके बाद वहां के विशालकाय पुस्तकालय को देखने चले। वहाँ पर कानून से सम्बन्धित एवं पंचायती राज व्यवस्था संचालन के नियम कायदे की किताबें व दैनिक समाचार पत्र सुव्यवस्थित रखे गये थे एवं काफी साफ सुथरा रखा गया था एवं अध्ययन हेतु यथास्थान सोफे व टेबल भी रखे हुये थे। पुस्तकालय का उपयोग सभी विधायक एवं मन्त्री सचिव वगैरह कानून एवं नियम की जानकारी करने हेतु करते हैं। तत्पश्चात विधानसभा भवन का अवलोकन ऊपर जाकर उसके गैलरी से किया गया। हमने देखा उसमें कहां पर कौन बैठता है और वहाँ के नियम क्या हैं। वहाँ अधिकारियों द्वारा बताया गया कि मुख्य कुर्सी– विधानसभा अध्यक्ष की व उसी के नीचे उपाध्यक्ष व उसके दादी ने तरफ सत्ता पक्ष के मुख्यमंत्री व कैबिनेट व अन्य भक्ति तथा विधायक व बायीं तरफ विपक्ष के नेता प्रतिपक्ष व विधायक तथा सामने संसदीय सचिव बैठते हैं। अध्यक्ष के आसपास के स्थान को आसन्दी कहते हैं व नीचे उपाध्यक्ष व अन्य के आसपास के स्थान को .....कहते हैं।

अगर कोई विधायक इस परिसर में विरोध प्रदर्शन करने आ जाता है तो उसे निलम्बित करने का अधिकार अध्यक्ष को है। इस प्रकार हम लोग विधानसभा की कार्यवाही की व पुस्तकालय की जानकारी प्राप्त की। विधानसभा का पूरा परिसर फूल व अन्य वानस्पतिक कलाकृतियों से पूर्ण सुसज्जित था। सामने प्रवेश करते ही अशोक स्तम्भ, फौव्वारा व गांधी जी की काली मूर्ति उसकी शोभा में चार चांद लगा रही थी। उसके बाद हम लोग पुरखौती मुक्तांगन देखने गये। वहाँ जाने पर पता चला कि यह लगभग 250 एकड़ के विशाल प्रांगण में फैला हुआ है। यहाँ पर छत्तीसगढ़ की सभी कला एवं कलाकृतियों को स्टेचु एवं चील के माध्यम से उकेरा गया है। यह इस बात का द्योतक है कि छ. ग. विविधताओं का प्रदेश है और यहां विभिन्न प्रकार की संस्कृतियाँ हैं। यहां काफी अच्छी तरह से छ. ग. के पुराने धरोहरों को भी संजोने का प्रयास किया गया है। जैसे– घोटुल प्रथा, गरबा नृत्य, करमा नृत्य, डॉडिया, सुगा नृत्य, डण्डा नृत्य आदि का चित्रांकन किया गया है जो काफी सुन्दर एवं बहुत सारी जानकारियों को एक जगह संयोजा गया है, जिससे हम लोगों को काफी जानकारी हुई।

कुल मिलाकर हमारा शैक्षणिक भ्रमण अपने उद्देश्यों को पूरा करते हुये काफी सफल रहा, जिसमें आचार्यगणों– आयदे सर, चतुर्वेदी सर, किफायत सर, महालक्ष्मी मैडम, अग्रवाल मैडम, कैथवास मेम व विशेष रूप से हमारे संरक्षक के रूप में पाण्डेय मैडम का काफी सहयोग रहा। हम सभी प्रशिक्षार्थी सभी के आभारी हैं, जो इनके मार्गदर्शन में यह कार्यक्रम काफी सफल रहा और हमें काफी कुछ सीखने को मिला और हम लोग भ्रमण व प्रबन्धन करना भी सीखे, अपने स्कूलों के भ्रमण का आयोजन ऐसे ही करेंगे।

प्रतिवेदन

शैक्षणिक भ्रमण– दिनांकः 05.02.2019 से 07.02.2019 तक

1. बारनवापारा– महासमुंद
2. घुंचापाली– बागबहरा– महासमुंद
3. गरियाबंद– घटारानी, जतमई
4. राजिम– राजीव लोचन मंदिर
5. महासमुंद– चंपारन
6. रायपुर– पुरखौती मुक्तांगन

पिछले वर्ष बी. एड. प्रथम वर्ष में प्रवेश के साथ शैक्षणिक भ्रमण के विषय में अनेक जिज्ञासाएँ एवं कल्पनाएँ घर कर चुकी थीं। द्वितीय वर्ष में आने के पश्चात् हमारी जिज्ञासाएँ और प्रबल हो चुकी थीं। तभी श्रीमती–पांडेय मैडम से भ्रमण की जानकारी प्राप्त होते ही खुशी का ठिकाना न रहा। आपसी विचार–विमर्श के बाद अन्ततः बारनवापारा, बागबहरा, घटारानी, जटमई, राजीम, चम्पारन, विधानसभा, पुरखौती मुक्तांगन भ्रमण तय हुआ।

श्रीमती पांडेय मैडम ने किफायत उल्ला सर के सहयोग से भ्रमण में आने वाले सभी प्रशिक्षार्थियों को समूहों में बाँट दिए। प्रशिक्षार्थियों को कुल आठ दलों में बाँटा गया। सभी ग्रुप में लीडर का चयन किया गया तथा उनको भ्रमण के पूर्व आवश्यक दिशा–निर्देश प्रदान किए गए। श्रीमती पांडेय मैडम के निर्देशों का कड़ाई से पालन करने का निर्देश दिया गया।

अंततः वह दिन आया जब हमें प्रस्थान होना था। हमें सुबह 7.30 बजे तक महाविद्यालय प्रांगण में उपस्थित होने की सूचना मिली। सभी प्रशिक्षार्थी उपस्थित हुए।

फिर एक बस में महिला प्रशिक्षार्थी तथा दूसरे बस में पुरूष प्रशिक्षार्थी बैठे। फिर जयकारा के साथ 8:30 बजे बस शैक्षणिक भ्रमण हेतु रवाना हुई। सर्वप्रथम हमारी बस बारनवापारा के लिए रवाना हुई।

1. बारनवापारा– दिनाँक 05 फरवरी 2019 को हमारी बस दोपहर 1:30 बजे बारनवापारा पहुँची जहां सर्वप्रथम हमने स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया। फिर बारनवापारा अभयारण्य भ्रमण हेतु अपने–अपने ग्रुप के साथ जिप्सी में रवाना हुए। जंगल में प्रवेश के साथ ही दो भालू और हिरण के झुण्ड देखे गाय, मयूरों के समूह, नाचते हुए मोर, बायसन आदि देखे। प्राकृतिक नजारों ने मंत्रमुग्ध कर दिया। यह अभयारण्य 246.66 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। इसके पश्चात् हम सभी बागबहरा के लिए प्रस्थान किए।

2. घुंचापाली बागबहरा– घुंचापाली बागबहरा पहुंचने पर सभी लोग भालू का इन्तजार करने लगे फिर मंदिर के पुजारी से पता चला कि आप लोग विलम्ब कर दिए। भालू शाम को आरती के समय प्रसाद खाने

आते हैं। हम करीब 8 बजे शाम को बागबहरा पहुंचे तब तक भालू जा चुके थे। यहाँ चंडीमाता का भव्य दिव्य मंदिर है। इस मंदिर के पास के धर्मशाला में ही सब ठहरे थे। रात्रि का भोजन यहीं हम सब लोगों ने किया। फिर निर्देश दिया गया कि सभी प्रशिक्षार्थी एवं आचार्यगण सुबह 7.30 बजे तक मंदिर प्रांगण में उपस्थित होकर आरती में शामिल होवें। सभी लोग अगले दिन माता चण्डी की आरती में शामिल होकर मधुर आरती गाए, फिर नाश्ता के उपरान्त गरियाबंद घटारानी के लिए हमारी बस प्रस्थान हुई।

3. घटारानी गरियाबंद– दिनांक 06 फरवरी 2019 को हम सभी लोग गरियाबंद घटारानी पहुंचे जहां पहाड़ी पर विराजमान देवी के दर्शन किए। प्राकृतिक छटा के आनंद लिए। इन अद्भुत नजारों के बीच सेल्फी एवं फोटोग्राफी भी खूब हुई। फिर दोपहर का भोजन किए। भोजनोपरांत हमारी बस जटमई के लिए रवाना हुई। जटमई में माताराणी के दर्शन किए। प्राकृतिक दृश्यों का भरपूर आनंद लिए। फोटोसेशन हुआ। फिर राजीव लोचन मंदिर दर्शन हेतु हमारी गाड़ी चली। बस के अंदर गीत, नृत्य का उत्साहवर्धक प्रोग्राम चलता रहा। श्री किफायत सर जी गाने पर सुंदर ढ़ोलक बजाते हुए संगत करते गए। रास्ते की दूरी का पता ही नहीं चला और हम राजीम पहुंच गए।

4. राजीव लोचन मंदिर– राजीव लोचन मंदिर के दर्शन किए। हमें पता चला कि भगवान का एक दिन में तीन बार श्रृंगार होता है। सुबह बालरूप का, दोपहर यौवन रूप का, शाम वृद्ध रूप का। फिर हमारी बस चम्पारन के लिए रवाना हुई।

5. चम्पारन– चम्पारन में रात्रि भोजनोपरान्त अन्त्याक्षरी का कार्यक्रम लगभग 10.00 बजे से 11.00 बजे रात्रि में हमारे आचार्यगणों की उपस्थिति में हुई। जिसमें आयदे सर, चतुर्वेदी सर, किफायत सर जी ने मधुर गायन से महफिल में चार चाँद लगाये। प्रशिक्षार्थियों ने भी एक से बढ़कर एक गानों के द्वारा समा बाँधा। फिर सभी अपने–अपने कक्ष में चले गए। सुबह 7.30 बजे तक प्रांगण में उपस्थित होने का निर्देश मिला। फिर सुबह 7.30 बजे चम्पारन में ही श्री वल्लभाचार्य के मंदिर पहुँचे। जहाँ इनके जन्म से लेकर निर्वाण प्राप्ति तक की जीवनी चित्रित है। यहाँ चम्पेश्वर, भोलेनाथ की पुरातन स्थली है। जहाँ वे जगतमाता पार्वती, श्री गणेश जी के साथ विराजमान हैं। यह एक सुखद संयोग था कि वैष्णव मार्ग में पुष्टीमार्ग के प्रवर्तक का प्रागट्य आदि शक्ति शिवशंकर महादेव जी प्रथम वैष्णव माने जाते हैं, के समक्ष हुआ। इस घटना के द्वारा सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने यह सिद्ध किया कि शिव तथा विष्णु आदि शक्ति के दो रूप हैं तथा देश का एकमात्र शैव तथा वैष्णव संयुक्त तीर्थ स्थली है।

6. विधानसभा– हमारी गाड़ी रायपुर विधानसभा के लिए रवाना हुई। बस में ही हम सबने स्वल्पाहार किया। फिर विधानसभा पहुंचे। यहाँ हम सब यूनिफार्म में थे। हम पंक्तिबद्ध होकर प्रवेश करते गए। हमने सर्वप्रथम यहाँ का पुस्तकालय देखा, विधानसभा कक्ष देखे, जहाँ विधानसभा अध्यक्ष का स्थान, नेता प्रतिपक्ष, विपक्ष, मंत्रियों के बैठने के स्थान देखे। फिर हम सभी पंक्तिबद्ध हो प्रांगण से निकले। तत्पश्चात् गाड़ी नया रायपुर के लिए रवाना हुई।

7. रामजी मंदिर– नया रायपुर में दोपहर का भोजन किए फिर रामजी मंदिर में भगवान श्रीराम, सीता

तथा हनुमान जी के दर्शन किए। दोपहर आरती में शामिल हुए। फिर पुरखौती मुक्तांगन गए। जहाँ बस्तर आर्ट के दर्शन हुए। यहाँ की कलाकृतियों से सभी मंत्रमुग्ध हो गए। इसके बाद बिलासपुर के लिए रवाना हुए, रास्ते में चाय पिए। फिर बस में गीत, नृत्य, वादन का मजा लेते हुए बिलासपुर पहुँचे। फिर सभी अपने–अपने गृह प्रस्थान किए।

मार्गदर्शक आचार्यगण– श्रीमती नलिनी पाण्डेय, श्रीमती रमाकान्ति साहू, श्रीमती अंजना अग्रवाल, श्री संजय मनोहर आयदे, श्री दुष्यन्त चतुर्वेदी, श्री किफायत उल्ला।

विश्राम स्थल– बागबहरा, चम्पारन।

श्रीमती लक्ष्मी साहू
बी.एड. द्वितीय वर्ष

जिंदगी क्या है..?

रात के अंधेरों से
दुनिया के बसेरों से
गमों के इन डेरों से
पूछता हूँ जिंदगी क्या है?
कभी चांदनी कभी रागिनी
कभी गम की संगिनी
सौ–सौ रूप बदलती ये जिंदगी
कभी हार में कभी जीत में बदलती ये जिंदगी
न जाने किस क्षण में फिसलती ये जिंदगी
कभी खेतों फुहारों से कभी मिलती नजारों से
कभी जूझती मझधारों से पूछता हूँ, जिंदगी क्या है?
कभी प्यार हुई कभी सार हुई
कभी सुरों के तार हुई
अनकही अनबुझी पहेली ये जिंदगी
यकभी हाथ में तो कभी राख में पहेली ये जिंदगी,
मौत से भी बेवफा ये जिंदगी
कभी खड़े पहाड़ों से, कभी उजड़ती कभी जाड़ों से
पूछता हूँ जिंदगी क्या है?

योगेश कुमार यादव
बी. एड (द्वितीय वर्ष)

क्यूंकि मैं वक्त हूँ

कभी रेशम सा मुलायम,
कभी पत्थर सा सख्त हूँ।
मैं कभी ठहरता नहीं,
क्यूंकि मैं वक्त हूँ।।
जिसने मुझे पहचाना, वो निखर गया।
जिसने मुझे नहीं पहचाना, वो पत्तों की तरह बिखर गया।।
मैं ही हर इंसान के बाहर, मैं ही सबके अंदर हूँ।
मैं ही चाणक्य, मैं ही सिकंदर हूँ।
मैं ही अच्छाई और बुराई के रूप में हूँ।
वृक्ष की शीतल छाया और धूप हूं भी।
मैं ही दिवस, मैं ही अवसान हूं।।
मैं ही जिंदगी, मैं ही श्मशान हूँ।
मैं बचपन, मैं बुढ़ापा, मै ही जवानी हूँ।
मैं गीत, मैं गजल, मैं कविता
मैं ही कहानी हूँ।।
मैं सफलता, असफलता भाग्य का विधाता हूँ।
सुख में, दुख में, मिलन में, जुदाई में,
हर शख्स को मैं ही आजमाता हूँ।
मैं ही धोखा, विश्वास, आशा और निराशा हूँ
मैं अपनों के लिए वक्त हूं, बेगानों के लिए तमाशा हूँ
मैं ही तुम्हारे हार में, जीत में, बेवफाई में प्रीत में हूं
मेरी ही लेखनी को हर कोई बांचता है
इशारा मैं ही करता हूँ,
इंसान अपने तरीके से
नाचता है !!!!
कभी रेशम सा.....क्युंकि मैं वक्त हूँ

श्रीमती पूर्णिमा गोस्वामी
बी. एड. द्वितीय वर्ष

एक जख्मी सैनिक अपने साथी से कहता है

साथी घर जाकर मत कहना घर जाकर बतला
देना।
यदि हाल मेरी माता पूछें तो जलता दीप बुझा
देना।
इतने पर भी वो ना समझे तो, दो आँसू छलका
देना।
यदि हाल मेरी बहना पूछे तो, सूनी कलाई दिखा
देना।
इतने पर भी वो ना समझे तो, कलाई अपनी बढ़ा
देना।
यदि हाल मेरी पत्नी पूछे तो, मस्तक तुम झुका
देना।
इतने पर भी वो ना समझे तो माँग का सिन्दूर मिटा
देना।
यदि हाल मेरे पापा पूछें तो हाथों को सहला
देना।
इतने पर भी वो ना समझें, तो लाठी तोड़ दिखा
देना
यदि हाल मेरा बेटा पूछे तो सर उसका सहला
देना।
इतने पर भी वो ना समझे तो सीने से उसको लगा
देना।
यदि हाल मेरा भाई पूछे तो, खाली राह दिखा
देना।
इतने पर भी वो ना समझें तो सैनिक धर्म बता
देना।
जय हिन्द

हर्ष लाल पटेल
बी. एड. द्वितीय वर्ष

पुलवामा में आतंकी हमले में शहीद हुए जवानों को समर्पित

आसमान भी रोया था,
धरती भी थर्रायी थी।
किसी को न मालूम था यारों
किस घड़ी मौत ये आयी थी।।

माँ का एकटक चेहरा था,
आँखों में बहते आँसू थे।
पुत्र थे उनको शहीद हुए,
जो मातृभूमि के नाते थे।।

पत्नी का बिलखना–चिल्लाना, तड़पना
सीने में तीर चुभाता था।
एक मात्र सहारा था उनका
वह भारत माँ का बेटा था।

बेटे के सिर से हाथ गया,
चलना वह जिनसे सीखा था।
कंधों का भी अब राज गया,
वह बैठ जहाँ जग देखा था।

माँ की सूनी गोद हुई,
पत्नी का भी सिन्दूर मिटा।
पिता के दिल में आह उठी,
पुत्र का हाथ भी छूट गया।।

गर्व है इन परिवारों को
अपनी उन संतानों पर।
मातृभूमि के लिये समर्पित,
हुये वीर बलिदानों पर।।

नेताओं क्यों बैठे हो,
बदला लो गद्दारों से।
गर खून में गर्मी बाकी है,
सर बिछा दो तुम तलवारों से।।

बदला लो इस बार का तुम
उन वीरों का सम्मान रखो।
माता–पिता और पुत्र के सर,
मातृभक्ति का ताज रखो।।

संकलनकर्ता
दिनेश कुमार सिंह
बी. एड. द्वितीय वर्ष

सफलता की ओर पहला कदम

सफल होना प्रत्येक व्यक्ति की चाह होती है। व्यक्ति के लिए यह महत्वपूर्ण नहीं होता है कि सफलता का स्वरूप छोटा है या बड़ा है? उसके लिए महत्वपूर्ण तो सफल होना है। छोटी–छोटी उपलब्धियाँ ही व्यक्ति को अंत में सफल बनाती हैं।

मेरे अभी तक के जीवन सफर में किसी प्रकार की बड़ी सफलता का नाम नहीं था, लेकिन सफलता की ओर मेरा पहला कदम उस रूप में मिला, जो मेरे जीवन की पहली व सबसे बड़ी उपलब्धि से कम नहीं है। वह उपलब्धि है– केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा में योग्यता प्राप्त करना।

केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा (सीटेट) राष्ट्रीय स्तर केन्द्रीय विद्यालयों में शिक्षक बनने हेतु प्राथमिक (कक्षा 1 से 5 तक) एवं पूर्व माध्यमिक (कक्षा 6 से 8 तक) स्तरों के लिए योग्यता प्रमाण–पत्र हासिल करने वाली परीक्षा होती है। चूंकि इस परीक्षा में पात्रता हासिल किये बिना कोई भी व्यक्ति प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक स्तर पर केन्द्रीय विद्यालयों में शिक्षक नहीं बन सकता है। इसलिए जो केन्द्रीय विद्यालय में शिक्षक बनने की चाहत रखते हैं उसके लिए यह पात्रता प्रमाण पत्र हासिल करना आवश्यक है।

चूंकि मैं भी एक शिक्षक बनना चाहता हूँ और वर्तमान में बी. एड. अंतिम वर्ष का प्रशिक्षार्थी हूं। अतः मेरे लिए भी यह पात्रता (योग्यता) हासिल करना आवश्यक है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए मैंने सीटेट के लिए आवेदन किया। इस परीक्षा में पात्रता हासिल करने के लिए विज्ञापन जारी होने के साथ ही मैंने विचार किया कि यह पात्रता मुझे आज नहीं तो कल प्राप्त करना ही है, तो क्यों न इस बार ही प्रयास कर लिया जाये। बाकी सफल होना या न होना बाद की बात है। फिर क्या था इंटर्नशिप के दौरान ही विद्यालय एवं अपने अन्य कामों के साथ–साथ सीटेट की तैयारी में लग गया। अपनी क्षमता के अनुसार मिलने वाले समय का सदुपयोग करने लगा। दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ तो नहीं, परन्तु "प्रयास तो करना ही है।" इन्हीं भावना के साथ तैयारी करता रहा।

अब मैं अपना परिणाम परीक्षा के दोनों स्तरों में पात्रता का मार्क (चिन्ह) देखकर अत्यन्त प्रसन्नता और संतुष्टि का अनुभव कर रहा हूँ। यह उपलब्धि मेरे लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है, क्योंकि यह मेरे बी. एड. अंतिम वर्ष के परीक्षा परिणाम के पूर्व ही मिल गया और यह उपलब्धि मैंने प्रथम प्रयास में ही हासिल कर लिया है। मैं अपने आप को खुशनसीब मानता हूँ कि मैंने बी. एड. की डिग्री के मिलने के पूर्व ही केन्द्रीय विद्यालय के दोनों स्तर के शिक्षक बनने की योग्यता का प्रमाण–पत्र प्राप्त कर लिया हूँ।

जब यह सुखद परिणाम मुझे मिला, तब मैंने घर–परिवार, रिश्तेदारों, दोस्तों और सहपाठियों को इसकी सूचना दी। सूचना देते समय मुझे अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा था। सूचना के मिलते ही परिवारजनों, रिश्तेदारों, दोस्तों और सहपाठियों ने भी प्रसन्नता व्यक्त किये और बधाईयाँ एवं शुभकामनाएँ दिये। उनके द्वारा दिये गये बधाई संदेश और शुभकामनाओं ने मुझे और भी आत्मविश्वास से भर दिया।

आज मैं अपने जीवन की सबसे बड़ी और पहली उपलब्धि को प्राप्त कर अत्यन्त गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने मुझे शिक्षक बनने की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक संकेत को इस परिणाम के रूप में प्रस्तुत किया।

सिक्छित बन संगी

पढ़–लिख के सिक्छित बन संगी, तब जिनगी म नइ आही तंगी।
दाई–ददा पढ़ाथें तोला, पेर के अपन जांगर।
खेतवाही ल जाथें जोते बर, धर के नांगर।
रूखा–सूखा रोटी खाथें, जतरी के पिसान के।
कनकी–कुटकी चाउर खाथें बेलन के पिसान के।
सुखी रइही बेटा कहिके, सहत रहिथें पीरा।
जिनगी म अब्बड़ नांव कमाके, बनही बेटा हीरा।
साहब बनके कार म आही, रस्ता जोहत रहिथें।
जब आथे बेटा बन–ठन के, नइ रहे पुछारी वोकर।
सहरौती ले आये बेटा पूछे ले कहिथे, कोन ए नौकर।
सिक्छित करके, पढ़ा–लिखा के बनाथे मालामाल।
बुढ़ाती म ए पालन करता, बन जाथे जीव जंजाल।
डिंगावत गिर जाथे, जैसन खरे कुसियार ह।
रहिबे तैं हुसियार कतको, नइ रहे तोर गुमान ह।
जिनगी ल सुधार थोरकिन, पढ़–लिख डार।
सुखी रइही परिवार, गुन गाही जग–संसार।
कमा–कमा के जांगर सिरागे, बेटा खातिर बाप के।
पिंजरा कस मैना रखथे अउ देथे खाना खाप के।

धर्मेन्द्र कुमार सिंगरौल
बी. एड. द्वितीय वर्ष

* नारी तेरी नारीत्व *

नारी तेरी नारीत्व नहीं किसी की मोहताज
तू ही दुर्गा तू ही काली
तू ही लक्ष्मी तू ही सरस्वती
तू ही माया तू महामाया
तुझमें यह सृष्टि समाया
तुझे कोई समझ न पाया,
नर देव दानव और गन्धर्व
सबको चाहिए तेरा कर
फिर तुम क्यूं इतना लचर
नारी तेरी नारीत्व नहीं किसी का मोहताज।
तू माँ है तू ही बहन
तू ही पत्नी तू ही प्रेमिका
हर सफल पुरूष के पीछे
तेरी वाणी और वरद हस्त है
फिर तू क्यूं इतना अस्त–व्यस्त है
तू अपनी शक्ति को पहचान
लक्ष्मी क्या करे तेरा बखान
नारी तेरी नारीत्व नहीं किसी का मोहताज।
हर युद्ध में तूने हाथ बटाया
धर्म–युद्ध हो या गृहयुद्ध
स्वतंत्रता संग्राम हो या राजपाठ कि हो बात
अच्छे–अच्छों को तूने दिया मात
कहो तो गिना दूं मैं सैकड़ों नाम
फिर क्यूं हो तुम बेकाम
नारी तेरी नारीत्व नहीं किसी का मोहताज।
तुझमें दृढ़ता तुझमें वीरता तू है दयावान
तेरी हृदय बहुत बड़ी है
तू करे सबका कल्याण
पिता पुत्र हो या पति
सभी के लिए है तू मूल्यवान
जिस घर में तू नहीं, वह घर है नरक समान
नारी तेरी नारीत्व नहीं किसी का मोहताज।
तू आधा नहीं अधूरा नहीं
तेरे बिना ए जगत पूरा नहीं
तेरे बिना बेकार है यह ब्रह्माण्ड
नारी तू जाग अपनी ताकत पहचान
न कर तू किसी से आशा
दिखा दे तू अपना चमत्कार
नारी तेरी नारीत्व नहीं किसी का मोहताज।
नारी तू अब जाग, अपनी ताकत पहचान
न करे तू किसी का अनुकरण
दे तू सबको अपना शरण
सभी गुणों में अग्रणी है तू
तू ही जननी तू ही करनी
न कर तू किसी से स्पर्धा
"लक्ष्मी" कितना उठाए पर्दा
नारी तेरी नारीत्व नहीं किसी का मोहताज।

– श्रीमती लक्ष्मी साहू
बी. एड. द्वितीय वर्ष

Books are Our true Friends

YOGESH KUMAR YADAV
B.Ed (II Year)

"Books are the treasured wealth of the world and the fit inheritance of generations and nations", says Thoreau. They make our life rich. They leave a deep and ever lasting impression in our minds. They provide us an insight into the practial aspect of life. They bring us in contact with the great minds of the world. Somebooks contain the greatest philosophy of life. They teach us the value of hard work and honesty. They teach us that life is action and not only contemplation. They inspire us to march a head towards our goal with single minded devotion. We find great pleasure and enjoyment in them. The habit of reading good books should be cultivated and encuraged since childhood.

A good book is the best of friends, for today and for ever. But a bad book misleads and degrades. So we must read good books. Richard Steele says.

"Reading is to the mind what exercise is to the body."

Key to Success

1. Disicipline, Determination and Dedication with healthy spirit leads to success.
2. Fix up the achievable target with positive attitude.
3. Try and Try achievable target with Positive attitude.
4. Fight with the circumstances you will certainly win.
5. Choose the right way you will never be wrong.
6. Always keep smiling as happiness is the best medicine.
7. Do not worry be happy you will win.
8. Dream for Success makes impossible thing possible.
9. Have faith in God He will always favour you.
10. The failure proves the effort behind success was not proper and sufficent one.

शिक्षा का बदलता हुआ स्वरूप– एक दृष्टि

"सा विद्या या विमुक्तये" के इस कथन के अनुरूप शिक्षा वह साधन है जो व्यक्ति को अज्ञान व दमन से मुक्त करने में पूर्ण रूप से समर्थ है। शिक्षा की इस परिकल्पना के अंतर्गत हर व्यक्ति को लिखना–पढ़ना तो अनिवार्य रूप से आना चाहिए। क्योंकि वर्तमान में इसे ही सीखने का प्रमुख माध्यम माना जाता है। अतः शिक्षा का अर्थ है विनयी बनना, विनीत होना, संवेदनशील बनना, सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, नैतिक दृष्टि से उपयोगी नागरिक बनना, आर्थिक दृष्टि से भी आत्मनिर्भर नागरिक बनना है, के साथ–साथ शिक्षा के उद्देश्यों में प्रथम स्थान बालक का सर्वांगीण विकास, उसके सोचने–विचारने का क्षेत्र व्यापक हो इसके लिए मानवीय विकास के आधार पर ही शिक्षा की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जा सकता है।

मानवीय विकास की आधारशिला उसका मन और शरीर है इसलिए शिक्षा ही मनुष्य का शारीरिक व मानसिक विकास कर सकता है। शिक्षा द्वारा ही उदारता, बन्धुत्व, कुशल नागरिकता, सद्भावना, सहनशीलता और सहयोग की भावनाएं विकसित की जा सकती हैं। लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में तो सभी वर्गों के व्यक्तियों के लिए समान परिस्थितियों में समान व्यक्तियों के द्वारा समान व्यवहार करके ही विकास की स्थिति उत्पन्न की जा सकती है। अतः आवश्यक है कि विद्यालयों में जाति, धर्म, वर्ग, भाषा एवं प्रादेशिकता आदि का भेद किये बिना सभी बालकों को शिक्षा ग्रहण करने एवं विकास करने के समान अवसर, समान सुविधायें एवं समान अधिकार दिये जायें। किसी बालक को यह अनुभव न होने दिया जाये कि वह अन्य बालकों की अपेक्षा, जाति, भाषा, धर्म, आर्थिक दृष्टि से हीन है। विद्यालयों में इसी दृष्टिकोण वाली व्यवस्था एवं वातावरण दिया जाना आवश्यक है।

शिक्षा के लोकव्यापीकरण ई. पी. डी. पी. के माध्यम से प्रौढ़ शिक्षा, औपचारिकेत्तर शिक्षा, राजीव गांधी–शिक्षा मिशन, सर्व शिक्षा अभियान, सतत् साक्षरता–मिशन, समतुल्यता शिक्षा, समावेशी शिक्षा, बालिकाओं की प्रारंभिक शिक्षा, कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय, नवाचारी शिक्षा योजना, कम्प्यूटर शिक्षा, स्कूल पूर्व बच्चों की शिक्षा इस योजना के तहत 3 से 6 वर्ष आयु वर्ग के समस्त बच्चों को आंगनबाड़ी केन्द्रों, शिशु शिक्षा केन्द्रों के माध्यम से औपचारिक शाला में जाने से पूर्व खेल–खेल में शिक्षा दी जाती है। उत्तर साक्षरता–नवसाक्षर उत्तर साक्षरता के अन्तर्गत जो छात्रों ने पढ़ा है उसे भूले न और उसे सतत् शिक्षा के माध्यम से जीवन को बेहतर बनाने तथा गुणवत्ता युक्त जीवन पर्यन्त सीखने की प्रक्रिया, जिसे बेरोजगार लोगों को जीविकोपार्जन के लिए आय अर्जित करने तथा मानसिक रूप से उन्नति के लिए तैयार कर भविष्य की समस्याओं का निदान कर सके।

सूचना खिड़की के माध्यम से शासन की सभी योजनाओं की जानकारी ग्राम स्तर पर सतत्

शिक्षा केन्द्र पर पुस्तकालय के माध्यम से जहाँ लगभग 540 प्रकार की पुस्तकें उपलब्ध करायी जायेगी, जिसके द्वारा व्यक्तिगत अभिरुचि, आय अर्जन हेतु सूचना खिड़की सहयोग प्रदान करेगी। यह कार्य सूक्ष्म नियोजन सतत् शिक्षा के माध्यम से प्रेरक एवं सहायक प्रेरक ग्राम स्तर परकार्य करते हैं। शिक्षा का आशय सीखे हुए ज्ञान से बदली हुई परिस्थितियों में समायोजन करना ही शिक्षा है। शिक्षा कामाध्यम मातृभाषा हो जब तक बालक एक भाषा पर अधिकार न प्राप्त कर ले तब तक दूसरी भाषा का अध्ययन–अध्यापन का बोझ न डाला जाये, भाषा शिक्षण के उद्देश्यों में एक अभिव्यक्ति उद्देश्य भी है। ऐसा मानने के पर्याप्त आधार हैं कि बालक मातृभाषा में ही सर्वाधिक अच्छी अभिव्यक्ति कर सकता है। प्राथमिक विद्यालय में बालक को 5 वर्ष की आयु पूरी करने के पूर्व प्रवेश नहीं दिया जाना चाहिए क्योंकि इस उम्र तक बालक को खेलने–कूदने के पर्याप्त अवसर मिलने चाहिए। इस कच्ची उम्र में उसे विद्यालय में प्रवेश दिलाकर उसका बचपन नहीं छीनना चाहिए।

गांधी जी जब शिक्षा की बात करते थे तो उनका अर्थ केवल साक्षरता तक सीमित नहीं था, वे पूरी प्रकृति और परिवर्तन की शिक्षा चाहते थे। वे शिक्षा को सिर्फ ज्ञान मार्ग ही नहीं बल्कि कर्म मार्ग भी मानते थे। गांधी जी ने अपनी पुस्तक में हिन्द स्वराज में स्पष्ट रूप से कहा है कि अगर शिक्षा या एक तालीम का अर्थ सिर्फ अक्षर ज्ञान ही हो तो वह शिक्षा न होकर साधन जैसी चीज हुई। उसका अच्छा उपयोग भी हो सकता है और बुरा उपयोग भी। यह सच है कि लोगों को लिखना–पढ़ना और हिसाब करना सिखाना बुनियादी या प्राथमिक आवश्यकता है और इसकी पूर्ति शिक्षा द्वारा संभव है।

शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान, दान और कौशल प्राप्ति ही है किंतु उससे सामाजिक आदर्श, निष्ठा, समन्वय कृति और शील सम्पन्नता पैदा होनी चाहिए। साक्षरता के विभिन्न अभियानों में जीवन जीने की शिक्षा घर तथा परिवार में विभिन्न बीमारियों और रोगों के विरुद्ध चेतना की तैयारी, जीविका की तैयारी, अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने की तैयारी है। लेकिन यदि यह साक्षरता उद्देश्यविहीन रहती है तो समाज के लिए घातक भी हो सकती है, गाँधी जी चाहते थे कि एक विशाल जनसंख्या वाले समाज के साधन, समय और शक्ति का सही इस्तेमाल हो और इसके लिए शिक्षा ज्ञान के साथ–साथ कौशल और मूल्य का भी आधार बने। इस विकासशील विश्व में शिक्षा सबके लिए हो और सब शिक्षा के लिए हो। शिक्षा का कोई भी अभियान हो, शिक्षा के क्षेत्र में नित नये प्रयोग किये जा रहे हैं और आवश्यक भी है, लेकिन शिक्षा, शिक्षा के लिए न होकर जीवनोन्मुखी हो और रोजगारमूलक हो, इस बात का ध्यान रखकर प्रयोग किये जाने चाहिए। तभी शिक्षा को सही आकार व दिशा दी जा सकेगी। बुनियादी शिक्षा को मस्तिष्क में रखकर काम करना होगा।

आज लाभ अर्जित करने की दृष्टि से अल्टरनेटिव एजूकेशनल की बात जोरों से चल पड़ी है, इस दिशा में नये–नये प्रयोग किये जा रहे हैं। ओपन पाठ्यक्रम, पत्राचार पाठ्यक्रम के साथ–साथ अन्य विभिन्न कार्यक्रमों एवं अभियानों के नाम पर काफी धन व्यय किया जा रहा है। वैकल्पिक शिक्षा का कोई भी रूप हो, यह देखना आवश्यक है कि व्यक्ति की, समाज की, राष्ट्र की और आगे चलकर विश्व की आवश्यकताओं की पूर्ति करें। उस हद तक जिस हद तक कि उसे करना चाहिए।

अल्टरनेटिव एजूकेशन का जो भी रूप बनाया जाए उसे पूर्व निर्धारित कसौटियों पर अच्छी तरह परखा जाना चाहिए। कसौटियां भी स्थायी नहीं होती, बदलती हैं, क्योंकि समाज बदलता है। परिवर्तन के लिए परिवर्तन करना कोई अर्थ नहीं रखता। आधुनिक युग की आवश्यकताओं की पूर्ति करना और आज के मनुष्य की सीमाओं का ध्यान रखते हुए शिक्षा पद्धति को बदलना महत्वपूर्ण है। समाज कैसे बदलता है? उसमें बदलाव के बावजूद निरन्तरता बनी रहती है। ये सारी बातें ध्यान में रखना आवश्यक है तभी नई पद्धति प्रचलित हो सकती है, लोकप्रिय बन सकती है, अपना प्रयोजन पूरा कर सकती है।

प्रत्येक जीवंत प्राणी अपने स्वरूप को पूर्णता तक पहुँचाने के लिए विकास करता है। वनस्पति और मनुष्येत्तर प्राणियों का अध्ययन हमें इसी सत्य का दर्शन कराता है, प्रत्येक बालक में बीज में पूर्ण मनुष्य विद्यमान रहता है। इस भावी मानव को अपनी सम्पूर्णता के साथ प्रकट करने का पुरुषार्थ ही विकास की क्रिया है। प्रत्येक बीज एक–दूसरे से भिन्न होता है। अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति का भविष्य एक–दूसरे से भिन्न होता है। विकास की दिशाओं और रूपों में भिन्नता है। अधिक से अधिक हुआ तो विकास की दिशा को देखकर हम विकास की पोषक वस्तु को सामने रख देते हैं और अवरोधक को पीछे हटा देते हैं ऐसा भी होता है कि जिसे हम अवरोधक कहते हैं वह भी विकास के मार्ग में अपने अवरोधक स्वरूप की वजह से बहुधा विकास में सहयोगी बन जाता है।

आज गुणवत्ता का सार्वजनिक महत्व है और प्रतिस्पर्धा का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। हर व्यक्ति के लिए प्रतिस्पर्धा में सम्मिलित होने के लिए क्षेत्र खुला है। आज व्यवहार में देखा जाता है कि शिक्षा की ललक हर व्यक्ति में बढ़ी है और हर व्यक्ति अपने बच्चे को बी. ए., एम. ए. पास देखना चाहता है इसमें संस्थाओं में विद्यार्थियों की संख्या में कई गुना वृद्धि हुई है तथा आज लोक कल्याणकारी राज्य व्यवस्था में उन्हें प्रवेश देने से मना नहीं किया जा सकता। बड़ी–बड़ी कक्षाओं में विद्यार्थियों पर शिक्षक वैयक्तिक ध्यान नहीं दे पाता है। शिक्षा व्यवस्था को कुछ ऐसा उपाय निकालना होगा जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी का शिक्षक से निजी सम्पर्क बन सके तथा शिक्षक अपने विद्यार्थियों में वांछित गुणों का विकास कर सके तथा उपलब्ध सीमित साधनों से कम से कम लागत पर प्रसन्नतापूर्वक वातावरण में सही विषयों की उपयुक्त समय पर शिक्षा प्राप्त हो। शेक्सपियर ने कहा था गुलाब को किसी भी नाम से पुकारें, देगा वह सुगंध ही। इसी प्रकार शिक्षा के जो भी समय–समय पर कार्यक्रम या अभियान चलाये जाते हैं सभी का एक ही उद्देश्य है, अच्छे नागरिक निर्माण करना।

प्राचीन भारत में शिक्षा, धर्म आधारित थी और उसमें सांसारिक कम और आध्यात्मिक अधिक थी। गुरू की त्याग भावना, शिष्य की सेवाभावना और समाज का सहयोग एवं कर्तव्य भावना शिक्षा सम्बन्धी सभी समस्याओं को निपटा लेती थी, त्याग सेवा और सहयोग, कर्तव्य आदि मूल्य शिक्षा द्वारा परोक्ष रूपेण पनपते रहते थे। मैकाले की फिल्ट्रेशन थ्योरी में शिक्षा समस्त राष्ट्र वासियों के लिए नहीं थी उस शिक्षा पद्धति में वांछित मूल्यों की अपेक्षा निरर्थक ही थी।

स्वतंत्रता प्राप्तिके बाद आचार्य विनोबा भावे ने कहा था "मैं मानता हूं सरकार बदलती है तो मान्यताएं बदलती हैं सो शिक्षा भी बदलनी चाहिए। अनेक शिक्षा समितियों को सिफारिशों के बावजूद क्या हम शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन ला पाये हैं। 1952–53 को माध्यमिक शिक्षा समिति (मुदलियार समिति) ने बहुद्देशीय शालाओं की स्थापना की सिफारिश की और ऐसी शालायें खुल भी गईं एक प्रमुख शिक्षाविद् ने कहा था, "शिक्षा बहुद्देशीय कैसे हो सकती है? शिक्षा का तो केवल एक ही उद्देश्य हो सकता है। वह सुयोग्य नागिरिक गढ़ना समय–समय पर शिक्षा समितियों ने भी इसी कड़ी में सुझाव दिये हैं। जिनमें मूलभूत मूल्यों के क्षरण और समाज में बढ़ती सनक पर चिंता दर्शाते हुए पाठ्यक्रम का पुनः निर्धारण कर सामाजिक व नैतिक मूल्यों के पनपाने में शिक्षा को प्रभावी साधन बनाने पर जोर दिया गया है। आज जरूरत है सच्चाई, ईमानदारी, निष्ठा, करुणा, दया, परोपकार, अहिंसा, प्रेम, त्याग, नम्रता आदि मूल्य की जो अमिट है। ये सकारात्मक है और सभी जगह सभी युग में पूज्य हैं। इसके विपरीत घृणा, अनादर, स्वार्थ, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, निर्दयता आदि जो निन्दनीय है। जीवन को सुखद बनाने हेतु सकारात्मक मूल्य पनपाने चाहिए और नकारात्मक मूल्य मिटाने चाहिए। कोई भी समझदार व्यक्ति इस तथ्य को नहीं नकारेगा। आज की पीढ़ी को मात्र नागरिक मूल्यों का ही पालन करने केलिए तैयार करें और वह भी उनका स्वयं का ही हित बताते हुए। परोक्ष रूपेण समस्त समाज ही लाभान्वित होगा।

आज की पीढ़ी बावला भी है और बहस प्रिय भी, उन्हें बतायें कि जितना अधिक वे मुँह को काम में लेंगे, उतना ही कम उनका हृदय साथ देगा। योगी प्राप्त करते हैं स्वास्थ्य धैर्य व आयु अपने मौन से। अपने ही स्वास्थ्य के लिए उन्हें बोलना कम, सुनना अधिक चाहिए। दूसरों को भी अपना दृष्टिकोण रखने का अवसर दें, सहनशीलता का परिचय दें। हो सकता है सामने वाला पक्ष ही सही हो। अपनी अटल राय को परिशोधित करने का अवसर लें। अवांछित मूल्यों में अदम्य साहस दर्शाने की जगह अपनी गलतियों को स्वीकारने और सुधारने में साहस दर्शायें, ऐसा करना व्यक्तित्व में निखार लाना होगा।

स्मरण रखें, मूल्य भाषण से नहीं व्यवहार से संप्रेषित होते हैं। श्री तिलक के अनुसार रत्तीभर व्यवहार करना उपदेश से अधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षा से जुड़े सभी के व्यवहार में वही उतारना चाहते हैं जिसे वे प्रचारित करना चाहते हैं। प्रकृति और प्रकृतियों में वाणी और कर्म में एकरूपता हो यह तथ्य सभी स्तरों पर प्राथमिक, माध्यमिक, यूनिवर्सिटी तथा अन्य क्षेत्रों में भी लागू होता है। प्राथमिक स्तर पर कथा–कहानी की सार्थकता को भी नकारा नहीं जा सकता, इसलिए दूसरों के प्रति वैसा ही करो जैसा दूसरों को अपने प्रति करने देना चाहते हो। एडिश व्हार्टन ने कितने सुन्दर शब्दों में कहा है– प्रकाश फैलाने के दो मार्ग हैं–

"मोमबत्ती बनो या इसे प्रतिबिम्बित करने वाला दर्पण। मेरे लेख में आपने जो पसंद किया वह आपका है जो कमी रही वह मेरी रही।

योगेश कुमार यादव
बी. एड. (द्वितीय वर्ष)

रचनात्मक कार्यों के लिए संसाधनों एवं अभिप्रेरणा की आवश्यकता

मानव विकास का इतिहास संसाधनों की आवश्यकता एवं रचनात्मकता (सृजनशीलता) का इतिहास है। "आवश्यकता अविष्कार की जननी है" उसकी पूर्ति पुनः हमारी आवश्यकता एवं गुणवत्ता में वृद्धि का कारण है। आवश्यकता एवं सृजनशीलता साथ–साथ चलने वाली सतत् प्रक्रिया है जिनमें चोली दामन सा साथ है। हमारे पूर्वजों को सबसे पहले भोजन की आवश्यकता हुई जिसे वे कच्चा मांस एवं फल खाकर पूरा करते थे। समय परिस्थितियाँ, मांग एवं पूर्ति सृजनशीलता के स्त्रोत हैं जिसे अनेक संसाधनों की सहायता से हम पूरा करते हैं।

हमारी प्रथम आवश्यकता भोजन, वस्त्र एवं मकान है जिसे पूर्ण करने के अनेक स्त्रोत, साधन या माध्यम है। समय के विकास के साथ–साथ हमारी मांग एवं पूर्ति में गुणवत्ता का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। अभिप्रेरणा एक प्रकार की बाह्य या आंतरिक शक्ति है अथवा अवस्थाएँ हैं, जो क्रिया को नकारात्मक अथवा सकारात्मक रूप प्रदान करने में अहम भूमिका अदा करती है। प्रेरक (Motivate) उद्दीपन (Stimulus) से भिन्न होता है क्योंकि वह उत्तेजना के प्रकट होने से पहले से ही उपस्थित होता है। यदि आतंरिक अभिप्रेरणा न हो तो बाह्य उद्दीपन कितना भी हो पर अनुक्रिया उत्पन्न नहीं कर सकता जो सृजनशीलता के लिए अति आवश्यक है। अभिप्रेरणा एक प्रकार की शक्ति है जो मानव में अध्ययन तथा अन्य कार्यों को करने का जोश तथा रुचि उत्पन्न करती है। व्यक्ति जो भी कार्य करता है उसमें किसी न किसी प्रकार की अभिप्रेरणा की भूमिका निहित होती है।

आयु सृजनशीलता में बाधक नहीं है। धर्म, कला, विज्ञान एवं राजनीति के क्षेत्र में अनेक उपलब्धियाँ बड़ी आयु में मिली हैं। लेकिन वर्तमान समय में सर्वेक्षणों से यह पता चल रहा है कि इन क्षेत्रों में अनेक विलक्षण उपलब्धियाँ तीस वर्ष की आयु में ही मिल गईं।

आज के विद्यार्थी कल भविष्य के राष्ट्र निर्माता होंगे उन्हें ऐसे संवेदनशील प्रौढ़ों से प्रोत्साहन की आवश्यकता है जो रचनात्मकता की बुनियादी प्रक्रिया को समझता हो। इसके लिए धर्म की अहम भूमिका है। एक शिक्षक अपने शिक्षण में कल्पना, सरलता, खोज, वास्तविकता एवं नवाचार को शिक्षण विधि का अनिवार्य अंग मानकर संसाधनों का बेहतर उपयोग एवं अभिप्रेरणा की सहायता से अपने सृजनात्मक विचार को एक उद्देश्यपूर्ण उपलब्धि में बदल सकता है।

21वीं सदी में विद्यालयीन शिक्षा

21वीं सदी में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों का संबंध उनके आसपास के समुदाय और परिवेश को समझने में सहायता करेगा। इस परिवेश में शिक्षक की भूमिका छात्रों को केवल निर्देश देने वाले के रूप में ही नहीं अपितु उन्हें दी गई सूचनाओं को ज्ञान में बदलने की योग्यता का विकास करने वाले के रूप में होगा।

21 वीं सदी के परिवेश में शिक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण है।

यदि हम इसके लिए नई प्रणाली, नया मॉडल विकसित करने में असफल रहते हैं, तकनीकों द्वारा चालित वैश्विक अर्थव्यवस्था के अनुरूप इस पद्धति को अपनाने में असफल होते हैं तो हम बहुत

बड़ी भूल करेंगे।

* शिक्षा के क्षेत्र में छः ध्यान देने योग्य प्रणाली हैं–

1. कार्य की एक ऐसी दुनिया के संदर्भ में पेशेगत प्रोफाइल में परिवर्तन जो कि अत्यधिक विविध केस (मुद्दे) में, संकुचित हो रहा है क्रमशः परिवर्तनशील और कहीं अत्यधिक वैश्वीकृत है।
2. बढ़ती सामाजिक असमानता व हिंसा का सामना करने की चुनौती।
3. यह समझने की आवश्यकता की व्यक्ति और समुदाय के बीच विविधता एक अमूल्य संसाधन है जो कि सामाजिक असमानता से अलग है।
4. व्यक्तियों को शिक्षित करने की आवश्यकता ताकि वे समाज में नागरिक के रूप में बेहतर प्रतिनिधित्व करने के लिए अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने योग्य हो सकें।
5. विविध प्रकार के उदित होते मुद्दे जैसे– जैव प्रौद्योगिकी का विकास।
6. पर्यावरण, व्यक्ति व समुदाय के जीवन की गुणवत्ता पर तकनीकी विकास के प्रभाव व दुष्प्रभाव का सहअस्तित्व।

इस पृष्ठभूमि में शिक्षित करने के लिए छात्रों के वास्तविक जीवन में ज्ञान के उपयोग को दर्शा कर उनमें रुचि पैदा करनी होगी। इसके लिए पाठ्यक्रम व संगठनात्मक ढांचे की समाओं से परे प्रयास करना होगा। यथा स्थितिवाद को ढांचे की सीमाओं से परे प्रयास करना होगा। यथा स्थितिवाद को छोड़कर डिजिटल व अन्य तकनीकों का सहयोग सहायक रहेगा। छात्रों को किताबी कीड़ा या रट्टू तोता बनाने की बजाए उनमें (Comprehensive Skill) समझने की शक्ति विकसित करने का प्रयास किया जाए। एक लोकतांत्रिक शिक्षण मनोविज्ञान जो अवसर की समता सुनिश्चित करे ऐसी प्रणाली विकसित की जाए।

विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम

निर्देशन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति की उसके जीवन एवं कैरियर (वृत्तिक रोजगार) को बनाने में सहायता की जाती है, ताकि वह पर्यावरण में समायोजित हो सके एवं इस सांसारिक जीवन का आनन्द ले सके। शिक्षा निर्देशन में मनोवैज्ञानिक सेवाओं को छात्रों के लिए सुलभ व उपयोगी बनाया जाता है। निर्देशन द्वारा पथ प्रदर्शन मनोवैज्ञानिक आधार पर विद्यार्थियों को दिए जाते हैं, जिससे वे अपनी योग्यता व रुचि अनुकूल शिक्षण संबंधी पाठ्यक्रम, विषय, प्रशिक्षण व कार्यक्रम अपना सके साथ ही वे अपने अधिगम को सुलभ व उपयोगी बना सके। उन्हें शैक्षिक निर्देशन द्वारा भविष्य में सफल मार्ग अपनाने का आत्मनिर्देशन प्राप्त होना चाहिए।

छात्र चाहे कितना भी प्रखर बुद्धि का क्यों न हो, वह अपने भविष्य निर्माण के लिए उचित योजना बनाने में सफल नहीं हो सकता। इसके लिए भी शिक्षा निर्देशन की आवश्यकता है। विद्यालयों में विषयों की भरमार है, परन्तु शैक्षिक निर्देशन की कोई व्यवस्था नहीं है अतः छात्र गलत विषयों का चयन करके अपनी रुचि व योग्यता का सदुपयोग अधिगम की सफलता के लिए नहीं कर पाता, अतः सभी शिक्षा स्तरों के अंतिम वर्ष तक छात्रों को शिक्षा–निर्देशन की सुविधा मिलनी चाहिए जिससे वे अपनी रुचि व योग्यता के अनुसार भावी शैक्षिक योजना बना सके। विशेषकर माध्यमिक शिक्षा स्तर

के अन्त में प्रत्येक विद्यार्थी को यह सुविधा मिलनी ही चाहिए।

शैक्षिक निर्देशन के उद्देश्य–

(1) छात्रों को उनकी योग्यता, आवश्यकता एवं रुचि के अनुकूल पाठ्यक्रम चुनने की सूचनाएँ देना जिससे वे सर्वोत्तम और सबसे अधिक उपयुक्त पाठ्यक्रम की शैक्षिक योजना अपने लिए पा सकें।

(2) छात्रों को उनकी योग्यताओं, सम्भावनाओं और रुचियों का बोध कराना जिससे वे वर्तमान परिस्थिति में उनके अनुकूल आत्म–निर्देशन लेकर अपने लिए एक उपयुक्त शैक्षिक योजना बना सकें।

(3) शिक्षा निर्देशन द्वारा छात्रों के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से छात्रों का पथ प्रदर्शन करना।

इस तरह निर्देशन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा विद्यार्थियों को उसकी योग्यताओं एवं रुचियों के अनुसार उपलब्ध विकल्पों में से सबसे अच्छा विकल्प चुनने के लिए सहायता करना है। विद्यार्थियों को अपने स्वयं के प्रयासों द्वारा अपनी शैक्षिक, व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं को हल करने में सहायता प्रदान की जाती है। यह विपरीत वातावरण में समायोजित होने तथा उसका आनन्द उठाने में विद्यार्थियों अथवा व्यक्तियों की सहायता करता है। यह लोगों को चिंतन एवं उपागम में यथार्थवादी बनाता है। अच्छा कैरियर चुनने के लिए हम सबकी मदद करता है। अतः विद्यालयों में शैक्षिक निर्देशन कार्यक्रम होते रहना चाहिए।

श्रीमती रमाकान्ति साहू
प्राध्यापक
उ. शिक्षा अ. संस्थान, बिलासपुर (छ. ग.)

इच्छा हो तो

अगर लूटने की इच्छा हो तो
''महापुरूषों के ज्ञान, ज्ञान का खजाना लूटो''
अगर चोरी करने की इच्छा हो तो
''सद्गुणों की चोरी करो''
अगर त्याग करने की इच्छा हो तो
''दुष्ट प्रवृत्तियों का त्याग करो''
अगर सीखने की इच्छा हो तो
''समय का सदुपयोग करो''
अगर पढ़ने की इच्छा हो तो
''महापुरूषों का जीवन चरित्र पढ़ो।''

संकलनकर्त्ता
श्रीमती खेमावती गुप्ता
बी. एड. (द्वितीय वर्ष)

जीना सीखा था माँ

याद आते हैं, वो दिन
जब तुम्हारी ऊंगली थाम कर
मैंने चलना सीखा था माँ।
याद आता है, वो पल
जब तुम्हारी गर्माहट में
मैंने साँस लेना सीखा था माँ।
याद आते हैं वो लम्हें
जब तुम्हारी गोद में
मैंने खिलखिलाना सीखा था माँ।
याद आती है, वो रातें
जब तुम्हारे आँचल तले
मैंने चैन से सोना सीखा था माँ।
याद आता है, तुम्हारा पहला स्पर्श
जिसके जरिये मैंने
महसूस करना सीखा था माँ।
याद आते हैं, वो पल
जब तुम्हारे कोमल हाथों से
मैंने खाना सीखा था माँ।
याद आती है, तुम्हारी
मीठी–सी मुस्कान
जिसे देखकर मैंने जीना सीखा था माँ।।

माँ

माँ ही पूजा, माँ ही अर्चना
माता पुण्य प्रसाद है,
जीवन के तपते मरू में
शीतल अमवा की छांव है।
माँ मृदुल, माँ है कोमल
माँ ममता की खान है
माँ ही मन्नत माँ ही जन्नत
माँ उठी हुई दुआ की आन है।
माँ गुरूवाणी, माँ प्रार्थना
माँ ही सबकी जान है
माँ धरा, माँ आकाश है
माँ ही रब की अजान है।

वंदना नवरंग
B. Ed. II Year

भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी की मशहूर कविता

संकलन

हरी–हरी दूब पर
ओस की बूंद अभी थी, अभी नहीं है।
ऐसी खुशियाँ जो हमेशा हमारा साथ दें
कभी नहीं थी, कभी नहीं हैं।

क्वाँयर की कोख से फूटा बाल सूर्य,
जब पूरब की गोद में पाँव फैलाने लगा,
तो मेरे बगीची का पत्ता जगमगाने लगा,
मैं उगते सूर्य को नमस्कार करूं,
या उसके ताप से भाप बनी,
ओस की बूंदों को ढूंढूँ?

सूर्य एक सत्य है जिसे झुठलाया नहीं जा सकता
मगर ओस भी तो एक सच्चाई है।
यह बात अलग है कि ओस क्षणिक है
क्यों न मैं क्षण–क्षण को जिऊँ?

सूर्य तो फिर भी उगेगा
धूप तो फिर भी खिलेगी,
लेकिन मेरे बगीची की हरी–हरी दूब पर,
ओस की बूंद हर मौसम में नहीं मिलेगी।
छोटे मन से कोई बड़ा नहीं हो सकता,
टूटे मन से कोई खड़ा नहीं हो सकता।

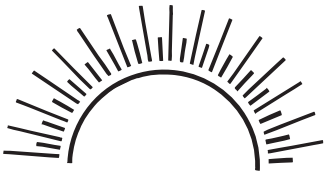

श्रीमती पूनम साहू
बी. एड. द्वितीय वर्ष

शहर मेरा बिछौना

'समंदर न सही पर एक नदी तो होनी चाहिए,
तेरे शहर में जिंदगी कहीं तो होनी चाहिए।'

वह आदिम युग रहा होगा जब मनुष्य धरती को बिछौना मान अन्य प्राणियों की भांति घुमन्तु जीवन जीता रहा होगा। ईश्वर प्रदत्त न भी कहें तो प्रकृति प्रदत्त बुद्धि ने ही मानव को अन्य जीवों से अलग पहचान दी है। तभी न जंगल–जंगल वन्य प्राणियों के साथ जीवन–यापन करने वाला यह चतुर प्राणी झुग्गी झोपड़ी से लेकर बड़ी–बड़ी अट्टालिकाओं के अंदर और अधिक आरामदायक जीवन जीने की उधेड़बुन में उलझा है। आज की स्थिति में जनसंख्या की असामान्य वृद्धि के साथ ही बढ़ती बेरोजगारी और पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित युवा वर्ग की मानसिकता ने भारतीय संस्कृति और सभ्यता को आहत किया है, गांव से शहर की ओर लोगों के पलायन का यह सबसे बड़ा कारण है। इससे नगरों की आबादी बढ़ी है। इस अनचाहे जनसंख्या भार से नगरों के विकास में विकृति आई है। जहाँ–जहाँ बेजा–कब्जा की भूमि पर झोपड़पट्टी की गंदी बस्ती नगर के योजनाबद्ध विकास के लिए बाधक है।

स्पष्ट है कि गांवों से नगरों की ओर पलायन से नगरीय जनसंख्या की वृद्धि के कारण आवासीय समस्या और अधिक जटिल तथा गंभीर होते जा रही है। पूर्व और वर्तमान के मापदण्ड के विसंगति का परिणाम उत्साहजनक नहीं है क्योंकि इससे दुर्घटनाओं की सम्भावनाएं बढ़ी हैं, अपराधों की बढ़ोतरी के साथ ही प्रदूषण में विकरालता आई है। शहरों में रह रहे लोगों के शारीरिक तथा मानसिक स्थिति पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है, इस समस्या के समाधान का एकमात्र विकल्प नगर के क्रमबद्ध विकास की एक निश्चित योजना तैयार करना है ताकि भविष्य में नगर की बढ़वार होने की स्थिति किसी प्रकार की रुकावट न आए। जरूरी है कि नगर की भावी बढ़ोतरी को ध्यान में रखकर मूलभूत आवश्यकताओं पर योजनाबद्ध विकास की रूप–रेखा निर्धारित किया जाना चाहिए, ताकि हम नगरवासियों को स्वास्थ्यप्रद और सुविधाजनक जीवन जीने की परिस्थितियाँ प्रदान किया जा सके। इस संबंध में मेरे द्वारा समर्पित ये पंक्तियाँः–

तरतीब से बिछा दो, चादर मेरे शहर की
धुला अर्श ओढ़ लूं मैं, हो शहर मेरा बिछौना
सोचने से कहाँ मिलते हैं, तमन्नाओं के शहर.....
चलने की जिद भी जरूरी है, मंजिल पाने के लिए ।

डॉ. अजीता मिश्रा
सहायक प्राध्यापक

अस्तित्व

पीकर कुछ धूप नवतपे की
कुछ आंधी ले बरसातों से
जाड़ों की सिहरन संग लिए
निकली वो साथ जमाने के।

मैं भी समर्थ हूँ इस जग में
अपनी पहचान बनाने को
अपने हिस्से का आसमान
खुद हाथ बढ़ा पा जाने को।

अब नहीं सुहाता छाया में ही
बैठ गृहस्थी को तकना
अब तो भाता है, संघर्षों का
हर दिन नया स्वाद चखना।

पत्नी, माता, वधु और गृहस्थी के
सारे कर्त्तव्य लिए,
मैं ले सकती हूं, खुद का भी
दायित्व यही संकल्प लिए।

अपनी सारी ऊर्जा समेट
शुरुआत सुबह की करती है,
घर क्या, वो खुद अस्तित्व के अपने
निखरे फूल पिरोती है।

है उम्र की ढलती दोपहरी
कुछ देह अशक्त भी साथ नहीं,
पर तेज गति इस जीवन से
बचने की भी तो राह नहीं।

लेकर दोहरा दायित्व वो घर के,
साथ समाज भी गढ़ती है
पीछा न छूटा उसका पुस्तक से
वो आज भी पढ़ती रहती है

वो बचपन से ही जिद्दी है,
जो ठाना करके मानेगी।
मालूम है ऊपरवाले को,
वो हार कभी न मानेगी।

कितनी ही झंझावातें आईं,
तुझको रोते भी देखा है।
पर जीवट है वो, थम जाए,
ऐसा होते ना देखा है।

जग के आशीष की सदा रहेगी
उसके मस्तक पर छाया
उसके संग जग भी जीता है,
बनकर उसका ही हमसाया।

वो एक अकेली ही तो नहीं
बेटियाँ कई हैं इस पथ पर
जो निज–प्रतिभा के पुष्प बांटने
निकल पड़ी जीवन–रथ पर।

–डॉ. अजीता मिश्रा
सहायक प्राध्यापक

समय के सदुपयोग पर प्रेरणादायक सुविचार

चल आगे बढ़ तूफाँ से न डर
चल कश्ती उठा, सागर में उतर
ये लहर जो उठती, उठने दे
कर ना अब तू कोई मगर
चल आगे बढ़ तूफाँ से न डर
चल कश्ती उठा, सागर में उतर

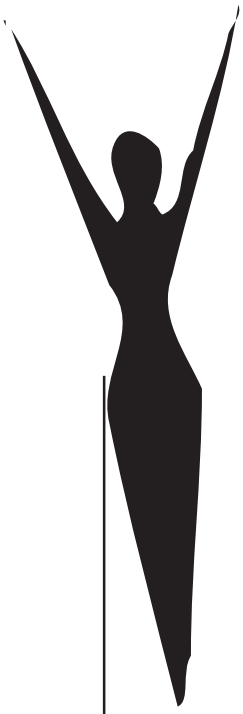

ये दुनिया एक तमाशा है
हर शख्स, यहाँ पर प्यासा है
ये प्यास है आगे बढ़ने की
यूँ ठहर के तू प्यासा न मर
चल आगे बढ़ तूफां से न डर
चल कश्ती उठा सागर में उतर

जिन्हें अपने सपने पाने हैं
बन जाते वो तो दीवाने हैं
गर लक्ष्य जो साधा है तूने
उसे पाने की कोशिश तू कर
चल आगे बढ़ तूफाँ से न डर
चल कश्ती उठा, सागर में उतर

गुमनाम सा तू क्यों भटक रहा
राहों में क्यों तू अटक रहा
है रात अंधेरी आएगी अपनी सहर
चल आगे बढ़, तूफाँ से न डर
चल कश्ती उठा, सागर में उतर

जो राह न मिलती नई बना
खुद को अपनी आवाज सुना
बस रुकना न तू राहों में
कट जाएगी जल्दी ये डगर
चल आगे बढ़, तूफाँ से न डर
चल कश्ती उठा, सागर में उतर

मंजिल तू जिस दिन पायेगा
दुनिया में जाना जायेगा
मौत न तुझको मार सके
हो जायेगा ऐसा तू अमर
चल आगे बढ़, तूफाँ से न डर
चल कश्ती उठा, सागर में उतर

– श्रीमती सीमा यादव
बी. एड. द्वितीय वर्ष

गुरु

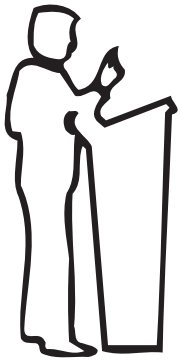

गुरु का महत्व कभी न होगा कम
भले कर लें कितनी भी उन्नति हम।
वैसे तो है इंटरनेट पर हर प्रकार का ज्ञान
पर अच्छे–बुरे की नहीं है उसे पहचान।
नहीं है शब्द कैसे करूं धन्यवाद,
बस चाहिए हर पल आपका आशीर्वाद।
हूँ जहाँ आज मैं उसमें है आपका बड़ा योगदान।
आपने बनाया है मुझे इस योग्य
कि प्राप्त करूं मैं अपना लक्ष्य।
दिया है हर समय आपने सहारा
जब भी लगा मुझको मैं हारी।
पर मैं हूं कितनी मतलबी, खुदगर्ज?
याद किया न मैंने आपको कभी।
आज करती हूं दिल से आप सबका सम्मान,
आप सबको है मेरा शत्–शत् प्रणाम।

श्रीमती मालती राठिया
बी. एड. प्रथम वर्ष

हमेशा याद रखें 3 बातें

संकलन

यह किसी का इंतजार नहीं करता
समय, मौत, ग्राहक
इनका हमेशा सम्मान करो
माता, पिता, गुरू
इनसे बचने की कोशिश करो
बुरी संगत, स्वार्थ निंदा
इन्हें पाने की कोशिश करो
ज्ञान, मान, ईमान
इन्हें सदा हृदय में रखो
दया, क्षमा, विनय

यह इंसान को जलील कर देता है
क्रोध, झूठ, चोरी
इन्हें सदा याद रखना जरूरी है
सच्चाई, कर्तव्य, मौत।।

संकलनकर्त्ता
श्रीमती अलमा ज्योति बेक
बी. एड. (द्वितीय वर्ष)

जीत बनाम हार

जीतने वालों के पास सपने होते हैं।

हारने वालों के पास योजनाएँ होती हैं।।

जीतने वाले परिणाम को देखते हैं।

हारने वाले केवल पीड़ा को देखते हैं।।

जीतने वाले भविष्य की ओर देखते हैं।

हारने वाले अतीत की ओर देखते हैं।।

जीतने वाले हर काम को पूर्ण करते हैं।

हारने वाले प्रयास मात्र करते हैं।।

जीतने वाले संभावनाओं को देखते हैं।

हारने वाले समस्याओं को देखते हैं।।

जीतने वाले प्रतिबद्धता जताते हैं।

हारने वाले वायदे करते हैं।।

जीतने वाले पूछते हैं कि मैं ''आपके लिए क्या कर सकता हूं?''

हारने वाले कहते हैं कि ''यह मेरा काम नहीं है।''

जीतने वाले के पास कुछ करने की चाह होती है

हारने वाले स्वतः ही कुछ होने की अपेक्षा करते हैं।।

जीतने वाले हर समस्या का हल देखते हैं।

हारने वाले हर हाल में समस्या को देखते हैं।

जीतने वाले कहते हैं ''यह कठिन है लेकिन संभव है''

हारने वाले कहते हैं ''यह संभव है लेकिन कठिन है।।''

संकलनकर्ता

श्रीमती बिमला राठौर

बी. एड. (द्वितीय वर्ष)

जिंदगी है अनमोल

काँटों के बीच गुलाब है जिंदगी
खाली पन्नों की किताब है जिंदगी।
जी लो इसे जी भर के ईश्वर की सौगात है जिंदगी।
दूसरों की खुशी में खुश हो जाया करो।
कभी किसी का दिल दुखाया न करो।
जिंदगी तो है एक अनमोल तोहफा
बुरे कर्म करके इसे गंवाया न करो।
जितना दिया ईश्वर ने उसी में रहो खुश
दूसरों की मदद करो वही है सच्चा सुख।
अमीरी–गरीबी से ऊपर उठकर, सबको सम्मान दो
काम करो कुछ ऐसा, कि युगों–युगों तक नाम हो।
हंसते–मुस्कुराते जी लो इसे, ईश्वर ने दी है जो भेंट
जिसका नहीं है कोई मोल, क्योंकि ये जिंदगी है अनमोल।

श्रवण कुमार वरकड़े
बी. एड. द्वितीय वर्ष

मेरा ग्रंथालय

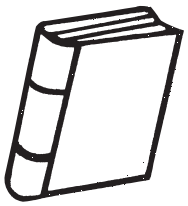

मेरे महाविद्यालय में है एक ग्रंथालय।
है वहां पुस्तकें प्यारी–प्यारी।।
रहता है वहाँ वातावरण शांत
लिखा रहता है बनाए शांति का मान
वहां की पुस्तकें कुछ बोलती हैं।
ज्ञान का दरवाजा खोलती हैं
पुस्तक में लिखा शब्द
ग्रंथालय में होती है
पुस्तक और पुस्तकों में होता है ज्ञान
यही ज्ञान बढ़ा सकता है हमारा मान।।

अनिता नेताम
बी. एड. द्वितीय वर्ष

* What is a Mother? *

"Mother"

A Mother is someone who loves you

Who comes for you in every way

She sits down and listens.

To what you have to say.

She always thinks you beautiful

Never puts you down

She always has a smile

To wipe away your frown.

A mother is someone who believes in you

Always pushes you to go for

Tells you to believe in yourself

No matter who you are.

A mother is like an angel

although without the wings

She tells you to enjoy

life's most smallest thing

I really love my mother

She means so much to me

Mommy I really love you

and that's how it always will be.

Anita Netam, B. Ed. II Year

कुछ सुनाना चाहती हूँ

आज मैं फिर कुछ सुनाना चाहती हूँ
गम जुदाई का बताना चाहती हूँ,
मुस्कुराना तो मेरी आदत नहीं है,
मुस्कुरा के गम छुपाना चाहती हूँ।
आज मैं फिर कुछ सुनाना चाहती हूँ।

जिंदगी की नाव में चलते रहे हम,
हर खुशी की छांव में पलते रहे हम,
कौन जाने किसको मिले कब किनारा,
दो घड़ी ही साथ जाना चाहती हूँ।
आज मैं फिर कुछ सुनाना चाहती हूँ।

वो तेरा हंसना, वो तेरा मुस्कुराना,
इक जरा सी बात पे गुस्सा दिखाना,
आज अन्तिम बार मुझसे रूठ जाओ
आज मैं फिर कुछ सुनाना चाहती हूँ।

कष्ट तेरे सहने को तैयार हूं मैं
हर कदम पे तेरे साथ हूं मैं
जीत कर तुझको मिलती है खुशी तो,
मैं ये बाजी हार जाना चाहती हूँ।
आज मैं फिर कुछ सुनाना चाहती हूँ।

मैं नहीं कहती कि मुझको याद करना,
वक्त अपना कीमती बर्बाद करना
पलक तेरी जिन पलों में भीग जाए
उन पलों में याद आना चाहती हूँ।
आज मैं फिर कुछ सुनाना चाहती हूँ।

जगमगाता चांद सा जीवन रहे
मैं चलूं पथ तेरा रोशन रहे।
मंजिलें चूमे हर पल तुम्हारी,
राह मैं ऐसा बनाना चाहती हूँ।
आज मैं फिर कुछ सुनाना चाहती हूँ।

भूल जो भी हुई हो, माफ करना।
स्नेह की सदा बरसात करना।
आज मेरे हाथों पर अपना हाथ रख दो।
एक तेरा विश्वास पाना चाहती हूँ।
आज मैं फिर कुछ सुनाना चाहती हूँ।

कु. पूनम यादव
बी. एड. द्वितीय वर्ष
(संकलित)

कविता

क्यों रुक सा गया है तू जिंदगी के इन राहों में,
उठ, चल, दौड़ और समा जा मंजिल की बाहों में।
इस तरह से हारकर न बैठ मेरे यार,
वरना गिर जाएगा तु खुद के निगाहों में।।

माना जिंदगी में मुश्किलें पहाड़ से खड़े हैं,
मत भूल तेरे हौसले उससे भी बड़े हैं।
सहम कर न बैठ तू इस कदर यार,
काबिलियत, हिम्मत तुझमें ही जड़े हैं।।

तू उठकर और कदम तो बढ़ा
इस जीवन के सफर में,
क्यों जा रहा है तु गैरों के पनाहों में,
क्यों रुक सा गया है तू जिंदगी के सराहो में
जीवन को यूं न व्यर्थ कर तु छांव में बैठकर,
क्यों सिकुड़–सा गया है तु प्रतिभाओं में सिमटकर,
असफलता तो चुनौती है इस जीवन की,
चल, उठ, बढ़, कोशिश और कर।।

जो किस्से पीछे बीत चुके हैं
सोचकर समय को बर्बाद न कर उन वजहों में,
क्यों रुक–सा गया है.....निगाहों में।।

रेशम पटेल
बी. एड. प्रथम वर्ष

मन का कचरा

एक भिक्षुक भिक्षा मांगता था। वे जब भी रास्ते से गुजरते एक घर में एक औरत रोज अपनी बहू से झगड़ती मिलती। एक दिन भिक्षुक उसी औरत के घर भिक्षा मांगने पहुंच गए और आवाज दी ''भिक्षां देहि''। घर से सास बाहर आई और कमंडल में भिक्षा डालते हुए बोली 'महराज प्रवचन दीजिए'। भिक्षुक बोले– बेटा प्रवचन आज नहीं कल दूंगा। अगले दिन भिक्षुक पुनः उस घर के सामने गए और आवाज दी ''भिक्षां देहि''। वह महिला घर से बाहर आई और भिक्षुक के कमंडल में खीर डालने लगी। उसने देखा कि उसमें कूड़ा भरा है। वह बोली ''महाराज आपका कमंडल तो गंदा है।'' भिक्षुक बोले– हां, गंदा है, लेकिन तुम इसमें खीर डाल दो। वह बोली, नहीं महाराज, अगर मैंने इस कमंडल में खीर डाल दी तो वह खाने लायक नहीं रहेगी। महाराज बोले– जिस तरह से गंदे कमंडल में खीर डालने से खीर खाने योग्य नहीं रहेगी, उसी तरह मेरा उपदेश भी तुम्हारे लिए तब तक अनुपयोगी रहेगा जब तक तुम्हारे मन में लोगों के प्रति, संसार के प्रति द्वेष भाव का कूड़ा–कचरा भरा रहेगा।

मंत्र– जब तक अंतर्मन साफ नहीं होगा, तब तक जीवन अधूरा ही रहेगा।

छत्तीसगढ़ी कविता

जब ले आ हे ऋतु बसंत हा, मन हा सबके डोलत हे।
बाग–बगीचा सुग्घर लागे, रहि, रहि कोयल बोलत हे।।
मउरे हावय आमा संगी, अब्बड़ के ममहावत हे।
फूल हावय फूल सबो जी, सबके मन ला भावत हे।।
सुरसुर सुरसुर हवा चलत हे, डारा पाना डोलत हे।
बाग बगीचा सुग्घर लागे, रहि–रहि कोयल बोलत हे।।
पीयर पीयर सरसों फूले, खेत खार मा झूमत हे।
चना मटर ला खाये बर जी, लइका मन सब घूमत हे।।
आये हे संदेश पिया के, छुप–छुप चिट्ठी खोलत हे।
बाग–बगीचा सुघ्घर लागे, रहि–रहि कोयल बोलत हे।।

भीम धुरन्धर
बी. एड. द्वितीय वर्ष

चेतना के स्वर

''आज विश्व में जहां भी सफलता की इमारत है, उसके नींव में निश्चित ही चेतना के स्वर मिलेंगे।''

ग्रहण करना तो मानव समाज की एक सामान्य प्रवृत्ति है, पर यह किसी व्यक्ति के स्वभाव पर निर्भर करता है कि वह किस बात को अधिक महत्व प्रदान करता है, और क्यों? इसमें इस बात का कोई महत्व नहीं कि वक्तव्य किसके द्वारा व किस समय में कहा गया है। चेतना के स्वर रूपी बीज तो अचानक ही ज्ञान सम जल पाकर अंकुरित हो उठते हैं, और लाखों लोगों की आध्यात्मिक भूख शांत कर जाते हैं, फिर वह बीज बालक की भोलेपन में दबी हो या फिर किसी ज्ञानी की तप से तपी हो, सभी में चेतना के स्वर समान रूप से विद्यमान हैं। यह स्वर यूं ही किसी के मुख से नहीं निकलती यह तो उसकी अंतरात्मा की छवि होती है, जो वाणी रूप में लोगों पर पड़ती है, और सभी को अपनी शीतलता का अनुभव कराती है। कई बार व्यक्ति किसी की बातों को सहज मजाक में टाल जाते हैं। पर वह कभी यह नहीं सोचते कि आखिर उस व्यक्ति ने मुझे ऐसा क्यों कहा, एवं उस व्यक्ति का इसमें क्या लाभ था, कई बार तो ऐसा होता है कि हम उस व्यक्ति को पहचानते तक नहीं, फिर क्यों वह हमें उपदेश देता है, क्या वह पागल है? जी नहीं! इसका एकमात्र कारण है– प्रेम, उसे प्रेम है मानव समाज से, इस धरती से, और ऊंचे आसमान से, उसके अंतरात्मा में कहीं छुपी होती है छोटी सी मानवता की चिंगारी जो उसे बार–बार आपको बुरे कार्य करने से रोकती है।

तो क्या आप में वह चिंगारी नहीं है? और है, तो क्या वह कभी शोला नहीं बन सकती। क्या आप में नहीं है, चेतना के स्वर! और है तो क्यों दबाते हैं उसे, निकल जाने दो दुनिया की भीड़ में लड़ने के लिए।

ले लो हाथों में सफलता की मशाल और उसकी रोशनी में सारे असफलता की अंधकार मिटा दो।

भर जाएंगे हर सुर में नव ताल
बस तुम ''चेतना के स्वर'' जगा दो
बस तुम ***''चेतना के स्वर''*** *जगा दो*

रामप्रसाद साहू
M. Ed. II Sem.

धुआं धुआं सा हो रहा है चारों ओर

धुआं धुआं सा हो रहा है,
चारों ओर, जाने कहाँ आग लगी है।
हर चौखट का दरवाजा बंद है,
इंसानियत जाने कहाँ जा छुपी है।।

खामोश है निगाहें, हर होठ सी गए हैं,
जाने कितने बेगुनाह, यह विष पी गये हैं।

सहम उठी है, मानवता,
देखकर यह भीषण ज्वाला।
जाने कब आएगा शांति का सावन,
जो नभ मंडल में खो गए हैं।।

झुलस रहे हैं, अरमान सारे,
हर ख्वाब जल रहे हैं।
बेगुनाह मासूम सी कलियां,
बिन पानी के मर रहे हैं।।

तड़प रही है हर आंचल,
हर गोद रो रही है।
वक्ष–स्थल से वह दूध की नदिया,
पानी के मोल बह रही है।।

सुबह की मखमली किरण पर भी,
आग का है जोर।
दिन की रौशनी भी अब,
मौत के गीत गाने लगी है।।

धुआं धुआं सा हो रहा है चारों ओर, जाने कहां आग लगी है।
धुआं धुआं सा हो रहा है चारों ओर, जाने कहां आग लगी है।।

रामप्रसाद साहू
एम. एड. द्वितीय सेमेस्टर

शिक्षा और कम्प्यूटर

" आज के आधुनिक युग में शिक्षा के साथ–साथ कम्प्यूटर का ज्ञान भी अति आवश्यक हो गया है। कम्प्यूटर एक ऐसा इलेक्ट्रॉनिक मशीन है, जो उपयोगकर्ता द्वारा दिए गए निर्देशानुसार अत्यंत अल्प समय में सत्य एवं विश्वसनीय परिणाम प्रस्तुत करता है। "

व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिये शिक्षा अनिवार्य है। इसी प्रकार आज के व्यक्ति को कम्प्यूटर का ज्ञान होना आवश्यक हो गया है। आज लगभग सभी क्षेत्रों में कम्प्यूटर का उपयोग किया जा रहा है। जिससे कार्य अधिक शीघ्रता से एवं सफलतापूर्वक संपन्न हो रहे हैं। कृषि अनुसंधान, शिक्षा, स्वास्थ्य, अभियांत्रिकी, वैज्ञानिक औद्योगिक, व्यापारिक मनोरंजन आदि सभी क्षेत्रों में कम्प्यूटर ने अपनी उपयोगिता सिद्ध की है। शिक्षा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में इसकी महत्ता एवं उपयोगिता निम्नानुसार है।

(1) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया– शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में कम्प्यूटर का प्रयोग करने से कई इन्द्रियां एक साथ कार्य करते हैं, जिससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया अधिक सरल, रुचिपूर्ण एवं प्रभावशाली होता है।

(2) शिक्षक प्रशिक्षण में– आज कम्प्यूटर के माध्यम से शिक्षकों को प्रशिक्षण देने का कार्य भी सफलतापूर्वक किया जा रहा है। एडुसेट में एक साथ शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाता है। साथ ही इसमें शिक्षकगण एवं अधिकारी बातचीत करते हुए प्रशिक्षण के समस्याओं का निराकरण भी करते हैं।

(3) ई–लर्निंग– ई–लर्निंग कम्प्यूटर के कारण ही संभव है। ई–लर्निंग में अध्यापक, विद्यार्थी एवं पाठ्यक्रम सब कुछ कम्प्यूटर में ऑन–लाइन रहता है। ई–लर्निंग के माध्यम से विद्यार्थी अपने देश में ही नहीं, अपितु दूसरे देशों के विषय विशेषज्ञों से भी जानकारी प्राप्त कर सकता है। ई–लर्निंग ने एक शिक्षक कई विद्यार्थियों से एक साथ ऑनलाइन जुड़े रहते हैं तथा विद्यार्थी भी आपस में जुड़े रहते हैं वे एक–दूसरे से जानकारी प्राप्त करते हैं। शिक्षक किसी भी समय विद्यार्थियों को अधिगम में सहायता कर सकते हैं। इसमें समय एवं कालखण्ड का बंधन नहीं होता है।

(4) ई–पुस्तकालय– ई–पुस्तकालय एक ऐसा पुस्तकालय है, जिसमें लाखों–करोड़ों पुस्तकें कम्प्यूटर में ऑनलाइन उपलब्ध है, ये पुस्तकें अनेक भाषाओं में उपलब्ध हैं तथा इन पुस्तकों के लेखक एवं प्रकाशक दोनों ही अधिकृत होते हैं। ई–पुस्तकालय के सदस्य बनकर हम महंगी से महंगी किताबें अत्यंत कम शुल्क में या निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। छत्तीसगढ़ के रायपुर में ई–पुस्तकालय संचालित है।

(5) ई– कक्षा– ई कक्षा में बहुत दूर बैठे शिक्षक विद्यार्थियों को उनके अधिगम में सहायता प्रदान करते हैं। उनका मार्गदर्शन करते हैं। विद्यार्थी भी विषय विशेषज्ञ से आवश्यक जानकारी प्राप्त करते हैं। जहाँ आवागमन के साधन सुलभ नहीं है या जहां शिक्षकों का अभाव है ऐसे क्षेत्रों में ई–कक्षा ज्यादा प्रभावशाली एवं उपयोगी है।

(6) ऑनलाइन, प्रवेश परीक्षा एवं मूल्यांकन– आजकल अनेक विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में प्रवेश

की प्रक्रिया ऑनलाइन है अर्थात् हम घर बैठे कम्प्यूटर के माध्यम से वांछित विद्यालय एवं महाविद्यालय में ऑनलाइन प्रवेश ले सकते हैं। कई महाविद्यालय की परीक्षाएं एवं प्रतियोगी परीक्षाएं ऑनलाइन आयोजित हो रही हैं। जैसे– GMAT, NEET, BANKING आदि। साथ ही परीक्षा का मूल्यांकन एवं परीक्षा परिणाम भी कम्प्यूटर पर घर बैठे देख सकते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि सूचना प्रोद्योगिकी के इस युग में सभ्य समाज के लिए शिक्षा अति–आवश्यक तो है, साथ ही कम्प्यूटर का ज्ञान एवं उसका उपयोग व्यक्ति एवं समाज के सर्वांगीण विकास के लिए अनिवार्य है।

मार्गदर्शक
श्री डी. के. जैन
व्याख्याता

सूर्य प्रकाश सोनी
एम. एड. प्रशिक्षार्थी

इंसान जाने कहाँ खो गये

जाने क्यूं, अब शर्म से, चेहरे गुलाब नहीं होते।
जाने क्यूं, अब मस्त–मौला मिजाज नहीं होते।
पहले बता दिया करते थे, दिल की बातें।
जाने क्यूं, अब चेहरे, खुली किताब नहीं होते।
सुना है, बिन कहे, दिल की बात समझ लेते थे।
गले लगते ही, दोस्त हालात समझ लेते थे।
तब ना फेसबुक था, ना स्मार्टफोन, ना ट्विटर अकाउंट।
एक चिट्ठी से ही दिलों के जज्बात समझ लेते थे।
सोचता हूं, हम कहां से कहां आ गये।
व्यवहारिकता सोचते–सोचते, भावनाओं को खा गये।
अब भाई–भाई से, समस्या का समाधान कहाँ पूछता है।
अब बेटा बाप से, उलझनों का निदान कहाँ पूछता है।
बेटी नहीं पूछती, माँ से गृहस्थी के सलीके।
अब कौन गुरू के चरणों में बैठकर ज्ञान की परिभाषा सीखता है।
परियों की बातें, अब किसे भाती है,
अपनों की याद, अब किसे रुलाती है।
अब कौन गरीब को सखा बताता है,
अब कहाँ कृष्ण, सुदामा को गले लगाता है।
जिंदगी में हम केवल, व्यवहारिक हो गये हैं,
मशीन बन गये हैं हम सब, " इंसान जाने कहाँ खो गये हैं .....!!! "
" इंसान जाने कहाँ खो गये हैं !!! ".....

– शिरिन मलेवार, B. Ed. II Year

Believe in God MD

मुहाफीज है, तू मेरा
मेरा हमदम भी, तू है
जहाँ भी, देखता हूँ
वहाँ भी तू ही तू है,

प्रीत तुझसे है ज्यादा
प्रीत, जग, से नहीं
फिजाएँ कह रही हैं,
दास्तान–ए–जिन्दगी
तेरे दर से मिला है
इस रुतबे को रवानी

नहीं है, कोई मेरा
सिवाये तेरे ऐ मालिक
तू ही है, जात मेरी
तू ही है, सादमानी

हाँ, तन्हा रोज हूं, कहता
किसी से कुछ, ना कहना
तेरी रहमत का दरिया
में ही डूबा हूं रहता

करूं, किससे शिकायत
लोग पागल हैं कहते
जुल्म, तेरी वफा का
थक गया हूं, सहते–सहते

सब्र इतना ना ले
कि खुद, तेरे पास आ जाऊँ
तुझपे, कुर्बान है सखी
मेरी, हर जवानी

सैला–ब–ए–इम्तेहा
हमीं से क्यूं है
गर्दशी की बदनियाँ
हमी पर क्यूँ है,
मेरे हबीब–ए–खानिक
दरिया–ए–मुफलिस से,
पार कर दे
करता है, सब पर
करम, एक बार वे

मुझे हैरत नहीं है,
तेरी रहमत पे,ऐ रब
मुझे भी, अता तू कर
जो मेरा है, हक

मुहाफीज है, तू मेरा
मेरा हमदम भी, तू है
जहाँ भी, देखता हूँ
वहाँ भी तू ही तू है,

MO. BADRUDDIN
B. Ed. IInd Year
9977694139

* आयुर्वेद *

पानी में गुड़ डालिए, बीत जाए जब रात।
सुबह छानकर पीजिए, अच्छे हों हालात।।
धनिया की पत्ती मसल, बूंद नैन में डार।
दुखती अंखियां ठीक हों, पल लागे दो चार।।
ऊर्जा मिलती है बहुत पिएं गुनगुना नीर।
कब्ज खतम हो पेट की, मिट जाए हर पीर।।
प्रातः काल पानी पिएं, घूंट–घूंट कर आप।
बस दो–तीन गिलास है हर औषधि का बाप।।
ठंडा पानी पियो मत, करता क्रूर प्रहार।
करे हाजमें का सदा, ये तो बंटाढ़ार।
भोजन करें धरती पर अल्थी पल्थी मार।
चबा–चबा कर खाइए, वैद्य न झांके द्वार।।
प्रातः काल पल रस लो, दुपहर लस्सी छाछ।
सदा रात में दूध पी, सभी रोग का नाश।
प्रातः दोपहर लीजिए, जब नियमित आहार।
तीस मिनट की नींद लो, रोग न आवें द्वार।।
भोजन करके रात में, घूमे कदम हजार।
डाक्टर, ओझा, वैद्य का लुट जाए व्यापार।।
शीतल गर्म जल से कभी करिये मत स्नान।
घट जाता है, आत्मबल नैनन को नुकसान।।
हृदय रोग से आपको, बचना है, श्रीमान।
सुरा, चाय या कोल्ड्रिंग का मत करिए पान।।
अगर नहावें गरम जल, तन–मन हो कमजोर।
नयन ज्योति कमजोर हो शक्ति घटे चहुं ओर।।
तुलसी का पत्ता करें यदि हरदम उपयोग।
मिट जाते हर उम्र में तन में सारे रोग।।

अरविन्द कुमार पाठक
बी. एड. द्वितीय वर्ष

महक उठा संसार

सुन्दरता की चित्रण पर,
ध्यान लगे भण्डार।
गौ मुखी सी सुन्दर हैं,
मेरे प्रकृति विधान।।
चन्द्र बदन चंदन सी चहक,
महक उठे संसार।
राग द्वेष अनुरक्त होकर,
संवर गया घर बार।।
चारु चन्द्र की चंचल किरणें
आच्छादित करता संसार।
मन भँवरा तन खिल गया,
मचल गया इमान।।
धरती अम्बर नील गगन,
देखा इन्द्र धनुषी समान।
भँवरा गुन–गुन गुँजित हुआ,
मोर पंख विशाल।।
चिड़िया चुन–चुन चहकती है
मीठे सुर बासुरी संवाद।
ऐसी शोभा बरनी न जाई,
प्रकृति बनी है महान।।
जब से देखा अरुणोदय को
खिल उठा संसार।
राम रहिम के दोहे पर
खुला ग्यान भंडार।।
पुरवाही पवन रेशमी लगे,
मंद–मंद मुस्कान।
तन–मन के जोत जगे,
फुहर झुमे आसमान।।
झीलों की लहरों से,
आता है कोई महान।
सागर की गहराईयों में
डूबता है आसमान।।
भँवरा गुन–गुन करता है,
फूलों के तारों समान।
भाग्य सहराती फुलुवा रानी
अब चढ़ जाऊँ भगवान।।
कैसी सुन्दर माया है
जिसकी आभा अपरम्पार।
हम सबको जीवन देती,
प्रकृति बनी नवनीत सुजान।।

ध्रुव देवांगन
लेखापाल
उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान
बिलासपुर (छ. ग.)

बी. एड. प्रशिक्षणः आवश्यक क्यूं

प्रत्येक शिक्षक जब वह विद्यार्थी होता है, तभी से वह एक शिक्षक की विशेषताओं को महसूस करता है। एक विद्यार्थी के रूप में वह प्रारंभ से ही एक शिक्षक के गुणों का आकलन करता है तथा अपने लिए बेहतर शिक्षक की अपेक्षा करता है। यही अपेक्षा और विश्वास, समाज के प्रत्येक व्यक्ति के मन में शिक्षक की छवि का निर्माण करता है।

जिस स्नेही, दयालु, जागरूक तथा सक्रिय शिक्षक की चाह समाज द्वारा की जाती है उन गुणों का विकास अपने प्रशिक्षार्थी में विकसित करना ही इस द्विवर्षीय पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

यह वह माध्यम है जिसमें एक शिक्षक पुनः विद्यार्थी बनकर एक बालक के भावों को समझने का प्रयास करता है तथा विद्यार्थी के रूप में अपनी कमियों तथा शंकाओं का समाधान करता है। इन संसाधनों का प्रयोग वह एक शिक्षक के रूप में बालकों के विकास हेतु प्रयोग करने के लिए तैयार होता है।

द्विवर्षीय बी. एड. प्रशिक्षण का प्रथम वर्ष विविधताओं से भरा है। कार्यशाला तथा आर्ट एण्ड क्राफ्ट द्वारा हम सभी प्रशिक्षार्थी आपस में कार्य करना सीखते हैं, एक–दूसरे को जानते तथा समझते हैं। यह सबसे पहला और सुखद अनुभव होता है, जब हम कार्यशाला के माध्यम से, एक साथ किसी कार्य के लिए तैयार होते हैं।

आर्ट एंड क्राफ्ट द्वारा प्रशिक्षार्थियों की रुचि, क्रियात्मकता तथा जुझारूपन को प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करता है। यह कला के साथ ही रोजगार हेतु कार्य का विकल्प प्रस्तुत करने में सहायता करता है।

इंटर्नशिप के दौरान विद्यालयों में जाना तथा सामुदायिक कार्यों को पूर्ण करना, समझना, यह हमें समाज से तथा उसकी समस्याओं से अवगत कराता है तथा उसके समाधान हेतु चिन्तन करने प्रेरित करता है।

खेलकूद तथा वार्षिकोत्सव के माध्यम से प्रशिक्षार्थी पूर्णतया उत्साह से भरे होते हैं। इस समय पूरा महाविद्यालय (प्रशिक्षार्थी तथा अध्यापकगण) समान रूप से सक्रिय रहते हैं तथा अपने–अपने निकेतन को श्रेष्ठ प्रस्तुत करने का भरपूर प्रयास करते हैं। यह अत्यंत उत्साह का समय होता है।

इसके माध्यम से हम सभी प्रशिक्षार्थी सांस्कृतिक गतिविधियों को समझ पाते हैं तथा अपने विद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रम की व्यवस्था, संचालन तथा कार्य सम्पन्न करने का अनुभव प्राप्त करते हैं।

द्वितीय वर्ष में कार्यशाला, सेमिनार आदि के द्वारा हम अपनी कमियों को समझ पाते हैं तथा उसे दूर करने का प्रयास करते हैं।

चार माह का इंटर्नशिप हमें अन्य विद्यालयों से जोड़ता है तथा उस विद्यालय की संस्कृति को समझने का अवसर प्रदान करता है। एक प्रशिक्षार्थी जहां शैक्षणिक वातावरण को समझता है वहीं एक शिक्षक–छात्र विद्यालयों की भिन्नता को स्पष्ट रूप से महसूस करता है।

बी. एड. पाठ्यक्रम में आपका कोई बन्धन नहीं है। इसमें शामिल प्रत्येक व्यक्ति इन दो सालों में एक बार फिर बालक बन जाता है और अपने बचपन को महसूस करता है। साथ ही अपने विद्यार्थी जीवन को पुनः जी लेता है।

यह दो वर्ष का समय हमें उत्साह व सक्रियता से पूर्ण रखता है जिससे हम अपने जीवन की छोटी–छोटी समस्याओं से मुक्त रहते हैं।

यह जीवन की भाग–दौड़ में "छाँव" की तरह है जो हमें आगे बढ़ने पुनः स्फूर्तिमान बनाता है।

बी. एड. प्रशिक्षण का उद्देश्य भी यही है कि इन सभी सकारात्मक उर्जाओं से पूर्ण होकर छात्र–अध्यापक, एक विद्यार्थी के रूप में बालकों की समझ तथा मनःस्थिति का अनुभव कर सके तथा इन अनुभवों के आधार पर वह एक सजग शिक्षक के रूप में स्वयं को स्थापित करे जो बालकों के लिए, उनके जीवन के लिए एक उत्कृष्ट मार्गदर्शक बन सके।

श्रीमती सावित्री भारद्वाज
बीएड (प्रशिक्षार्थी)
द्वितीय वर्ष

मरुस्थल की व्यथा

क्या है, दूसरा मुझसा कोई
मैं हूं वो मरुस्थल जिसे समझा न कोई
मैं किसको जाकर अपना कहूँ
नहीं है यहाँ मेरा कोई
दूर–दूर तक फैले इस रेगिस्तान में
आज तक बारिश की एक बूंद भी नहीं
ना बादल का एक टुकड़ा है बरसा
बस प्यार के चंद लफ्जों के खातिर
ना जितना मेरे और तरसा कोई
मैं हूं वो मरुस्थल जहां पर
आज तक कोई ना फूल खिला
मैंने ढूंढ़ा बहुत पर मिला ना
बड़ा दुःख मुझे मेरे दुःख सा ना कोई

कु. बरखा पाण्डेय
M. ED. IV Sem.

आदिवासी संस्कृति के महान नायक (रामेश्वर गहिरा गुरुजी)

रायगढ़ जिले के वनांचल का एक छोटा अबूझ सा गांव गहिरा, जंगलों में छिपा, पहाड़ों से घिरा। न कोई पाठशाला और न दूर–दूर तक कोई पढ़ी लिखा व्यक्ति।

इसी गांव के मुखिया बुड़गी कंवर ने बाजार से " रामचरित मानस " खरीदकर लाल कपड़े में लपेट कर घर में रखा था कदाचित उन्होंने अपने पुत्र रामेश्वर के बारे में कुछ सोचा होगा। रामेश्वर उनके दूसरे नम्बर के पुत्र थे। सारे आदिवासी क्षेत्र में वह सुन्दर, बलिष्ठ बालक था। एक बार तो वह कई मन वजन की लकड़ी को अकेले ही घर बनाते समय जंगल से उठा लाया था।

घर में रामेश्वर ने देखा एक लम्बी दाढ़ी और माथे में गोपीचंदन लगाए साधु बैठे हुए हैं और बड़ी सरस शैली में "मानस" का पाठ कर रहे हैं। बाद में उन्होंने बाँस की पोंगली में छेद करके बांसुरी बनाई और उस पर रियाज करने लगे। वह बांसुरी उनके लिए सदैव की संगिनी बन गई। नित्य की दिनचर्या में वह साधु की तर्ज पर खूब नहाते और नदी की रेत में पिंड बनाकर उस पर जल चढ़ाते, प्रणाम करते और उन्हें बंशी की धुन सुनाते थे। गांव के लड़के भी उन्हीं के साथ उनका अनुकरण करने लगे। गहिरा गांव में आदिवासियों के बीच स्वच्छता, स्नान–पूजन का रिवाज चल पड़ा।

यह आदिवासियों के बीच रामेश्वर की प्रारंभिक क्रांति थी, उन्होंने मुख्य रूप से निम्न क्रांति को नित्य जीवन में उतारने का प्रयास किया।

1) प्रथम क्रांति नहाना धोना था।

2) दूसरी क्रांति शुद्ध होकर पिंड पर जल चढ़ाना।

3) तीसरी क्रांति गौ पालन थी।

4) चतुर्थ क्रांति के रूप में तुलसी चौरा बनाकर तुलसी पर जल चढ़ाना था।

रमेश पारिवारिक रूप से संपन्न थे इसके बावजूद भी मोह माया से परे रहकर उन्होंने आदिवासी समाज के उत्थान हेतु असभ्य, शोषित वर्ग, मदिरा–मांस से लिप्त लोगों के मध्य रहकर उनके अंतःकरण प्रेम, भक्ति और शक्ति का ऐसा प्रभाव डाला कि आदिवासी समाज के लोगों ने सभी बुराई का परित्याग कर तुलसी माला और रामचरित मानस से अपना नाता जोड़ लिया।

रंजन एक्का
एम. एड. IV सेमेस्टर
IASE BILASPUR

सोशल मीडिया की महिमा

बड़ी निराली है सोशल मीडिया की दुनिया,
अपरम्पार है इसकी महिमा।
कभी नेता कोई अपनी 'इमेज' सोशल मीडिया पर
धुलवाता है।
कभी बंदा काम करके कुछ नया,
पूरी दुनिया में छा जाता है।
ज्ञान बरसता दिन रात 'वॉट्सेप' पर,
पढ़कर मन पवित्र सा हो जाता है।
कभी फेसबुक पर सनकी सा अपराधी कोई,
अपना अपराध लाइव कर जाता है।
बड़ी निराली है सोशल मीडिया की दुनिया,
अपरंपार है इसकी महिमा
दौर–ए–चुनाव तो होता है और भी खास महाशय।
माहौल पूरा नेता के पक्ष या विरोध में बन जाता है।
कोई सुबह–सुबह चाय–नाश्ते का करता पूरा प्रबंध,
"स्माईली" वाले का पूरा पेट भर जाता है।
जुड़ते जाते नये पुराने लोग हर दिन हर रोज यहाँ,
दिल से रप कोई बिरला ही किसी से जुड़ पाता है।
जुड़ते जाते नये पुराने लोग हर दिन हर रोज यहाँ,
दिल से पर कोई बिरला ही किसी से जुड़ पाता है।
सजती सुविचारों और प्रेरणाओं की बगिया हर दिन
जीवन में बदलाव अभी सौ में कोई एक लेकर आता है।
बड़ी निराली है सोशल मीडिया की दुनिया,
अपरम्पार है इसकी महिमा।

अभिषेक कुमार पाण्डेय
एम. एड. चतुर्थ सेमे.
सत्र 2017–19

अदृश्य पिंजरा

सभी आजाद होना चाहते हैं,
बंधनों से परे आसमां में उड़ना चाहते हैं।

कहते हैं पक्षियाँ आजाद होती हैं
पर क्या चिड़ियाँ सचमुच आजाद होती हैं?
हां उसके "पर" होते हैं
"पर" ले जाते हैं उसे जंगल,
पहाड़ और सागरों के पार
चिड़िया उड़ती है हजारों किलोमीटर
क्या उन्हें सैर करना अच्छा लगता है?
नहीं जो उन्हें उड़ाती है,
वह आनंद नहीं आवश्यकता है।।

मन पंछी मेरा भी उड़ना चाहे उन्मुक्त
भावनाओं के पिंजरे को तोड़कर
क्या इस पिंजरे से परे कोई पिंजरा नहीं?

सोचो भला पक्षियों की हर प्रजाति
क्यों सब जगह नहीं मिलती?
सुनहरा उकाब खुले मैदान में घोसला बनाता है,
और मैदानी उकाब जंगल में नहीं होता
किंगलेट क्यों जंगल में ही मिलते हैं
और सारंग क्यों जंगलों में नहीं होता
हर जंगल मैदान में लगी होती है अदृश्य बाड़ें
जो उन्हें कितनी नन्ही–नन्हीं दुनियाओं में बांट देती हैं।

क्या ऐसी ही मनुष्यों में भी अंतर नहीं
मनुष्य आजादी के लिए कहाँ भटकता है,
आजादी का भ्रम है उसे
सच तो यह है कि हमारे चारों तरफ है एक– "अदृश्य पिंजरा"

सेवक राठौर
एम.एड.प्रशिक्षार्थी (2017–19)
IASE बिलासपुर

वक्त का पड़ाव है

टूटे हुए ख्वाब हैं,
जल रहा अलाव है
हर शख्स है परेशां,
पल–पल यहाँ तनाव है,
डूबे हैं मद में सभी,
अक्ल का अभाव है
दर्द में डूबा गाँव है,
रिश्तों में जहाँ बिखराव है
अश्क का बहाव है
जीवन धूप–छाँव है
फिर मिलेंगे कैसे?
सदमों में डूबे भाव हैं
मोहपाश में फंसकर लोग,
लगा लेते हैं ख्वाईशों का रोग
संसार है मिथ्या, ख्याली पुलाव है
है यहां मतलब के साथी,
मानो जीवन में हो साढे साती,
प्रेम तो है मगर
वफाओं का अभाव है
जी रहे हैं सभी
दिखावटी उराव है
भाग्य की विडम्बना कहें इसे
वक्त का कैसा पड़ाव है
मजबूर है जिन्दगानी
सब कुछ यहाँ दांव है।

अस्तित्व

सोचते–सोचते बूढ़ा हो जाता
है इंसान
ये दुनिया नहीं किसी की,
सुन ले नादान
कितने तुर्रम खाँ आए, और
हो गये फना
तो तू किस खेत की मूली है भला
आया है क्यूं जग में, इसी की सोच
दीन दुखियों का बन सहारा, आँसू उनके पोछ
सीख और सिखा जगत को, मानवता का पाठ
इससे ही बढ़ेगी तेरी, लोक परलोक में ठाठं
फिर हे मनुज, समझ तू, आने के मकसद को
मिटा दे दिलों से, तमस और दहशत की
तुझ जैसे चंद, क्या बदलेंगे भूगोल और इतिहास
भलाई की सोच सबकी, जब तक हो श्वांस
खाली हाथ आया था, क्या यूं ही चला जाएगा
भला कब तक यहां कौन, तेरे लिए आंसू बहाएगा
संसार को मानकर मिथ्या, माया को छोड़
क्योंकि माया के लिए मची है होड़
समझ ले प्यारे, कथन के सार को
क्यूं भ्रम पाले बैठा है बेकार को
भूलने की आदत है, सदा से संसार को
पुण्य की गठरी, खोल, जाना है भव पार को
एक ना एक दिन, मिट जाएगा "अस्तित्व"
मानुष तन का, अपना है महत्व।

बिनीत कुमार मिश्रा
एम. एड. प्रशिक्षार्थी
(2017–19)

किताबों से दूर न हों

आज हम किताबों से दूर होते जा रहे हैं, यदि वर्तमान समाज पर दृष्टि डाली जाए तो ऐसा सोचना सच प्रतीत होता है। टी. वी., स्मार्टफोन, वीडियोगेम, इंटरनेट आदि के अत्यधिक प्रचलन व उपयोग से अब लोगों के पास इतना समय भी नहीं बचता कि वे किताबों को पढ़ें, कुछ ज्ञान व जानकारी इनसे प्राप्त करें। कुछ लोगों को तो किताबें पढ़ना ही पसंद नहीं होता, वे इनसे अपनी दूरी बनाए रखते हैं व पढ़ने के नाम पर घबराते हैं, जबकि कुछ लोग ऐसे होते हैं, कि जब वे विद्यार्थी जीवन में होते हैं, तब तक तो अपने पाठ्यक्रम की पुस्तकें पलटते या पढ़ते रहते हैं, परन्तु जैसे ही पढ़ाई खत्म होती है, वे इन्हें बंद करके रख देते हैं और फिर पलटकर भी नहीं देखते हैं। यदि देखा जाए तो परीक्षा में पास होने के लिए ही अधिकांश विद्यार्थी अपनी पुस्तकें पढ़ते हैं।

पुस्तकें मात्र ज्ञान के अभिवर्द्धन के लिये आवश्यक नहीं होतीं, वरन वे हमारी कल्पनाशक्ति व वैचारिक क्षमता को भी बढ़ाती हैं, परन्तु आज जिस तरह से हमारी युवा पीढ़ी किताबों से दूर हो रही हैं उसे देखकर यह अनुमान लगाना व आशंका जताना स्वाभाविक है कि उसकी स्मृति क्षमता कल्पना शक्ति विचार शक्ति में कमी आ सकती है। 10 व्यक्ति को जिस सकारात्मक दिशा में सोचना चाहिए, रचनात्मक ढंग से चीजों को समझना चाहिए, वैसा कुछ हमारी वर्तमान पीढ़ी व युवा पीढ़ी में कम दिखाई दे रहा है।

आज मनुष्य जीवन में तनाव, चिंता, अवसाद की जो समस्याएं पनप रही हैं, उसका एक मुख्य कारण अपरिपक्व सोच व जीवन के प्रति नकारात्मक नजरिया है। जब हम पुस्तकें पढ़ते हैं, घटनाओं, कहानियों व उदाहरणों को पढ़ते हुये बातों को समझते हैं तो हमएक नये व सकारात्मक ढंग से अपनी जिंदगी को देख पाते हैं। ऐसा करने पर न केवल हम नए ढंग से सोच पाते हैं, वरन अन्य लोगों को भी हम जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण दे पाते हैं। अच्छी किताबें हमें जीवन जीने का ढंग सिखाती हैं व एक नया दृष्टिकोण देती हैं। लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में हमारी पीढ़ी गूगल पर ही समस्याओं का समाधान ढूंढने व फेसबुक पर अपने दोस्त बनाने में इतना व्यस्त हैं कि उसके लिये बाकी सब कुछ व्यर्थ सा प्रतीत होता है। अब वैज्ञानिक भी यह मानने लगे हैं कि हमारी भावी पीढ़ी के लिए इस तरह किताबों से बढ़ती दूरी खतरे का संकेत हो सकती है।

पुस्तकों के विषय में अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन का कहना था– मैं कई पुस्तकों को पलटकर देखता हूं तो लगता है इन्हीं की बदौलत बुराई पर अच्छाई की एक दृढ़ आस्था मुझमें पैदा हुई है। पुस्तकें न केवल हमारी कल्पनाओं के द्वार खोलती हैं, बल्कि जीवन में तरक्की की राह भी दिखाती है।

पुस्तकें पढ़ने का सीधा असर हमारे व्यवहार व जीवनशैली पर पड़ता है। इनसे दूरी बढ़ने के

कारण ही आज व्यक्ति की जीवनशैली बदल रही है और इसका सीधा असर उसके मन मस्तिष्क पर अपनी छाप छोड़ने वाले टी. वी., सिनेमा, इंटरनेट व गैजेट्स आदि हैं, लेकिन इनसे हमारी रचनात्मक शक्ति विकसित नहीं होती बल्कि कई मायनों में दुष्प्रभावित होती है। किताबों से दूरी बनाने का सीधा मतलब यह है कि अपनी पढ़ने–लिखने की कला व योग्यता में कमी लाना। सामाजिक दृष्टिकोण से यदि देखा जाए तो आज के युवा अपने समाज, संस्कृति व साहित्य से दूर होते जा रहे हैं। जिसका नुकसान उन्हें आगे चलकर उठाना पड़ सकता है।

अगर दिन भर की व्यस्तता में पढ़ने का समय न निकाल सके तो भी प्रातः काल उठते समय या रात्रिकाल में सोते समय हर कोई इतना समय निकाल सकता है कि वह कुछ पढ़ सके और चिंतन–मनन कर सके। यदि इतना कर लिया तो नये दिन की एक अच्छी शुरुआत होगी।

श्रीमती अनिता वर्मा
एम. एड. प्रशिक्षार्थी (2017–19)

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधियों का योगदान

विद्यालय में विद्यार्थियों का विकास शिक्षण के दो क्षेत्रों में पहला संज्ञानात्मक और दूसरा सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र में होता है।

सह संज्ञानात्मक क्षेत्र, जिसमें साहित्यिक, सांस्कृतिक और खेलकूद गतिविधियों (प्रतियोगिता) को सम्मिलित किया जाता है।

आज विद्यार्थियों के विकास में साहित्यिक गतिविधियां जैसे– कविता पठन, कवि सम्मेलन, निबंध लेखन, क्रियाकलापों के प्रतिदिन कहानी, किस्से, कहानी वाचन, भाषण, पुस्तक वाचन (हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत भाषाओं) आयोजन की आवश्यकता है, वहीं विद्यालयों में सांस्कृतिक गतिविधियों में स्थानीय लोककला, लोकनृत्य, लोकगीत (समूह), गायन वादन, वाद्ययंत्रों के साथ संगीत कला, नाट्य, प्रहसन विद्यालयों में आयोजित होने के विद्यार्थियों के नेतृत्व क्षमता का विकास, अभिव्यक्ति और व्यक्तित्व का विकास होता है।

विद्यार्थियों में अनुशासन और भाई चारे की भावना भी इससे बढ़ती है। राष्ट्र और समाज में एकता का भाव आता है, जिससे समाज एकजुट होता है। अलग–अलग संस्कृतियों को समझने व देखने का अवसर प्राप्त होगा। इससे वे एक–दूसरे की संस्कृति–संस्कार के प्रति सम्मान का भाव रखेंगे N. C. F. 2005 में सांस्कृतिक विविधता की समझ विद्यार्थियों को समझाने और मूल्य शिक्षा की बात कही गई है जो यह संज्ञानात्मक गतिविधियों से सम्भव होता है।

लक्ष्मी कुमार निषाद
एम. एड. IV Sem.

सकारात्मक जीवन का महत्व

हमारी जिन्दगी में अच्छी बुरी घटनाएं घटती रहती हैं। कभी हमारा सामना सकारात्मक बातों से होता है तो कभी नकारात्मक बातों से, लेकिन जरा सोचिए कि हमारा ध्यान सिर्फ नकारात्मक बातों में ही लगा रहे हैं और हम अपने सामने खड़ी नकारात्मक पहलुओं को नजरंदाज करते जायें, तो क्या हमारे जीवन में तब सब सकारात्मक होगा? क्या हम खुश रह पायेंगे? इसका उत्तर आपको मिलेगा नहीं। तब सिर्फ नकारात्मक और बुरा ही घटेगा और हम निराश और दुखी जीवन जियेंगे। इसी बात को सकारात्मक जीवन के लाभ की कहानी के माध्यम से समझाने का प्रयास है।

एक दिन कॉलेज में एक प्रोफेसर ने कक्षा में प्रवेश किया और अपने सभी स्टूडेंट्स से कहा कि आज व उनका एक सरप्राइज टेस्ट लेने वाले हैं। सभी छात्र अचानक से टेस्ट की बात सुनकर घबरा गये, प्रोफेसर ने सभी छात्रों को प्रश्न पत्र सौंप दिया और उसके बाद परीक्षा शुरू करने के लिये कहा। प्रश्न पत्र देखकर हर छात्र के चेहरे पर आश्चर्य के भाव थे क्योंकि प्रश्न पत्र में एक भी प्रश्न नहीं थे, पृष्ठ के केंद्र में सिर्फ एक ब्लैक डॉट था। प्रोफेसर ने सभी के चेहरे पर हैरानी और उलझन के भाव देखे और उन्हें कहा– "मैं चाहता हूं कि आप अपने जवाब में उस चीज के बारे में लिखे, जिसे आप प्रश्न पत्र में नहीं देख पा रहे हैं।" उलझन में सभी छात्रों ने असाधारण कार्य शुरू किया। समय समाप्त होने पर प्रोफेसर ने यह बताना शुरू किया मैं आपको सोचने के लिए कुछ देना चाहता हूं। आप सभी में से किसी ने भी प्रश्न पत्र के सफेद भाग के बारे में नहीं लिखा, हर किसी ने उस पर ब्लैक डॉट पर ही अपना ध्यान केंद्रित किया है, क्या आप जानते हैं कि आपने ऐसा क्यों किया है? क्योंकि अक्सर हमारे जीवन में भी ऐसा ही होता है। हम सभी की जिंदगी में कई श्वेत पत्र हैं, जो हमें आनंद देते हैं, लेकिन हम इंसानों का ध्यान डार्क स्पोर्ट्स पर पर ही केंद्रित रहता है। यह डार्क स्पॉट्स एक बड़े सफेद कागज की बहुत छोटी काली बिंदु हैं, जो हमें दुख, लालच, गुस्सा और ईर्ष्या देती है, जिंदगी में कई बार हम अपने दोस्तों या परिवार वालों के साथ बिताये गये अच्छे पलों को भुला देते हैं जो सफेद कागज का प्रतीक है और छोटे–छोटे मन–मुटावों को पकड़ कर बैठ जाते हैं। यह सफेद कागज की छोटी–छोटी काली बिंदुओं के समान है।

हमारा जीवन एक उपहार है, जिसे भगवान ने हमें प्यार और देखभाल के साथ दिया है। हमारे पास हमेशा खुश रहने के लिये कोई न कोई मौके जरूर होते हैं लेकिन हमारी और पाने की चाहत इन मौकों को ढंक देती है। इसके कारण हमारा जीवन के प्रति दृष्टिकोण नकारात्मक हो जाता है। यही वजह है कि जब मैंने आप सभी को प्रश्न पत्र की जगह एक काली सफेद कागज और उसमें एक काली बिंदु दी तो आप सभी ने इतने बड़े सफेद हिस्से को छोड़कर अपना ध्यान एक छोटे से काले बिंदु पर केंद्रित किया। इन सबके माध्यम से मैं आप सभी को सिर्फ इतना बताना चाहती हूं कि सभी अच्छाई और सकारात्मकता से अपना ध्यान इतना भी हटायें कि महज एक छोटी सी गलती या नकारात्मकता उस सभी पर हावी हो जाए। अतः नकारात्मक परिस्थितियों में भी सकारात्मकता की किरण ढूंढें तभी आप सफल और खुशी भरा जीवन जी पायेंगे। अपनी जिंदगी के हर एक पल का आनंद सकारात्मक जीवन जीकर उठायें। सकारात्मक बातों को सोचकर अपने रिश्तों और व्यक्तिगत जीवन को हानि ना पहुंचायें।

श्रीमती नीता वर्मा
एम. एड. द्वितीय सेमेस्टर

विज्ञान और विकास

यदि व्यक्तिगत रूप से मैं अपनी बात करूं तो विज्ञान एक ऐसा विषय है जो पिछले 30–32 वर्षों से मेरे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का एक हिस्सा रहा है। छात्र जीवन में त्रिभाष सूत्र के अंतर्गत पढ़ने वाले दो विषयों हिन्दी और अंग्रेजी को उत्तीर्ण करने का आसान तरीका। या विज्ञान के चमत्कार का निबंध याद कर लो, दोनों भाषाओं के प्रश्न पत्रों में निश्चित रूप से लिखो। प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक निबंध के स्वरूप में थोड़ा–थोड़ा सा सुधार एवं विकास कर निबंध लिखता रहा एवं अंक प्राप्त करता रहा। कभी–कभी तो ऐसा लगता कि यह निबंध की एक विषय वस्तु न होकर अपने आपमें संपूर्ण विषय है।

समय के साथ जिम्मेदारी बदली। छात्र से शिक्षक बना। अब निबंध की तैयारी अपने लिए नहीं, छात्रों हेतु होने लगा। कभी–कभी मन में प्रश्न उठता कि यदि लेखन क्षमता का विकास (या परीक्षण) ही करना है तो साल–दर–साल एक ही टॉपिक का दोहराव क्यों? और इस प्रश्न के उत्तर (निष्कर्ष) तक भी अनुभव ने ही पहुंचाया। आज दैनिक जीवन में विज्ञान एवं उससे संबंधित उत्पाद के प्रयोग तथा उनके प्रभावों को देखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि प्रत्येक संकाय एवं स्तर के छात्र को इसकी जानकारी हो एवं इसके संबंध में जागरूकता हो।

यातायात के साधनों, टी. वी., फ्रिज, कूलर, ए. सी. जैसी मनुष्य के जीवन को भौतिकवादी तथा आरामदायक बनाने वाली वस्तुओं की सूची तो बहुत लंबी है, परन्तु इनके उपयोग के साथ–साथ हमारी कुछ जिम्मेदारियां भी हैं। अक्सर देखने–पढ़ने में आता है कि छात्र वैज्ञानिक आविष्कारों संबंधित नकारात्मक पहलू की चर्चा करते समय परमाणु बम एवं मिसाइल्स का उदाहरण देते हैं और कहा जाता है कि हम विनाश के ढेर पर बैठे हैं, केवल एक चिंगारी भड़कने की देरी है। बात बिल्कुल सही है एवं तथ्यपूर्ण है, परन्तु यह खतरा तो कंडीशनल है, अर्थात् ऐसा हो सकता है। हम उस बात की तो चर्चा ही नहीं करते जो वास्तव में हो सकता है। सही हो रहा है और इस लेख को लिखने का मेरा उद्देश्य उन्हीं खतरों के संबंध में सचेत करना या जागरूकता लाना।

मैं एक छोटे से नगर (जहाँ विकासखंड मुख्यालय स्थित है) का निवासी हूं। 80 के दशक तक जिसकी जनसंख्या लगभग 5000 थी। मुझे याद है उन दिनों यहां केवल एक ही मेडिकल स्टोर हुआ करता था और उसमें भी कुछ निश्चित संख्या में ही ग्राहक आया करते थे। आने वाले ग्राहकों की संख्या मुझे आज भी याद है इसके पीछे भी एक दिलचस्प कहानी है। मेडिकल स्टोर के मालिक का लड़का एकमात्र ऐसा शख्स था जिसके पास बैट हुआ करता था। हमारी क्रिकेट टीम के बाकी सदस्य मिलकर तथा आपस में चंदा करके क्रिकेट का बाल (जो कि कार्क का बाल होता था) तो खरीद लेते थे। स्टम्प के विकल्प के रूप में कुछ डंडे या सरकण्डे तोड़ लिया करते थे। परन्तु बैट पर आकर बात रुक जाती थी और हम लोग मेडिकल स्टोर के आसपास मंडराते रहते कि कब उसके पिताजी आयेंगे और उसे कार्यमुक्त करेंगे। यदि उनको आने में विलंब होता या ठीक उसी वक्त दो चार ग्राहक इकट्ठे आ जाते तो

हम लोग उनको इस निगाह से देखते कि यही हमारी खुशी के मार्ग में सबसे बड़े बाधक हैं।

आज यहाँ की जनसंख्या लगभग 10,000 हो गयी है। व्यवसाय के क्षेत्र भी विस्तृत हुए हैं परन्तु अगर किसी क्षेत्र में गुणात्मक वृद्धि हुई है तो वह है मेडिकल स्टोर्स में। आज यहाँ 10 मेडिकल स्टोर्स संचालित हैं। उनमें भी कुछ स्टोर्स तो ऐसे हैं कि वहाँ दवाई लेने हेतु लाइन लगानी होती है। मैं कहना यह चाहता हूं कि विज्ञान के इस विकास ने देश की एक बड़ी आबादी को इस स्थिति में ला दिया है कि उनके लिये भोजन से ज्यादा अनिवार्य दवाइयां हो गयी हैं।

विज्ञान का क्षेत्र तो इतना व्यापक है कि इस संबंध में पूरी चर्चा करना लगभग असंभव है। मैं एक कृषक परिवार से संबंधित हूं अतः इसी क्षेत्र से जुड़े परिवर्तनों से ज्यादा भिज्ञ हूं। यह बात तो बिल्कुल सही है कि आज कल्टीवेटर या रोटावेटर की सहायता से बड़े–बड़े खेतों को चंद घंटों में फसल की बुआई हेतु तैयार होते देख सुखद अनुभूति होती है या फसल की कटाई मिंजाई हेतु हारवेस्टर किसी जादू से कम नहीं लगता। अनाज की उपज भी बहुत बढ़ गयी है, हम जिस मात्रा एवं अंतराल में रासायनिक उर्वरक एवं दवाइयों का उपयोग करते हैं उसे देखकर तो कभी–कभी मन भ्रमित हो जाता है कि हम फसल उत्पन्न कर रहे हैं या जहर? हमारी पूरी किशोरावस्था हमने जून के अंतिम एवं जुलाई के प्रथम–द्वितीय सप्ताह खेतों के परिवार के साथ कृषि कार्य में सहयोग करते हुए बिताया है। सुबह सात बजे से दोपहर 12 बजे तक अपने कुछ नौकरों के साथ हल चलाते थे। इस बीच लगभग 10 बजे हमारी माताजी हम सभी के लिए नाश्ता लेकर खेत में आया करती थीं। नाश्ते में होता था पनपुरूवा (चावल व उड़द के आटे की बनी और अंगार में पकाई गई रोटी) तथा टमाटर की चटनी। कार्य की थकान एवं भूख तो होती ही थी, यह स्वाद मुझे आज तक किसी दूसरे व्यंजन में प्राप्त नहीं हुई। सिर्फ उसी की बात नहीं, धान बाड़ी से तोड़कर लाने वाले ताजे–ताजे मक्का, मूंगफली, अनाज या सलाद के रूप में प्रयोग की जाने वाली कच्ची मूली या प्याज किसी में भी मुझे वो प्यारा स्वाद नहीं मिलता। केमिकल्स एवं फर्टिलाइजर्स के प्रयोग ने उपज तो बढ़ा दिया, परन्तु स्वाद हमसे छीन लिया।

संचार साधनों ने तो वास्तव में क्रांति ही ला दिया है। मोबाइल हैंडसेट वैसे तो बहुत छोटा उपकरण है परन्तु है कमाल का। बना था बात (संपर्क) करने के लिए परन्तु बन गया है मनोरंजन का साधन विशेषकर बच्चों के लिए। हर खेल घर में बैठे–बैठे मोबाइल हैंडसेट में खेल लो। न खेल सामग्री की आवश्यकता है, न मैदान की, न दोस्तों की। वैसे कुछ विशेष खेल सामग्री की आवश्यकता तो हमें भी नहीं पड़ती थी परन्तु दोस्तों का होना अनिवार्य था और हमारी सामाजिकता के विकास का सबसे सशक्त माध्यम भी वही था। बच्चों की इस आधुनिक जीवन शैली ने स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है और अभिभावक परेशान हैं, सप्लीमेंट्री फूड, पौष्टिक भोजन, हाइजिन, घर के लिए अलग ड्रेस, स्कूल के लिए अलग ड्रेस, अलग से नाइट सूट आदि–आदि। हमारे पास तो दो वक्त के नाश्ते और दो वक्त के भोजन के अतिरिक्त कोई सप्लीमेंट्री फूड नहीं होता था। एक खाकी रंग का पैंट और सफेद शर्ट। उसमें भी अक्सर पैंट के पीछे दोनों तरफ लगा हुआ पैबंद। फिर भी हम इस पीढ़ी से ज्यादा स्वस्थ थे।

कुछ माह पूर्व (सितम्बर 2018 में) मैं पं. सुन्दरलाल शर्मा विवि. के एक सेमिनार में शामिल हुआ था। वहां के एक वक्ता को मैं संदर्भित करना चाहूंगा जिनके अनुसार वर्तमान में दक्षिण–पूर्व एशिया में लोगों के खान–पान का स्तर जिस प्रकार का है यदि ऐसा ही चलता रहा तो सन् 2025 तक इस क्षेत्र के लगभग 25 प्रतिशत लोग कैंसर की बीमारी से ग्रस्त हो जायेंगे।

मेरा उद्देश्य विज्ञान की प्रगति को हतोत्साहित करने का बिल्कुल नहीं है। आज की स्थिति में ऐसी हिमाकत कोई भी नहीं कर सकता। मैं बस इतना चाहता हूं कि इसके प्रयोग के संबंध में लोगों में जागरूकता आये। जैविक खेती को अपनायें, उत्पादन कम होगा अतः उत्पाद की कीमत तो ज्यादा होगी अतः जनता को भी इस बात को स्वीकारना होगा कि भले ही महंगा हो परन्तु सेहतमंद हो। अभिभावकों को चाहिए कि अपने बच्चों को अनिवार्य रूप से आउटडोर गेम के लिए प्रोत्साहित करें। बचपन से ही छोटे–छोटे घरेलू कार्यों में उनका सहयोग लें। दादी–नानी के नुस्खों से उचित खान–पान से, प्राकृतिक विधियों से शरीर की आंतरिक शक्तियों का विकास करें और विज्ञान को अपना कार्य करने दें।

नारायण प्रसाद पटेल
M. Ed. II Semester

भोजली गीत

देबी गंगा, देबी गंगा।
लहरा तुरंगा, हो लहरा तुरंगा।
हमरो भोजली ओ दाई के
भीजै आठो अंगा।।
हा हो देबी गंगा
हा हो देबी गंगा।
माड़ी भर जोंधरी पोरिस कूसियारे
हो पोरिस कूसियारे
जल्दी–जल्दी बाड़ेया भोजली
होइहा होसियारे।।
हा हो देबी गंगा।
आसा खेलने, पासा खेलने
खेलि डारेन, डंडा–।
हो खेलि डारेन डंडा
हमरो भोजली दाई बर
सोन के हण्डा।।
हा हो देबी गंगा।
एक हाथ खीरा अऊ नौ हाथ बीजा
हो नौ हाथ बीजा।
हमरो भोजली
दाई संग
रही जाबो तीजा।।
हूंर हो देबी गंगा
हा हो देबी गंगा।
सावन बीते, भादो बीते, बीते सबो मासे,
हो बीते सबो मासे
अगले बछर भोजली
मिलबो तुंहर साथे
हा हो देबी गंगा
हा हो देबी गंगा।

श्रीमती रमाकान्ति साहू, प्राध्यापक

You and a PENCIL

"When what is inside comes out; it can truly make a difference"

When the pencil was made for the first time the pencil maker gave the pencil some crucil, pertinent and important instructions, which can actually give us very inspiring lessons to be applied in our own lives. What's truly important actually lies within you. The pencil has two aspects to it. The outside which is its beautiful, colorful wooden casing and the lives as well we have the outside. The outside is our personality, our looks, our presence, he inside is..... about being a genuine, sincere person.

The outside is about charisma, our style, our presentation, how we speak, our confidence, our mannerisms; the inside is about our character, our morals, ourintegrity, the principles that we hold sacred in our lives. The outside is about valuables. In the world today we are accepted more for what we have than who we are. We are accepted for what we wear than who we are. We are accepted more for what we drive than who we are. We are accepted more today for where we live than who we are. Valuables seem to be so crucial and overly emphasized. In the modern society the outside is about valuables. The inside about our values. While we focus on the outside we shouldn't forget the inside. There's a great need to find that right balance. We live in the real world so, that outside is important. But our focus on the outside should never be at the so, that outside is important. But our focus on the outside never be at the cost our inner world. Material education teaches how to develop our outside,

our externals, all our skills, our talents, which can buy us all the valuables to live in the real world. Spiritual education teaches us how to focus on the inside world. And therefore, there is such a great need to find that right balance between our personality and being a genuine person; our charisma and our character, our valuables and the values. Yes, the ***first instruction*** that the pencial maker gave to the pencial was what's of true importance lies within you. ***Second Instruction-*** Unless what is within you- the lead; you cannot make an impact. In our lives as well, unless what is within us come out we cannot make an impact either on our lives or on other. There's a latin word ***'educare'*** from which the English word 'education' is derived means to bring out: To bring out the virtue, the qualities of our soul. Yes, the personality can impress, but being a genuine person can inspire the life of others. In order to make an impact we need to live by those sacred values, principles and ethics which are the very essence of our core our souls. Third Instruction- Unless you go through sharpening before the sharp lead comes out and makes an impact. Similary in life, unless you go through painful sharpening the best thing within will never come out. NO PAINS NO GAINS. Last Instruction- Correct your mistakes. When you write you will most certainly end up with mistakes; what truly great is that right behind you is attached an eraser and you can actually correct that mistake and once again write the right thing. Even in our lives we can make so many mistakes and what's amazing is God has gives us the opportunity, the chance to erase them, to correct them and to rewrite our stories.

Amit Massey

M. Ed. Fourth Semester (2017-19)

14 फरवरी

14 फरवरी यह सुनकर ही मन में एक अलग सी खुशी जाग उठती है। मानो किसी ने जीवन में प्यार के रंगों को बिखेर दिया है। नई आशा, खुशी, उम्मीद हृदय में हिलोरें मारने लगती हैं। क्योंकि यह दिन प्यार और प्यार करने वालों को समर्पित है। 14 फरवरी अर्थात "वेलेंटाइन डे", "प्यार का दिन" इस दिन हर कोई अपने मन की भावनाओं को एक–दूसरे के सामने प्रकट करता है, लेकिन इस बार का "14 फरवरी" हमारे लिए प्यार का दिन नहीं बल्कि "शोक का दिन" रहा, 14 फरवरी 2019 को कश्मीर के पुलवामा में आतंकियों के अचानक हुए हमले ने पूरे देश की खुशी को शोक में बदल दिया। यह 14 फरवरी का दिन प्यार का दिन न होकर शहीद और शोक के दिन में बदल गया, जिसमें कई माताओं, बहनों, पत्नियों और बेटियों ने अपने प्यार को खो दिया, इस हमले में हमारे कई जवान शहीद हो गये, और उनके परिजनों के लिए यह दिवस शोक और गम के दिवस में परिवर्तित हो गया।

उन शहीदों की माँ ओ, माताओं, पत्नियों, बहनों और बेटियों को मेरी यह कविता समर्पित है। जिन्होंने इस देश की रक्षा के लिए अपने बेटे, पति, भाई और पिता को हमेशा के लिए खो दिया और इस परिस्थिति का अदम्य साहस के साथ डटकर सामना किया।

"साहस"

हे नारी
तेरे साहस को प्रणाम।
तेरे धैर्य और तेरी शक्ति को प्रणाम।।
काल कूट का वह दिन जब
तेरे जीवन में आया होगा।
तूने कैसे अपना साहस
जुटाया होगा।
अपना सौभाग्य जब
तूने खोया होगा।
तेरे हृदय की गहराईयों
में विषाद पूर्ण झरना
फूट–फूट कर रोया होगा।
पर तूने अपन अंदर
एक खाई सा बनाया होगा।
तभी तो तेरी सारी वेदना,
तेरा सारा पीर उसमें समाया होगा।
हे नारी
तेरे साहस को प्रणाम।
तूने जब अपने जीवन
के सारे रंग और सारे अरमानों
को दफनाया होगा तभी तो
साहस का रंग तुझमें समाया होगा।
देखकर जी लूंगी अपने बच्चों का चेहरा,
जब यह विचार तेरे मन में आया होगा
तब जाकर तूने सशक्त **" नारी "**
का रूप अपनाया होगा।
हे नारी तू ईश्वर की
अद्भुत रचना है, तुझे
बना कर तो ईश्वर ने भी
सुकून पाया होगा।
हे नारी
तेरे साहस को प्रणाम।।

सिम्पल रजक
एम. एड. चतुर्थ सेमेस्टर

शिक्षकीय भूमिका- नैतिकता के लिए

जब मैं थोड़े समय लगभग 25 साल पूर्व के शिक्षा और शिक्षक प्रणाली तथा वर्तमान समय के शिक्षक और शिक्षा प्रणाली की तुलना की दृष्टि से सोचता हूं तो एक मुख्य अंतर पाता हूं कि आज के शिक्षक अपने विद्यालयों मे उस तरह के रोल मॉडल नहीं बन पा रहे हैं, जिस तरह हमारे 'गुरुजी' लोग हुआ करते थे। आज शिक्षक सभी प्रकार के तकनीक व सुविधाओं से परिपूर्ण है फिर भी उनकी छाप विद्यार्थियों पर उस तरह नहीं है जिस तरह पहले के तमाम प्रकार के कठिनाईयों से जूझते 'गुरुजी' लोगों का था। इसका कारण यह माना जा सकता है कि ाज से 25-30 वर्ष पूर्व छात्रों पर केवल अपने छात्र साथियों और शिक्षकों का ही प्रभाव, उनकी सोच तथा क्रियाकलापों में हुआ करता था। जबकि वर्तमान में छात्रों की लगभग समस्त गतिविधियों में तकनीक सिनेमा से लेकर समाज के सभी घटनाओं का प्रभाव रहता है। आज के विद्यार्थियों में सफलता दर अधिक है किंतु संस्कार मूल्य की बात करें तो कुछ कमी दिखाई सी पड़ती है। इसका कारण तलाशने जायें तो यह बात भी सामने आती है कि शिक्षकों के नैतिक आचरण का प्रभाव उनके विद्यार्थियों पर पड़ता है और यह नैतिक मूल्य कक्षा में दिये गये व्याख्यान की तुलना में आचरण, व्यवहार में अधिक प्रभावी रूप से परिलक्षित होना चाहिए, जो आज कहीं दिखाई नहीं पड़ता।

वर्तमान में शिक्षकीय व्यवहार एवं गरिमा पर अत्यंत गंभीर प्रश्नचिन्ह है? शिक्षक सदैव से समाज में आदर्श भूमिका को ढ़ोते आए हैं। एक शिक्षक कभी रिटायर नहीं होता और न ही शिक्षकीय कर्तव्य से कभी विमुख हो सकता है, किंतु कहीं-कहीं इस ओजोन परत में भी छिद्र दिखाई पड़ रहा है जिससे समाज नैतिकता मूल्यविहीन छात्र वर्ग का कैंसर पा रहा है। यद्यपि एक शिक्षक से सदैव अनुशासित व्यवहार तथा मर्यादापूर्ण जीवन की प्रत्याशा रखना मानवीय व्यवहार से परे ही माना जायेगा तथापि हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि शिक्षक ही क्रांति का शंखनाद करने वाले छात्र समूह को निर्मित करता है। आज प्रोग्रेसिव होने के नाम पर हम ऐसे मूल्यों को दरकिनार करते जा रहे हैं जो दीर्घकालीन व्यवस्था में समाज की ताना-बाना बुनने में धागों की तरह रहे हैं। समाज का स्वरूप बदलता है, विचारधारायें बढ़ती हैं किन्तु शाश्वत मूल्यों के प्रति आग्रह-अनुग्रह नहीं बदलता और यही शाश्वत मूल्य, शिक्षकों के द्वारा उनके छात्रों को सनातनी परम्परा के रूप में मिलते रहे हैं जिसकी कमी आज सभी प्रकार के विद्यालयों में दिख रही है। हम नरम-कठोर अनुशासन या कान्वेंट शैली की भी बात करें, तो हम उस छात्र वर्ग को समाज और उनकी परंपरा से जोड़ पाने में लगभग असफल से हैं।

मशीनों के दौर में हम मशीनी काबिलियत वाले शानदार विद्यार्थी तैयार कर रहे हैं जिसमें दिल से ज्यादा दिमाग कार्य करता है। संवेदना, चिंतन, आस्था जैसे मानवीय मूल्य उतने प्रासंगिक नहीं माने जा रहे, जितनी सफलता को माना जा रहा है। ऐसे क्रांतिक परिवर्तन के दौर में शिक्षकों की भूमिका अत्यंत चुनौतीपूर्ण हो गई है उनको दोहरी भूमिका निभानी पड़ रही है। जहां वर्तमान नवीन शिक्षण पद्धति में तकनीकी ज्ञान के साथ सूचना एवं ज्ञान के विस्फोट के लिए संयोजक की भूमिका निभानी है वहीं दूसरी ओर उनको समाज के लिए एक संवेदनशील, नैतिक, चिंतनशील एवं राष्ट्रहित से ओतप्रोत सदाचारी छात्र वर्ग तैयार करने की भूमिका का भी निर्वहन करना है। शिक्षकों की प्रथम प्रकार की भूमिका के लिए आज का पाठ्यक्रम हजारों विकल्प के साथ उपस्थित है जहां उनका आंकलन और मूल्यांकन भी उनके छात्रों की एकपक्षीय आंकिक

योग्यता के आधार पर की जा रही है किन्तु दूसरी ओर उनकी दूसरी प्रकार की भूमिका का निर्वहन पाठ्यक्रम से ईतर संभव नहीं हो पा रहा है जिसकी चिंता शायद हमें भी नहीं। मानवीय मूल्यों के विकास की शिक्षा, नैतिकता की शिक्षा, जीवन मूल्यों की शिक्षा, इन समस्त प्रकार के शिक्षा का केन्द्र बिंदु हम शिक्षक ही हैं। क्या हम इस प्रकार की शिक्षा के लिए भी उसी परिमाण में प्रयासरत हैं जितना अंकों के आधार पर परिणाममूलक शिक्षा देने के लिए है? प्रश्न यह भी है कि आखिर किस तरह हम धर्म निरपेक्ष मूल्यों के साथ नैतिकमूल्यों को भी शिक्षकीय आचरण में स्थान देने के लिए शिक्षकों को स्वायत्तता दें? एक शिक्षक क्या संवेदनशील, चिंतनशील भी हो सकता है जबकि उसकी नैतिक भूमिका शून्य होती जा रही है? यह भूमिका शून्य क्यों होती जा रही है? इसके कारण क्या–क्या है? इन बिंदुओं पर विमर्श क्या व्यक्तिगत भी हो सकता है? क्या ये केवल प्रशासनिक जवाबदेही है? क्या ये केवल सामाजिक चिंता है?

"शिक्षक का स्तर ही समाज का स्तर निर्धारित करता है।" गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की ढ़ोल क्या बिना नैतिकता के पीटी जा सकती है? एक शिक्षक के विकास की प्रक्रिया में क्या इन मूल्यों के विकास के लिए पर्याप्त संभावना हम दे पा रहे हैं? या केवल रिफ्लेक्शन के आधे–अधूरे समझ से इसकी पूर्ति हो सकती है।

हम सभी शिक्षकवृदों से अपनी शिक्षकीय भूमिका में इन चिंतन बिंदुओं को भी सम्मिलित करने के आग्रह के साथ–

आपका अपना साथी

चन्द्रकांत तिवारी,एम. एड.चतुर्थ सेमेस्टर

तुम कितनी प्यारी लगती जिन्दगी

1. दौड़ती–भागती, हंसती हुई
   मुस्कराती जिन्दगी,
   कभी थककर, कभी सहमकर,
   कभी डर सी जाती जिन्दगी
   फिर भी तुम कितनी प्यारी
   लगती जिन्दगी।
2. आशा और निराशा के भंवर में,
   डूबता उतरता मेरा मन,
   हर क्षण, हर पल सामने खड़ी
   होती है एक नयी जंग
   हारती–डूबती उन अंधेरों में,
   उम्मीद का लौ दिखाती जिन्दगी,
   तुम कितनी प्यारी लगती जिन्दगी।।
3. सब कहते हैं, दुनिया बड़ी कठोर है।
   स्वार्थ का घेरा, फैला चारों ओर है।
   इस लेन–देन की दुनिया में सबको
   नफा की प्यास है
   बिना कुछ दिए, सबको सब कुछ
   पाने की आस है।
   मोलभाव के इस बाजार में मुझे
   अनमोल रिश्ते दिए जिन्दगी,
   तुम कितनी प्यारी लगती जिन्दगी,
   तुम कितनी प्यारी लगती जिन्दगी।

(महाविद्यालय परिवार को समर्पित,
जिन्होंने मुझे सदैव सकारात्मक रखा)

श्रीमती सावित्री भारद्वाज
बी. एड. (द्वितीय वर्ष) (प्रशिक्षार्थी)

भाषा का महत्व

क्या आपके मन में कभी यह सवाल आया कि अगर भाषा न होती, तो क्या होता? भाषा के बिना दुनिया कैसी होती? अगर भाषा न होती, तो पढ़ना-लिखना संभव न होता। दुनिया में अगर अखबार न होते न किताबें होतीं और न टीवी चैनल। सिनेमा और इंटरनेट भी नहीं होता, तो शायद हम एक-दूसरे के बारे में जान भी न पाते। यदि ज्ञान न होता और न निश्चित तौर पर यह सभ्य संसार भी न होता। कल्पना कीजिए कि मशीनें-टेक्नोलॉजी और उद्योग-धंधे भी न होते तो हमारी अर्थव्यवस्था भी नहीं चल पाती। ऐसा क्यों? भाषा के बिना ये सब संभव क्यों नहीं था? इसलिए कि अगर भाषा न होती तो यह जानकारियाँ एक-दूसरे तक, दूसरे से तीसरे तक कैसे पहुंचती। फिर उससे भी आगे अगली पीढ़ियों तक पहुंचती रहीं। इसलिए हर नई पीढ़ी अपनी पिछली पीढ़ी के अनुभवों से सीखकर ज्यादा बुद्धिमान होती गई और पिछली पीढ़ी के मुकाबले उनसे ज्यादा विकास किया।

इसलिए 1940 में गुटनबर्ग के प्रिंटिंग प्रेस के अविष्कार के बाद जब छपाई का नया तरीका सामने आया, तो एक नई भाषा क3ांति की शुरुआत हुई। उसके बाद दुनिया की तरक्की लगातार तेज होती गई। क्योंकि छपाई के जरिए एक जगह के ज्ञान और अनुभव का दूसरी जगह पहुंच पाना और उसे लंबे समय तक सुरक्षित रखा जाना बहुत आसान हो गया। आप पाएंगे कि इस भाषा क्रांति के पिछले 600 वर्षों में दुनिया में जितना विकास हुआ, उसका शायद हजारवां-लाखवां हिस्सा भी उसके पहले लाखों सालों में नहीं हुआ होगा। यह क्यों हुआ? यकीनन भाषा के विस्तार के कारण हुआ। आज कम्प्यूटर, मोबाइल और इंटरनेट का जमाना है इसलिए कोई भी सूचना, संदेश या विचार सेकंड भर में दुनिया में कहीं भी पहुंच सकता है।

इसलिए भाषा के महत्व को समझिए। मानव जाति का अब तक जो विकास हुआ, हम आज जो इतनी आधुनिक और विकसित दुनिया देख रहे हैं, उस सबके पीछे, उस सबकी बुनियाद में भाषा ही है। इस बात को अच्छी तरह समझ लीजिए कि आपकी भाषा जितनी समृद्ध होगी, आप भी और आपका समाज व आपकी सभ्यता-संस्कृति भी उतनी ही समृद्ध और विकसित होगी।

यहां इतनी विस्तारपूर्वक बात इसलिए की गई कि आज हम देखते हैं कि नई पीढ़ी में भाषा को लेकर ज्यादा-जागरूकता नही है। इसके लिए नई पीढ़ी को दोष देना ठीक नहीं है। उन्हें दरअसल किसी ने बताया ही नहीं कि हमारे जीवन में भाषा का क्या महत्व है और क्यों हमें अपनी भाषा को लेकर बहुत सचेत रहना चाहिए।

हर भाषा का अपना अनुशासन होता है। शब्द कैसे लिखे जाएं, कैसे बोले जाएं, वाक्यों में उनका सही प्रयोग कैसे किया जाए आदि। जब आप इन बातों को ध्यान में रखेंगे कि आप सही शब्द बोलें और लिखें, तो आप अपने आप भाषा के अनुशासन में बंधेंगे। जहां किसी शब्द को लेकर दुविधा हो, वहां शब्दकोष को देखने की आदत डालिए। जहां व्याकरण को लेकर कोई सवाल हो, तो वहां व्याकरण की किसी अच्छी किताब की मदद लीजिए। जहां किसी शब्द का सही उच्चारण जानना हो, तो किसी जानकार से पूछिए। अगर आप अनुशासन मानने लगेंगे,तो जीवन के दूसरे क्षेत्रों में भी अनुशासितरहने की आदत अपने-आप पड़ जाएगी। याद रखिए कि अनुशासन सफलता की बहुत बड़ी कुंजी है। अच्छा हो कि एक अच्छा शब्दकोश और व्याकरण की कोई अच्छी पुस्तक घर में रखें। इसके लिए गूगल की मदद न लें। शब्दकोशों को भाषा के विद्वान वर्षों की कड़ी मेहनत के बाद तैयार करते हैं और उसमें केवल प्रमाणिक जानकारी देने की कोशिश करते हैं, जबकि इंटरनेट पर उपलब्ध बहुत से शब्दकोश अधकचरी जानकारियों से भरे होते हैं। भाषा आपको संस्कार भी देती है। जब जैसी भाषा आप लिखेंगे और बोलेंगे, वैसी ही बनेंगे।

संकलित

श्रीमती कल्पना यादव,एम. एड. चतुर्थ सेमेस्टर

" दूरद्रष्टा श्रद्धेय - शिवाजी कुशवाहा जी"

वार्षिक श्राद्ध (06 मई 2019) यादों की श्रृंखलाओं के साथ सम्पन्न हुआ, लेकिन अभी भी उनकी आहट महाविद्यालय में महसूस होती ही है। इतने जल्दी उनका विस्मृत होना संभव ही नहीं। 20 अप्रेल 1999 को रेडियो स्टेशन बिलासपुर से प्रसारित उनकी रचना- आज के पारिवारिक माहौल में बुजुर्गों का स्थान मेरे हाथ अचानक लग गया उसे उनकी याद में, उन्हीं के शब्दों में आप तक प्रेषित कर रहा हूं। मुझे आज भी वह प्रासंगिक लगता है।

" आप भी कहाँ.....तो नहीं रह गए? "

संकलनकर्ता

डॉ. उल्लास व्ही वारे

सहा. प्राध्यापक

आज के पारिवारिक माहौल में बुजुर्गों का स्थान

प्रसारणः 20 अप्रैल 1999

आप भी कहाँ भूले होंगे बचपन में सुनी कहानी उस अति महत्वाकांक्षी बेटे की। उसे पदोन्नति का लालच दिया उसके साहब ने यह कहकर '' यदि तुम अपनी मडर यानी मां के हार्ट का चोटा-चोटा टुकड़ा मेरे सामने प्रजेन्ट करेगा टो अम टुमको प्रमोशन डेगा, अ वेरी बिग प्रमोशन।'' पदोन्नति की इतनी बड़ी शर्त ने उस युवक का सुकून छिन लिया। घर में सामान्य दिखने की कोशिश की उसने, परन्तु माँ से भी छुप सकी है बेटे की परेशानी? पूरी बात सुनने के बाद रोक न सकी माँ अपनी हंसी। इतनी छोटी-सी बात और इत्ता परेशान है तू? अरे मैं तो पके आम की तरह हूं, न जाने कब टपक पड़ूं। चल, देर ना कर। ''महत्वाकांक्षी मदांध बेटे ने माँ के शरीर को काटा और फिर उसका हृदय निकाल कर किए उसके छोटे टुकड़े। सभी टुकड़ों को एक रुमाल में समेट कर बदहवास-सा भागने लगा वह अपने अफसर के घर की ओर। रास्ते में ठोकर लगी और गिरा वह चारों खाने चित्त। तभी माँ के बिखरे हुए हृदय-खण्डों में से एक कराह कर बोला अरे! कहीं चोट तो नहीं लगी मेरे लाल!''

उंह यह तो एक कहानी है, अतिरंजित। ऐसा कहकर आप मुंह बिचका सकते हैं। परन्तु क्या इंकार कर सकते हैं आप इस बात से कि आज भौतिकवादिता की गिरफ्त में कैद हम लोग जिस कदर अपने बुजुर्ग माता-पिता की घोर उपेक्षा करते हैं वह उनके दिल के टुकड़े-टुकड़े काटने से कम हृदयविदारक नहीं। पाश्चात्य देशों की तर्ज पर अब हमारे मुल्क में भी बनने लगे हैं Old People Houses हृदयहीनता की पराकाष्ठा ही है जब एक बेटा अपने माता-पिता को Old People Houses की राह दिखाते हुए कहता होगा, 'अब आपके लिए आपके इस घर में कोई जगह नहीं।' दरख्त के साये में एक छोटा-सा हिस्सा उनके लिए नहीं, जिन्होंने उस दरख्त को सींचा है ताउमर। वैसे शुक्र है कि न्यूक्लियस फेमिली की वह अवधारणा अभी तक हमारे यहाँ विकसित नहीं हुई है जैसी पाश्चात्य देशों में है। आज भी हमारे अधिकांश युवा इतने पाषाण हृदय नहीं हुए कि नयी-नवेली दुल्हन ने दहलीज पर कदम रखा कि नहीं कि वृद्ध माता-पिता घर से बाहर हांक दिए। परन्तु हाँ, इस बात से भी मुख नहीं मोड़ा जा सकता कि आज हमारे परिवार में बुजुर्गों की अहमियत में तेजी से गिरावट आ रही है। यह अत्यंत त्रासदायक संकेत है। '' बीसवीं सदी की सबसे बड़ी दुर्घटना क्या है?'' इस सवाल के जवाब में मुक्तिबोध ने कहा था संयुक्त

परिवार का टूटना और संयुक्त परिवार के टूटने का सर्वाधिक कष्ट भोगना पड़ता है घर के बुजुर्गों को।

एक दिन फुरसत के लम्हों में मैं एक नन्ही–सी लड़की को गुड़ियों से खेलते हुए देख रहा था। दो जोड़े गुड्डे–गुड़िया थे उसके पास। गुड्डा–गुड़िया के एक जोड़े के साथ वह बहुत व्यस्त थी उन्हें सजाने, खिलाने व घुमाने में। दूसरे जोड़े को उसने घरौंदे के कोने में पटक रखा था। जिज्ञासावश मैंने गुड़ियों का परिचय प्राप्त करना चाहा। सुन्दर व व्यस्त गुड्डा–गुड़ियों की ओर संकेत करते हुए उसने क्रमशः उन्हें बाबूजी व अम्मा बताया। दूसरे जोड़े की ओर जब मैं इशारा किया तो उसने उपेक्षित भाव से कहा "उहं! दादा–दादी तो है ए मन।" कांप उठा मैं भीतर तक। बच्चों के अचेतन मस्तिष्क में बुजुर्गों के प्रति असम्मान का भाव भरने के जिम्मेदार हम नहीं, तो और कौन है?

परिवार में बुजुर्गों के प्रति उपेक्षा भाव के कारणों का विश्लेषण किया जाये तो सभी कारणों के जनक के रूप में जो कारक उभर कर सामने आता है, वह है भौतिकवादिता की अंधी दौड़। सांस की डोर टूट जाती है किन्तु यह दौड़ खत्म नहीं होती। इसी दौड़ ने हमें संवेदनशून्य, आत्मकेन्द्रित एवं स्वार्थी बना दिया है, और हमारी इस त्रासदायक व साथ ही हास्यास्पद स्थिति को एक कवि ने इन शब्दों में व्यक्त किया हैः

लोकहित पिता को घर से निकाल दिया,
जन–मन करुणा–सी माँ को हकाल दिया,
स्वार्थों के टेरियर कुत्तों को पाल लिया,
भावना के कर्तव्य त्याग दिए,
हृदय के मन्तव्य मार डाले।
बुद्धि का भाल ही फोड़ दिया,
तर्कों के हाथ उखाड़ दिए,
जम गए, जाम हुए, फंस गए,
अपने ही कीचड़ में धंस गए।।
विवेक बघार डाला स्वार्थों के तेल में
आदर्श खा गए।"

क्या बुजुर्गों की अनुपस्थिति में एक आदर्श परिवार की कल्पना की जा सकती है? कम से कम भारतीय सन्दर्भ में तो यह कदापि सम्भव नहीं। आज के अति व्यस्त माता–पिता अपने बच्चों को भौतिक संसाधन उपलब्ध करा कर ही अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। बच्चों का सही हक तो उन्हें बुजुर्ग ही देते हैं जिनके स्नेह की शीतल छाया में बच्चों का व्यक्तित्व पुष्पित–पल्लवित होता है। नैपिज पहनाकर, बच्चों के हाथ में दूध की बोतल थमा कर निश्चिंत होने वाली आया क्या बच्चों में स्वस्थ आदतों का विकास कर सकती है? कोई भी झूलाघर उस दादी की जगह कैसे ले सकता है जो स्वरचित गीतों को अपनी पोपली जुबान से सुनाते हुए बच्चे को एक–एक चम्मच दूध बड़े लाड़ से ' घुटुक ' कराती है? कुसंस्कार फैलाने वाले टी. वी. प्रोग्राम्ज क्या नानी की कहानी का विकल्प बन सकते हैं? हमारे परिवारों में स्वस्थ परम्पराओं, रीति–रिवाजों ने यदि दम नहीं तोड़ा है तो मात्र घर के बुजुर्गों के कारण। आंगन में तुलसी का चौरा हो या विशेष दिन, दीवारों पर हल्दी लगी हथेलियों से उभरे छापे, गणगौर के दिन बालिकाओं की किलकारी हो या शंख–ध्वनि के साथ वातावरण में गुंजायमान होता संध्या–पाठ। इन्हें ढ़कोसला करार देने वाले युवक–युवती यह भूल जाते हैं कि घर के बुजुर्गों से प्राप्त ये परम्पराएं बच्चों को जितना आनन्द प्रदान करती है वह उन्हें दुनिया की तमाम दौलत भी नहीं दे सकती। बच्चों की बात जाने दें। क्या हम व्यस्क अनुशासनहीन एवं उच्छ्रंखल नहीं हो जाते बुजुर्गों की अनुपस्थिति में और हमारा यह अनियंत्रित व्यवहार

अन्ततः क्या संदेश देता है हमारे बच्चों को जो हमें प्राणों से अधिक प्रिय है?

भारतीय समाज के अधिकांश परिवारों में अभी बुजुर्ग माता–पिता बेटे के साथ रहते हैं। यह संतोष की बात तो है। परन्तु अधिकांश बेटों के मन में अब यह बात घर करती जा रही है कि माता–पिता को अपने साथ रखकर वे उन वृद्ध लोगों पर एहसान कर रहे हैं। जबकि हकीकत यह है कि परिवार इन बुजुर्गों पर इतना अधिक निर्भर है कि एक दिन के लिए भी वे इधर–उधर हों तो घर की सारी व्यवस्था ही चरमरा जाती है। बुजुर्गों को अपने साथ रखना महत्वपूर्ण नहीं है, महत्वपूर्ण है उनके अहमियत की कद्र करते हुए उन्हें वह उच्च स्थान देना जिसके वे स्वाभाविक अधिकारी हैं। मेरे एक मित्र के परिवार की सदस्य के रूप में उनकी विधवा सास रहती है, जो कि काफी परिश्रमी है। एक बार एक रिश्तेदार ने उस मित्र की कानाफूसी करते हुए कहा, " बहुत सस्ते में निपट गए गुरु इस बुढ़िया पर जितना खर्च करते हो उसमें कोई नौकरानी थोड़े ही मिलेगी। मेरे उस भावुक मित्र ने, जिनके लिए उनकी सास मातृतुल्य है, हमेशा–हमेशा के लिए उस रिश्तेदार से सम्बन्ध–विच्छेद कर लिया। बिल्कुल सही प्रतिक्रिया व्यक्त की मेरे मित्र ने।

आज के बुजुर्गों में एक बड़ा परिवर्तन आया है। वे प्रतिपल परिवार के प्रति स्वयं की उपयोगिता के प्रति सचेत रहते हैं। हमारे ये बुजुर्ग भयमिश्रित सम्मान के भूखे नहीं हैं, और न ही वे किसी की सहानुभूति चाहते हैं। बस आवश्यकता है इस बात की कि हम उन्हें परिवार का एक हिस्सा समझें परिवार के हित में लिए गए हर फैसले में उनकी भागीदारी हो। जीवन की संध्या में तजुर्बों से लबरेज उनके व्यक्तित्व को छोटा करके नहीं आंका जा सकता, उनके मशविरे कभी भी महत्वहीन नहीं हो सकते।

बुजुर्गों के प्रति आदरभाव होते हुए भी जीवन की आपाधापी व व्यस्तताओं के कारण, लगभग प्रत्येक परिवार से जो चूक हो रही है वह यह कि अन्जाने में ही सही, हम उन्हें हाशिए पर रख देते हैं। तमाम मशरुफियत के बावजूद जिस तरह हम अपने बच्चों के लिए समय चुराते हैं, ठीक वैसे ही हमें रोजाना कुछ समय देना चाहिए घर के बुजुर्गों को। बुजुर्गों की मांग बच्चों की इच्छाओं की तरह असीमित नहीं होती। उम्र के साथ कुछ महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक परिवर्तन उनमें आते हैं। उनकी इच्छा रहती है कि लोग उन्हें सुनें, बीती बातों की जुगाली करना उन्हें प्रिय है। यदि रोजाना शाम को, कुछ देर के लिए ही सही, परिवार के सभी लोग बैठकर गुजरे वक्त को यादों के चिराग की रोशनी में देखें, बीते हसीन पलों को पुनः जिएं तो बच्चों को जीवन–कला का पाठ मिलता है तथा बुजुर्गों को परिमित सुख मिलता है। बुजुर्गों की एक और खास आदत होती है किस समय–समय पर वे अपने व्यस्क बेटों में भी उनका बचपन ढूंढते हैं। क्या हर्ज है यदि हम कभी–कभी बच्चे बन जाएं, उनके समक्ष, जिद करें उनसे अपनी मांग रखें अधिकारपूर्वक। याद है मुझे कि कुछ वर्ष पहले मेरी पत्नी ने दशहरा मनाने का निर्णय लिया था क्योंकि दशहरा–मेला घूमने के लिए मेरे पिताजी प्रत्येक सदस्य को जो दस–दस रुपये देते थे, वह हमें प्राप्त नहीं हुआ था। इस बीच पिताजी गांव में शिफ्ट हो चुके थे, खेत खलिहान की देखरेख हेतु जब उन्हें मेरी पत्नी की नाराजगी का पता चला तो उन्होंने खेद व्यक्त करते हुए तत्काल मनी–आर्डर किया। वह दिन था और आज का दिन है। कई वर्ष बीत चुके हैं। पिताजी का मनी–आर्डर दशहरा के पहले अनिवार्य रूप से हमें प्राप्त हो जाता है और मेरे घर के प्रत्येक सदस्य को उनसे मिले दस रुपये किसी कुबेर के खजाने से कम नहीं लगते और यह भी जानता हूं कि यह पैसा देना पिताजी के लिए औपचारिक रस्म अदायगी नहीं बल्कि खुशियों को बांटने का तरीका है।

आने वाली पीढ़ी में उचित संस्कारों का, परम्पराओं का, रीति–रिवाजों का सही ढ़ंग से हस्तांतरण हो, इसके लिए आवश्यक है कि हम परिवार के बुजुर्गों की अहमियत समझें। परन्तु हाँ! प्रतिपल सचेत रहें कि हमारे घर में कहीं हमारी बूढ़ी माँ एक आया एवं हमारे बुजुर्ग पिता एक ऑनरेरी वॉचमैन बनकर तो नहीं रह गए? ✱